अरबी और उर्दू मजमुए का [हिन्दी-तरजुमा]

अल-जामी अल-मज़ारातुल हिजाज़ साथ उर्दू तर्जुमा सऊदी अरब के दरगाह/मज़ारात

नज़रे शानी: अबु-नजीब सैयद मुहीउद्दीन साहब (जामा मस्जिद हज़रत ख्वाज़ा दाना सुरत)

मुआविन: अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी (दरगाह-शरीफ़ हज़रत ख्वाज़ा बाबु शाह लतीफ़ रतलाम)

मुरत्तिब: शेख मुहम्मद शकील बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह (मक्तबत ज़ीनत फ़ातिमा,सुरत) ☎+91-76986-79976

पब्लिकेशन: सुरत शहर, गुजरात, इंडिया. तारीख, 25 सितम्बर 2019, बुधवार, 25 मुहर्रम 1441

ईस मजमुए में जमा की हुई तमाम किताबें यहाँ से हासिल करें : maktabatzeenatfatima.wordpress.com

अल-सीरत अल-नब्वियाह अल इब्ने इसहाक इमाम इब्ने इसहाक ١٥١هـ / 151H.	अल-मुसन्नफ़ अल अब्दुल-रज्ज़ाक इमाम अब्दुल-रज़्ज़ाक ٢١١هـ / 211H.	अल-तबक़ात अल-कबीर इमाम इब्ने-साद ٢٣٠هـ / 230H.	अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा इमाम इब्ने अबी-शैबा ٢٣٥هـ / 235H.
अख्बारुल मक्का अल-अज़रकी इमाम अल-अज़रकी ٢٥٠هـ / 250H.	अल-मुसनद अल-जामी सुनन दारिमी इमाम अल-दारिमी ٢٥٥هـ / 255H.	सहीह अल-बुखारी इमाम बुखारी ٢٥٦هـ / 256H.	अल-तारिख अल-सघीर अल बुखारी इमाम बुखारी ٢٥٦هـ / 256H.
सहीह मुस्लिम इमाम मुस्लिम ٢٦١هـ / 261H.	सुनन अबु-दावूद इमाम अबु-दावूद ٢٧٥هـ / 275H.	तारीख अल-तिबरी इमाम इब्ने ज़रीर अल-तिबरी ٣١٠هـ / 310H.	अल-माजूम अल-अवसत इमाम अल-तबरानी ٣٦٠هـ / 360H.
सुनन अल-दारकुतनी इमाम अल-दारकुतनी ٣٨٥هـ / 385H.	अल-फहारिस अल-उलमिया शरह सहीह अल-बुखारी इमाम इब्ने-बताल ٤٤٩هـ / 449H.	मुन्तक़ा शरह मुवत्ता अल-मलिक क़ाज़ी अबु-वलीद अल-बाजी ٤٤٩هـ / 449H.	अल-मसालीक फी शरह मुवत्ता अल-मलिक क़ाज़ी अबुबक्र अल-अरबी ٥٤٣هـ / 543H.
अल-मुन्तज़िम फी तारिख अल-मुलूक व अल-उमम इमाम इब्ने अल-जव्ज़ी ٥٩٧هـ / 597H.	तफसीर अल-जामी अल एहकाम अल-कुरान इमाम अल-कुरतुबी ٦٧١هـ / 671H.	अल-क़ीरा ली क़ासिदी उम्मल कुरा इमाम मुहीउद्दीन तिबरी मक्की ٦٩٤هـ / 694H.	शरह अल-तिबी अल मिस्कात अल-मसाबिह अल्लामा अल-तिबी ٧٤٣هـ / 743H.
रिहाला इब्ने बतूता क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता ٧٧٠هـ / 770H.	अल-बिदाया वन-नहाया तारीखे इब्ने-कसीर हाफिज इब्ने कसीर ٧٧٤هـ / 774H.	फ़तह-उल बारी शरह सहीह अल-बुखारी इमाम इब्ने-हजर अल-अश्क़लानी ٨٥٢هـ / 852H.	अल-ईसाबह फी तमीज़ अल सहाबह इमाम इब्ने-हजर अल-अश्क़लानी ٨٥٢هـ / 852H.
उमदातुल क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी इमाम बदरुद्दीन अल-अयनी ٨٥٥هـ / 855H.	वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ इमाम अल-सम्हुदी ٩١١هـ / 911H.	अल-दुर्र अल-मन्सूर फी तफसीर अल-मासूर इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती ٩١١هـ / 911H.	अल-खसाईस अल-कुबरा इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती ٩١١هـ / 911H.
मिरक़ात अल-महातिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह मुल्ला अली अल-क़ारी ١٠١٤هـ / 1014H.	जुज्ब अल-कुलूब इला दयारे मेहबूब ﷺ शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी ١٠٥٢هـ / 1052H.	हाश्या अल-तावूदी अल सहीह अल-बुखारी इमाम मुहम्मद अल-तावूदी ١٢٠٩هـ / 1209H.	कन्जुल इमान तरजुमा ऐ क़ुरान इमाम एहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी ١٣٤٠هـ / 1340H.
मिरातुल-मनाजिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह मुफ़्ती एहमद यारखान नईमी ١٣٩١هـ / 1391H.	नुज़हत अल-क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफुल-हक़ अमजदी ١٤٢١هـ / 1421H.	तफसीर तिबयानुल-क़ुरान अल्लामा गुलाम रसूल सईदी ١٤٣٧هـ / 1437H.	नेअमतुल बारी फी शरह सहीह अल-बुखारी अल्लामा गुलाम रसूल सईदी ١٤٣٧هـ / 1437H.

_फेहरिस्त (इंडेक्स)_

सफा- 1 - : मुक़दमा (किताब का तआर्रुफ़)

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

सफा- 2 - : बाब-(1.) उस्मान बिन मज़ऊन ﵁

सफा- 3 - : बाब-(2.) उस्मान बिन मज़ऊन ﵁ व इब्राहीम बिन रसूल-अल्लाह ﷺ

सफा- 4 - : बाब-(3.) फ़ातिमा बिन्ते असद ﵂, अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब ﵁ और जैनब रुकैया, उम्मे-कुल्सुम व बिन्ते रसूल-अल्लाह ﷺ

सफा- 5 - : बाब-(4.) साद बिन मआज़ ﵁

सफा- 5 - : बाब-(5.) शोहदा ऐ ओहद ﵁

सफा- 6 - : बाब-(6.) ईसा बिन मरयम ﵇ के ख़बरी अस्वद बिन सवदा ﵁

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

सफा- 6 - : बाब-(7.) अगर इन मस्जिदों में नमाज़ अदा करने के लिए कोई शख्स नज़्र (मन्नत) मानता है तो उन मस्जिदों में नमाज़ अदा कर उन मन्नतो को पूरा करना लाजिम है

सफा- 6 से 7 : बाब-(8.) अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब ﵁ वालिद ए रसूल-अल्लाह ﷺ

सफा- 7 - : बाब-(9.) आमिना बिन्ते वहब ﵂ उम्मे रसूल-अल्लाह ﷺ

सफा- 7 से 8 : बाब-(10.) उम्मुल-मोमिनीन मय्मुना बिन्ते अल-हारिस ﵂

सफा- 8 - : बाब-(11.) उबेयदा बिन अल-हारिस बिन अल-मुत्तलिब ﵁

सफा- 8 से 9 : बाब-(12.) मस्जिदे अर्क अल-ज़बियाह के किबले की तरफ एक बड़ी क़ब्र है

सफा- 9 - : बाब-(13.) मस्जिद अल-अज़ूज़ में बरा बिन मआरूर ﵁ की क़ब्र है

सफा- 9 - : बाब-(14.) मस्जिद अल-मिन्बजिस में पत्थरो वाली दो या तिन क़ब्रे है

सफा- 10 - : बाब-(15.) मक्का में नबी ﷺ के अजदाद की क़बरों के दरमियान मस्जिदे ज़ी-तूई

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर ﵄ का मज़ार शरीफ़

सफा-10 से 11: बाब-(16.) आईसा ﵂ के घर में दफन किया गया

सफा-11 से 12: बाब-(17.) खजूर के बने घर को उमर बिन ख़त्ताब ﵁ ने दिवार की शक्ल दे दी थी

सफा-12 - : बाब-(18.) सैयदा आईसा ﵂ के हुक्म से हुजरे की छत में सुराख़ (खिड़की)

सफा-12 से 13: बाब-(19.) सैयदा आईसा ﵂ ने हुजरे में एक दिवार और एक दरवाजा बनवाया

सफा-13 से 15: बाब-(20.) उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ﵀ ने 88 हिजरी मज़ार-शरीफ़ को दोबारा बनवाया

सफा-16 - : बाब-(21.) उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ﵀ ने तीनों मुक़द्दस क़बरों को कोहान की तरह और चार ऊँगल ऊँचा बनवाया

सफा-16 से 18: बाब-(22.) हुजरा मुरबारका में मुबारक क़बरो की तरतीब

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर ؓ का मज़ार शरीफ़

सफा-18 से 19: बाब-(23.) इसहाक बिन सलामाह ؒ ने अब्बासी खलीफा मुतवक्किल के हुक्म से हुजरा मुरबारका और मुक़द्दस क़बरों पर संगे मरमर पत्थर लगाया

सफा-20 - : बाब-(24.) इमाम इब्राहीम नखई ؒ ने खबर दी के तीनों मुक़द्दस कबरें चोकोर**,** ज़मीन से उभरी हुई है और उन पर सफ़ेद संगे मरमर है

सफा-20 से 21: बाब-(25.) जिसे मुक़द्दस हुजरा-शरीफ़ में दाखिल होने का मोक़ा मिला

सफा-22 से 24: बाब-(26.) हर ज़माने में हुजरा-शरीफ़ की छत को बारिश के पानी से नुकशान हुवा हत्ता के आखिर सुल्ताने मिश्र ने हुजरा-शरीफ़ पर गुंबद तामीर करवाया

सफा-24 से 26: बाब-(27.) हज़रत शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी ؒ ने में रिवायत की हुई मज़ार-शरीफ़ की तारिख

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

सफा-26 से 27: बाब-(28.) नबी आदम ؑ

सफा-27 - : बाब-(29.) नबी नूह ؑ

सफा-27 - : बाब-(30.) नबी हूद ؑ

सफा-27 से 28: बाब-(31.) नबी इब्राहीम खलीलुल्लाहؑ| उनकी जव्जह सैयदा सारा बिन्ते हारानؑ| नबी इसहाक बिन इब्राहीमؑ| उनकी जव्जह सैयदा रफीक़ा बिन्ते बतवाईलؑ| ऐयश बिन इसहाकؑ| नबी याक़ूब बिन इसहाकؑ| याक़ूबؑ की जव्जह सैयदा लीया बिन्ते लाबानؑ

सफा-29 - : बाब-(32.) सैयदा राहील बिन्ते लाबानؑ नबी याक़ूब की जव्जहؑ

सफा-29 से 30: बाब-(33.) नबी युसूफ बिन याक़ूब ؑ

सफा-30 - : बाब-(34.) नबी दानियाल ؑ और नबी युसूफ ؑ

सफा-31 - : बाब-(35.) नबी इस्माइल बिन इब्राहीम ؑ और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा मिसरिया ؑ

सफा-32 - : बाब-(36.) नबी इस्माइल ؑ की बेटियां और 70 या 90 अंबिया ؑ

सफा-32 से 32: बाब-(37.) नबी मूसा कलीमुल्लाह ؑ

सफा-33 से 35: बाब-(38.) असहाबे-कहफ़ ؒ को ग़ार में दफन किया गया, सुरह कहफ़ मक्का में हिजरत से पेहले नाज़िल हुई, हिजरत के 32 साल बाद सहाबा ؓ ने असहाबे-कहफ़ ؒ की वही सूरते-हाल को देखा जो क़ुरान में नाज़िल हुई

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

सफा-36 से 39: बाब-(39.) जिन्हें अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ के घर में दफनाया: <u>अब्दुल-रहमान</u> बिन औफ़ؓ| <u>साद</u> बिन अबी-वक़ासؓ| <u>अब्दुल्लाह</u> बिन मसऊदؓ| <u>खनीस</u> बिन खिज़ाफ्हؓ| <u>असद</u> बिन ज़रारहؓ| <u>अबु-सुफ्यान</u> बिन हारिस बिन अब्दुल-मुत्तलिबؓ| <u>अब्बास</u> बिन अब्दुल-मुत्तलिबؓ| <u>अक़ील</u> बिन अबु-तालिबؓ| <u>अब्दुल्लाह</u> बिन ज़ाफर बिन अबु-तालिबؓ| <u>उम्महातुल-मोमिनीन</u>ؓ| <u>अमीरुल-मोमिनीन अली</u> इब्ने अबु-तालिबؓ| सैयदा <u>फ़ातिमा ज़ोहरा</u>ؓ| इमाम <u>हसन बिन अली</u>ؓ| इमाम <u>हुसैन बिन अली</u>ؓ का सर-मुबारक| इमाम <u>ज़ैनुलआबिदीन</u> बिन हुसैनؒ| इमाम <u>मुहम्मद बाक़र</u> बिन ज़ैनुलआबिदीनؒ| इमाम <u>जाफर सादिक़</u> बिन मुहम्मद बाक़रؒ

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

सफा-40 - : बाब-(40.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ के दौर में: इमाम हुसैन बिन अली ने
सैयदा फ़ातिमा-जोहरा की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

सफा-40 - : बाब-(41.) हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर में: अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर ने
सैयदा जैनब बिन्ते जहश की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया और

सफा-40 - : बाब-(41.) हज़रत उस्मान ग़नी के दौर में: मुहम्मद अल-हनफिया बिन अली बिन अबु-तालिब
ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

सफा-40 - : बाब-(42.) हज़रत उस्मान ग़नी के दौर में: अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान
ने उनके चाचा हकम बिन अबी अल-आस की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

सफा-41 - : बाब-(43.) अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली के दौर में: तल्हा बिन उबैदुल्लाह की अव्लादों ने
ने हज़रत तल्हा को दफनाने के लिए आल ऐ अबुबक्र में से एक घर ख़रीदा
और उस घर में दफन किया

सफा-41 से 42: बाब-(44.) हज़रत मुआविया के दौर में: उम्मुल मोमिनीन सैयदा आईसा सिद्दीक़ा ने
अपने भाई अब्दुल-रहमान बिन अबुबक्र सिद्दीक़ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

सफा-43 - : बाब-(45.) हज़रत मुआविया के दौर में: बनु-उमय्या ने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत
उस्मान बिन अफ्फान की क़ब्र मुबारक पर बड़ा गुंबद तामीर किया

सफा-43 - : बाब-(46.) हज़रत अब्दुल्लाह बिने जुबैर के दौर में: अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर ने काबतुल्लाह में
नबी इस्माइल और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा मिशरिया की कबरें बनवाई

सफा-44 से 45: बाब-(47.) क़ाज़ी अयाज़-(**544 हिजरी**), अल्लामा तिबी-(**743 हिजरी**),
क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता-(**770 हिजरी**), अल्लामा इब्ने हजर हैतमी-(**973 हिजरी**)
और मुल्ला अली क़ारी-(**1014 हिजरी**) ने काबतुल्लाह के हतीम में नबी इस्माइल
और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा की क़बरों का ज़िक्र किया

सफा-45 से 46: बाब-(48.) अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: अब्दुल्लाह बिन असद ने
अब्दुल्लाह इब्ने उमर को अबु-दब के घर में दफन किया. और
उनकी क़ब्र को कोहान नुमा बनाया और
उस क़बरों वाले घर सहाबी अबु-मूसा अल-अशअरी ने तामिरात की थी

सफा-46 से 47: बाब-(49.) अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन बिन अली ने
उनके शोहर हसन मुसन्ना बिन हसन बिन अली की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

सफा-48 - : बाब-(50.) वलीद बिन अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: वलीद ने दमिश्क़ की
जामा-मस्जिद अल-उमवी में नबी याहया बिन जकरया का मज़ार तामीर किया,
जो आज भी उसी सूरते-हाल में है

सफा-48 - : बाब-(51.) अब्बासी खिलाफत के दौर 172 हिजरी में: जुबैदा-खातून *(बिन्ते जाफर बिन अल-मनसुर
बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास)* ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास
की क़ब्र मुबारक पर एक बड़ी मस्जिद और गुंबद तामीर करवाया

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

सफा-48 से 49: बाब-(52.) अब्बासी खलीफा अल-मन्सूर *(बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ)* ने अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब ؓ की क़ब्र-मुबारक पर और हज़रत अब्बास ؓ के साथ दफन तमाम मुबारक क़बरों पर एक बड़ा गुंबद तामीर किया

सफा-49 से 50: बाब-(53.) अब्बासी खलीफा मेहदी *(बिन मनसुर बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ)* की ज़व्जाह *(हारुन-रशीद की वालिदा)* खैज़रान-ख़ातून बिन्ते अता ने नब़ी-ऐ-करीम ؓ के मौलीद (विलादत-पैदाईश के घर) पर मस्जिद बनाई

सफा-50 से 51: बाब-(54.) अब्बासी खिलाफत के दौर से 564 हिजरी तक: खुलफ़ा ने मदीना के बक़ी में मुबारक-क़बरों पर अज़ीम गुंबद तामीर किए

_मौज़ूओ की फेहरिस्त (टॉपिक इंडेक्स)_

क़ब्र को जमीन से ऊँचा और कोहन नुमा करना:- सफा : 2,5,6,7,9,16,17,18,19,20,26,46

सालिहीन की मुबारक क़ब्र को मर-मर, पत्थर, कंकरयां से कवर करना:- सफा : 2,3,9,18,19,20,29,30,43,44,45,50

सालिहीन की क़ब्र पर (दरगाह/मजार) तामीरात करना:- सफा : 11,12,13,14,15,19,20,22,23,24,25,26,28,33,38, 40,42,43,44,46,48,49,50,51

सालिहीन की क़ब्र पर (दरगाह/मजार) तामीरात करने वालों की तारीफ और उनके हक़ में दुआ करना:- सफा : 14,19

सालिहीन को घर में दफन करना:- सफा : 3,4,5,7,10,11,30,31,36,37,38,39,41,46,51

मुहम्मद ﷺ, अंबिया ؑ व सालिहीन के वसीला देकर अल्लाह से दुआ करना:- सफा : 4,44

रसूल-अल्लाह ﷺ और अंबिया ؑ मदद के लिए पुकार कर मुराद तलब करना:- सफा : 29,30

अंबिया ؑ का क़ब्र में जिन्दा है और अपनी क़बरों में इबादत करते है:- सफा : 29,30,32,44,48

क़ब्र में दफन मरहूम से मुखातिब हो कर अस-सलामु अलय्कुम कहना या कलाम करना:- सफा : 3,4

क़ब्र में दफन सालिहीन को पुकारना और उससे मुराद तलब करना:- सफा : 10,11,21

सालिहीन की क़ब्र के करीब दफन करना:- सफा : 2,4,10,11,17,18,28,32,36,37,38,39

क़ब्र पर पहचान के लिए छडी गाडना या नाम लिखना:- सफा : 2,6,38

क़ब्र में दफन मरहूम को आमले-सालेहा का सवाब पोहोंचना:- सफा : 2,4,44,46,46,47

दरगाह/मजार से जुडे हुए तबर्रुकात की अदब और ताजीम बरक़रार रखना:- सफा : 5,13,19,20,24,50

मस्जिद में सालिहीन की क़ब्र:- सफा : 6,7,8,9,13,26,27,31,44,48

सालिहीन की क़बरों के करीब (क़ब्र किबले की तरफ ना हो एय्सी जगह) नमाज अदा करना:- सफा : 6,7,8,9,10,44

मखसूस वक़्त लगातार सालिहीन की क़ब्र की जियारत करना:- सफा : 7,22

रसूल-अल्लाह ﷺ ने जहाँ इबादत की उस मुबारक जगह इबादत करने की नज़्र (मन्नत) मान्ना:- सफा : 6

रसूल-अल्लाह ﷺ की क़ब्रे-अनवर पर हर वक़्त फरिश्तें ख़िदमत कर रहे है और क़यामत तक करते रहेंगे:- सफा : 18

(_बिस्मील्ला हिर्रहमा निर्रहीम_)

-- मुक़दमा (किताब का तआरुफ़) --

सहीह अहादीस से ज़माना ऐ क़दीम से सहाबा, ताबईन, तबाताबईन व अईम्मा का अमल रहा है के वो अपने बुज़ुर्गाने-दीन के मज़ारात की ज़ियारत करते, वहा नफली अमल कर उनकी मुबारक रूह पर सवाब भेजते और अपनी जाइज़ हाजात **अल्लाह** सुबहाना व तआला से पाने में उन बुज़ुर्गाने-दीन का वसीला पेश करते थे. और ईन पर 1300 साल से मोमिनो का अमल जारी हैं.

लेकिन अहले-सुन्नत वल-जमाअत से अलग इख्तीलाफी सोच रखने वाली कुछ जमातों ने, बाज़ क़ुरान की आयात, अहादीस और उलेमा के अक़वाल को लोगो में आम कर दिया है. उन दलाइल पर वो बुज़ुर्गाने-दीन का वसीला और उनकी रूह पर सवाब भेजने को तो नाजाइज़ कहते ही है, उसके अलावा वह ये भी ऐतराज़ करते है की बुज़ुर्गाने-दीन की मुबारक-क़बरों पर ये जो मज़ारात तामीर किए है, यही नाजाईज़ हैं, तो फिर उन मज़ारात पर किए हुए अमल जेसा के बुज़ुर्गाने-दीन का वसीला और उनकी रूह पर सवाब भेजना केसे जाइज़ है?

बहरहाल, इन्शा-अल्लाह हम “तवस्सुल (वसीला) बाद-ए मौत” नाम से किताब शाऐ करने वाले है. जिस में 100 से ज्यादा सहीह अहादीस से सहाबा, ताबईन, तबाताबईन व अईम्मा का खुद उन मज़ारात पर जाकर बुज़ुर्गाने-दीन का वसीला लेना और उनकी रूह पर सवाब भेजना जमा किया है.

लेकिन, ईस से पेहले हमें ज़रूरत पेश आई के हम साबित करें की बुज़ुर्गाने-दीन की मुबारक-क़बरों पर मज़ारात किसने तआमीर किए, कब किए और मौज़ूदा दोर में जो मज़ारत हे उनपर ऐतराज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं. बेशक, अवलिया व सालिहीन की मुबारक-क़बरों पर खैमा, गुंबद या मज़ार तआमीर करने पर अइम्मा व बुज़ुर्गो ने बोहोत कुछ लिखा है. लेकिन, ईस दौर में क़ुरान व हदीस से साबित किए हुए दलाइल को अहले-सुन्नत वल-जमाअत से अलग इख्तिलाफी सोच रखने वाली जमातों की तरफ से मुसलसल रद्द किया जा रहा है. ईस लिए, मुरत्तिब (शेख मुहम्मद शकील) ने अबु-नजीब सैयद मुहीउद्दीन साहब (जामा मस्जिद हज़रत ख्वाजा दाना رحمة الله عليه, सुरत) और अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी (दरगाह हज़रत ख्वाजा बाबु शाह लतीफ़ رحمة الله عليه, रतलाम) की मदद से ईस किताब को जमा किया है. जिस में सहीह अहादीस से रसूल-अल्लाह ﷺ, सहाबा, ताबईन, तबाताबईन व अईम्मा का अमल जमा किया है के उन्होंने अपने बुज़ुर्गों की मुबारक-क़बरों पर खैमे, गुंबद या मज़ार तआमीर किए हुए है.

ये बात याद रहे की, कुछ अलग सोच रखने वाली जमातों की ये आदत रही हे के वोह लिखे हुए दलाइल को पढ़े बिना ही झूठे करार देते है. ईस लिए, ईस किताब में हमने अपने तरफ़ से कोई बात लिखी नहीं है, सिर्फ अइम्मा व बुज़ुर्गों की किताबों के सफहात जिस असल अरबी और उर्दू किताब में जमा किए हैं उनका हिन्दी तरजुमा किया है. और बाज़ जगह पढ़ने वाले को मसला समझ में आए ईस लिए जमा की हुई हदीस की रिवायत के आखिर में मुख्तसर खुलासा किया है.

हमने किताबों के ईस मजमुए को शिर्फ़ इसी मक्सद के लिए जमा किया है के सालिहीन की मुबारक-क़बरों के निशान और ताज़ीम बरक़रार रखने के लिए जाईज़ अमल करना अंबिया और सलफ़ (सहाबा,ताबईन,तबा-ताबईन) से साबित है. ईस लिए जमा नहीं किया के हम अगर किसी भी मज़ार पर ग़ैर-शरई अमल हो रहे हो उसे जाईज़ करार दे. मज़ारात पर होने वाले ग़ैर-शरई मुआमलात का अक्सर हर दौर में उलेमा ऐ एहले-सुनत वल जमाअत ने रद्द किया है.

लेकिन कुछ जमाअतें ईन ग़ैर-शरई कामों को ममनू, मकरूह या हराम कहने के बजाए आखरी हुक्म यानि बिदअत और शिर्क करार दे कर उम्मते-मुस्लिमा को तोड़ रही है. और अब तक तो वो यही ज़ाहिर कर रहे थे के एय्सी कोई रिवायत ही नहीं जिसमे अंबिया या सलफ़ ने मुबारक-क़बरों के निशान बरक़रार रखने और हिफाज़त के लिए जाईज़ अमल किए हो. लेकिन अल्लाह-तआला ने दीने-हक़ दीने-इस्लाम की मुक़दस किताबों को हमें इस मजमुए में अता फरमा कर उम्मते-मुस्लिमा को तोड़ने वाली जमातों के फितने से बचाया और हम अल्लाह-तआला से यही दुआ करते है के वो उम्मते-मुस्लिमा की नस्लों को इत्तेहाद पर रखे. और अंबिया व सलफ़ के अमल के खिलाफ उठने वाले हर फ़ितनो से अल्लाह हमें महफ़ूज़ फरमाए, आमीन.

(मुरत्तिब) शेख मुहम्मद शकील बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह ☎ +91-76986-79976 ® सुरत, गुजरात, इंडिया.
ब-तारीख, 25 सितम्बर 2019, बुधवार, 25 मुहर्रम 1441. https://maktabatzeenatfatima.wordpress.com/

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(1.) उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه

दलील-(1.) इमाम अबु-दावूद رحمه الله (विसाल-275 हिजरी) की किताबः सुनन अबु-दावूद, जिल्द-5, सफा-317, बाब-"एक क़ब्र में कई मुरदे दफ्न करने और क़ब्र पर कोई निशानी लगाने का बयान" हदीस-3191.

हज़रत कसीर बिन ज़ैद मदनी رضي الله عنه ने मुत्तलिब رضي الله عنه से रिवायत किया है के उन्होंने कहा: जब हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه फौत हुए और उनका जनाज़ा लेजाया गया और फिर उन्हें दफ्न कर दिया गया तो हुजुर नबी ए करीम ﷺ ने एक आदमी को हुक्म इरशाद फ़रमाया के वह आप के पास पत्थर उठा कर लाए. लेकिन उसने उस पत्थर को उठाने की ताकत ना रखी. तो फिर रसूल-अल्लाह ﷺ उस पत्थर को उठाने के लिए उठे और अपने बाज़ुओ से आस्तीने ऊपर उठाई. हज़रत कसीर رضي الله عنه ने कहा: मुत्तलिब رضي الله عنه ने बयान किया के जिसने मुझे इसके बारे में रसूल-अल्लाह ﷺ से खबर दी हे उसने बयान किया: गोया में रसूल-अल्लाह ﷺ के बाज़ुओ की सफ़ेदी देख रहा हूँ जब के आप ﷺ ने बाज़ुओ से कपडा ऊपर उठाया. फिर **आप ﷺ ने उस पत्थर को उठाया और उसे उनके सर के जानिब रख दिया और फ़रमाया: में ईस पत्थर के सबब अपने भाई की क़ब्र को पहचान लूँगा** और अपने अहल में से जो फौत होगा उसे इसके पास दफन करूँगा.

फाइदा: ईस से मालुम हुवा के क़ब्र की शनाख्त और पहचान के लिए उस पर कोई कुत्बा या अलामत लगाना हुजुर नबी ए करीम ﷺ की सुन्नत है.

दलील-(2.) इमाम इब्ने अबी-शैबा رحمه الله (विसाल-235 हिजरी) की किताबः अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा, जिल्द-3, सफा-23, बाब-"क़ब्र पर निशानी लगाना और उस पर कुछ लिखना" हदीस-11862.

हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन हन्त्ब رضي الله عنه से मारवी है के जब हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه की वफात हुई तो नबी ए करीम ﷺ ने उनको जन्नतुल-बक़ी में दफन फ़रमाया और फिर एक शक्श से फ़रमाया: **फलां चट्टान के पास जाकर एक पत्थर लेकर आओ, ता की में उसको इसकी क़ब्र पर बतौर निशानी नसब करदूँ, जिसकी वजह से इसको (बाद में) हम पहचान लें**.

इसी किताब में: बाब-"बाज़ हज़रात (सहाबा) क़ब्र को बुलंद बनाने को पसंद फरमाते है" हदीस-11868.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबुबक्र رضي الله عنه फरमाते है के: मैंने उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه की **क़ब्र देखी जो बुलंद (ज़मीन से उठी हुई) थी**.

दलील-(3.) इमाम बुखारी رحمه الله (विसाल-256 हिजरी) की किताबः अल-तारिख अल-सघीर, जिल्द-1, सफा-67

दलील-(4.) इमाम बुखारी رحمه الله (विसाल-256 हिजरी) की किताबः सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-280

दलील-(5.) इमाम इब्ने-हजर अल-अश्क़लानी رحمه الله (विसाल-852 हिजरी) की किताबः फ़तह-उल बारी शरह सहीह अल-बुखारी, जिल्द-3, सफा-173 से 174

हज़रत याहया बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-रहमान बिन अबी-अम्र अल-अन्सारी رضي الله عنه फरमाते है: हज़रत खारजा बिन ज़ैद رحمه الله ने फ़रमाया के मैंने अपने आप को देखा और हम नवजवान थे. हज़रत उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه की खिलाफत में और हम सब में ज़्यादातर सख्त कुद्नेमें वह शक्श था जो हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه की क़ब्र को कूद कर आगे बढ़ जाए **यानी उनकी क़ब्र बुलंद थी. हर कोई उसको नहीं कूद सक्ता था**.

इमाम इब्ने हजर अल-अश्क़लानी رحمه الله बयान फरमाते है: ईस हदीस से मालुम हुवा के **क़ब्र को ज़मीन से ऊँचा और बुलंद करना दुरुस्त है**. इसी तरह **क़ब्र पर (पेड़ की) छड़ी को गाड़ना भी दुरुस्त है.** के ज़मीन से ऊँचा होने (निशानी रखने) में दोनों बराबर है. और इमाम इब्ने मुनीर رحمه الله बयान फरमाते है के: ईस रिवायत को बयान करने में इमाम बुखारी رحمه الله की मुराद ये है के **आमाले सालेहा (मय्यत को नफा देता है, आमाले सालेहा) के सिवा कोई चीज़ मय्यत को नफा नहीं देती. और क़ब्र को बुलंद करना या क़ब्र पर बेठना नाजाइज़ नहीं**. लेकिन नाजाइज़ तब होगा के लोग उस पर बेठ कर बेफायदा कलाम करें.

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'a
SHAIKH MOHAMMED SHAKIL
Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima
MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com
FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE
Surat, Gujarat, India.

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(2.) उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه व इब्राहीम बिन रसूल-अल्लाह ﷺ

दलील-(6.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा-269 से 270

हज़रत मुहम्मद बिन उमर رضي الله عنه कहते है के, रसूल-अल्लाह ﷺ ने अपने बेटे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की **कब्र पर पानी से छिडकाव किया**. और सब से पहले उन्हीं की कब्र पर छिडकाव हुवा. वह कहते है के आप ﷺ ने उनकी कब्र पर अपने हाथ से मिट्टी डाली. और कब्र में दफ्न से फारिग़ हो कर सिरहाने की तरफ खड़े होकर फ़रमाया: **अस-सलामु अलय्कुम**.

हज़रत इमाम शाफ़ई رحمة الله عليه के मुताबिक़: हज़रत जाफर رحمة الله عليه के वालिद हज़रत मुहम्मद رضي الله عنه बताते है के, हुज़ुर ﷺ ने अपने साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र पर पानी से छिडकाव किया और **कब्र के ऊपर कंकरयां डाली**.

इमाम अबु-दावूद رحمة الله عليه के मुताबिक़: हज़रत मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अली رحمة الله عليه की रिवायत में और ज्यादा कहा के, ये पहली कब्र थी जिस पर छिडकाव किया गया और फारिग़ होने के बाद आप ﷺ ने फ़रमाया: **अस-सलामु अलय्कुम**.

इमाम इब्ने ज़बाला رحمة الله عليه के मुताबिक़: हज़रत क़दमा बिन मूसा رضي الله عنه बयान करते है के, सबसे पहले बक़ी में दफ्न होने वाले हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه थे. और जब हुज़ुर ﷺ ने अपने साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه का विसाल हुवा तो सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूल-अल्लाह ﷺ ! हम इन्की कब्र कहाँ बनवाए? फ़रमाया: **उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه के पास जो आखिरत का सरमाया है**.

हज़रत क़दामा बिन मूसा رحمة الله عليه बयान करते है के, हुज़ुर ﷺ ने फ़रमाया के उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه को बक़ी में दफ्न कर दो क्यों की ये सब से पहली कब्र शुमार होगी और **उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه बेहतर सलफ़ साबित होंगे**.

और जहाँ उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه दफन हुए तो आप ﷺ ने उस जगह का नाम "रूहा" रखा. और ये जगह "रूहा" हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद رضي الله عنه के घर से लेकर हज़रत अकील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के घर के यमनी कोने तक थी.

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه फरमाते है: **वाज़ेह हो गया के हज़रत अकील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه का घर उस जगह था जहाँ हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه की कब्र मारुफ़ थी**. और हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद رضي الله عنه का घर हज़रत अकील رضي الله عنه के घर की और मज़ारे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की मशरिकी जानिब था. चुनांचे पहला "रूहा" दोनों कब्रों के दरमियान था. जो सैयदना इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र की मशरिकी जानिब तक फेला हुवा था. और "रूहा" वह मक़बरा है जो बक़ी के दरमियान में था. जिसकी तरफ बक़ी में रात को आने के लिए रास्ते थे. और गोया इसकी वजह से ही इसे रूहा कहते है. दुसरे हिस्से की वजह से नहीं.

इमाम इब्ने शब्बाह رحمة الله عليه ने ये रिवायत भी की है के, हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه "ज़ोरा" में दफन हुए, ये पानी पिलाने की वह जगह थी जो बक़ी से चढ़ कर मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अली رحمة الله عليه के घर की तरफ जाने वाले रास्ते की बाई तरफ थी.

इमाम इब्ने ज़बाला رحمة الله عليه के मुताबिक़: हज़रत सईद बिन मुहम्मद बिन जुबेर رضي الله عنه कहते है के, उन्होंने हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र मुबारक ज़ोरा में देखी. हज़रत अब्दुल-अज़ीम बिन मुहम्मद رحمة الله عليه कहते है के, **हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र जिस घर में है ये वही घर है जो बाद में मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अली رحمة الله عليه के क़ब्ज़े में आ गया था**.

हज़रत जाफर बिन मुहम्मद رضي الله عنه कहते है के हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र मुबारक हज़रत सईद बिन उस्मान رضي الله عنه के उस घर के सामने थी जिसे ज़ोरा कहते है, और ये जगह बक़ी में थी. इसी लिए **हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की कब्र जिस घर में थी वो घर रास्ते में होने की वजह से घिर गया था**.

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(3.) फ़ातिमा बिन्ते असद رضي الله عنها, अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه और रुकैया, उम्मे-कुल्सुम व जैनब बिन्ते रसूल-अल्लाह ﷺ

दलील-(7.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 273 से 278

हज़रत ज़ोहरी رحمة الله عليه फरमाते है के, जब हज़रत ज़ैद बिन हारसा رضي الله عنه फ़तहे बद्र की खुशखबरी लेकर मदीना आए तो हज़रत उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه सैयदा रुकैया رضي الله عنها को दफ्न करने के लिए कब्र पर खड़े थे.

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه फरमाते है: ये तो मशहूर बात है लेकिन सहीह अल-बुखारी से साबित है के हुज़ुर ﷺ अपनी बेटी उम्मे-कुल्सुम رضي الله عنها ज़व्जए उस्मान رضي الله عنه के दफन के वक्त मौजूद थे. और उनकी बहन जैनब رضي الله عنها 8 हिजरी को मदीना में फौत हुई थी. और ज़ाहिर ये है के **आप ﷺ की तमाम बेटियों की कब्रे हज़रत उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه के पास थी**. क्यों की आप ﷺ ने फ़रमाया था: मेरे अहले-खाना में से जो भी फौत होगा, में उसे उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه के पास दफ्न करूँगा.

इमाम इब्ने ज़बाला رحمة الله عليه के मुताबिक़: हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन अली बिन अबु-तालिब رحمة الله عليه बताते है के रसूल-अल्लाह ﷺ ने हज़रत **फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम رضي الله عنها वालिदा ऐ अली رضي الله عنه को खुद दफन फ़रमाया था. उसी जगह हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه और उस्मान बिन मज़उन رضي الله عنه की कब्रे थी**.

इमाम इब्ने शब्बाह رحمة الله عليه के मुताबिक अब्दुल-अज़ीज़ बिन इमरान رضي الله عنه ने फ़रमाया के हज़रत **अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه की कब्र हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम رضي الله عنها के पास थी. और बनी-हाशिम की उन कब्रों में से पहली थी जो हज़रत अकील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के घर में बनी थी**.

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه ये हदीस बयान फरमाते है: अल-मआजुम अल-कबीर, जिल्द-24, सफा-351-352 और मजमुआ अल-ज़वाईद, जिल्द-9, सफा-226-227 में हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه रिवायत फरमाते है के,

जब हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद رضي الله عنها का विसाल हुवा तो रसूल-अल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए. और सिरहाने की तरफ बेठ गए. **फिर फ़रमाया: एय मेरी माँ के बाद मेरी माँ ! अल्लाह आप पर रहम फरमाए**. फिर उन्होंने आप की तारीफ़ का ज़िक्र किया. और अपनी चादर में कफ़न देने का हुक्म फ़रमाया.

हज़रत अनस رضي الله عنه कहते है के फिर आप ﷺ ने उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه, अबु-अय्यूब अन्सारी رضي الله عنه, उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه, और एक स्याह फ़ाम गुलाम رضي الله عنه को बुलाकर कब्र तैयार करने का हुक्म फ़रमाया. और जब वो कब्र खोदते हुए लहद तक पोहोचे तो रसूल-अल्लाह ﷺ ने खुद खुदाई की. और अपने हाथ से मिट्टी निकाली. और जब उससे फारिग़ हो गए तो आप ﷺ उस कब्र में लेट गए. और फिर **रसूल-अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह वह ज़ात है जो ज़िंदगी और मौत देता है. खुद ज़िन्दा है. उसे मौत नहीं आएगी.**

इलाही ! मेरी माँ फ़ातिमा बिन्ते असद رضي الله عنها की बखशीश फरमा, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के सदक़े और पहले तशरीफ़ लाए तमाम अंबिया عليهم السلام के सदक़े. और उनकी कब्र को कुशादा फरमा. क्यों की तु अर्हमुर-राहेमीन है.

फिर जनाज़ा में चार तकबीर कही. और फिर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक رضي الله عنه को साथ लेकर आप ﷺ ने उन्हें लहद में दाखिल किया.

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(4.) साद बिन मआज़ رضي الله عنه

दलील-(8.) इमाम इब्ने-साद رحمه الله (विसाल-230 हिजरी) की किताब: अल-तबक़ात अल-कबीर, जिल्द-3, सफा- 399 से 400

हज़रत रबीअ बिन अब्दुल-रहमान बिन अबु-सईद अल-ख़ुदरी رضي الله عنه ने अपने आबा से रिवायत की के, उन लोगो में मैं था जिन्होंने बक़ी में हज़रत साद رضي الله عنه के लिए कब्र खोदी थी. हम जब मिट्टी का कोई हिस्सा खोदते तो मुश्क की खुश्बू आती. यहाँ तक की हम लहद तक पोहोंचे.

हज़रत मुहम्मद बिन शरहबील बिन हसनाह رضي الله عنه से रिवायत है के, किसी शख्स ने हज़रत साद رضي الله عنه की मिट्टी ले ली. वह उसे ले गया. फिर उसे घर जाकर देखा तो वह मुश्क थी.

हज़रत मुहम्मद बिन शरहबील बिन हसनाह رضي الله عنه से रिवायत है के, जिस दिन साद رضي الله عنه दफ्न किए गए तो एक शख्स ने उनकी कब्र की मिट्टी में से कुछ मिट्टी ले ली, बाद में उसे खोला तो वो मुश्क थी.

हज़रत अबु-सईद अल-ख़ुदरी رضي الله عنه रिवायत करते है, फिर रसूल-अल्लाह ﷺ हमें नज़र आए. हम कब्र को खोदने से फारिग़ हो गए थे. और कच्ची ईंटें और पानी कब्र के पास रख दिया था. **हमने हज़रत अकील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के घर में उनके लिए कब्र खोदी थी.** रसूल-अल्लाह ﷺ हमें नज़र आए. आप ﷺ ने साद رضي الله عنه को कब्र के पास रख दिया. और उनकी नमाज़ पढ़ी. मैंने इतने आदमी देखे जिन्होंने बक़ी को भर दिया.

हज़रत मआज़ बिन रफाअत बिन राफ़ीअ अल-ज़ुरकी رضي الله عنه से रिवायत है के, **हज़रत साद बिन मआज़ رضي الله عنه को हज़रत अकील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के मकान की बुन्याद में दफ्न किया गया**.

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(5.) शोहदा ऐ ओहद رضي الله عنهم

दलील-(9.) इमाम इब्ने अबी-शैबा رحمه الله (विसाल-235 हिजरी) की किताब: अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा, जिल्द-3, सफा-22, बाब-“क़ब्र को कोहान नुमा बनाया जाएगा” हदीस-11855, 11858, 11922.

हज़रत आमीर رضي الله عنه फरमाते है के, मैंने शोहदा رضي الله عنهم की क़बरों को देखा जो ऊपर से निचे झुकी हुई (कोहान नुमा) थी. और उन क़बरों पर (उम्दा किस्म की) घास उगी हुई थी.

हज़रत इमाम शाफ़ई رحمه الله फरमाते है के मैंने शोहदा ऐ ओहद رضي الله عنهم की कब्रें देखी वो **झुकी हुई कोहान नुमा थी**.

हज़रत मनसुर बिन अब्दुल-रहमान رحمه الله फरमाते है के, एक शख्स ने हज़रत इमाम शाफ़ई رحمه الله से अर्ज़ किया एक शख्स ने अपनी मय्यत को दफन किया और उसकी क़ब्र ज़मीन के बराबर बनाई क्या दुरुस्त है? **इमाम शाफ़ई رحمه الله ने फ़रमाया, मैंने शोहदा ऐ ओहद رضي الله عنهم की कब्रें देखी है वो ज़मीन से बुलंद ऊपर उठी हुई है**.

फ़स्ल-(1.) रसूल-अल्लाह ﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में दरगाह/मज़ारात

बाब-(6.) ईसा बिन मरयम عليه السلام के ख़बरी अस्वद बिन सवदा رضي الله عنه

दलील-(10.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 43 से 44

हज़रत अल्लामा अल-मिज्द رحمة الله عليه बयान करते है के, जमा-ऐ उम्मे-खालिद नदी की निचली तरफ एक पहाड़ी थी. जिसे “सफ़र” कहते थे. हज़रत जुबैर رحمة الله عليه मुसा बिन मुहम्मद رحمة الله عليه से बयान करते है के, जमा-ऐ उम्मे-खालिद नदी के सरे पर एक आदमी की क़ब्र दिखाई दी. जिस पर लिखा था के, “मेरा नाम अस्वद बिन सवदा رضي الله عنه है. और में अल्लाह के रसूल हज़रत ईसा बिन मरयम عليه السلام का ख़बरी हूँ. जो इस बस्ती की हिदायत की खातिर मुक़र्रर था.”

अल्लामा इब्ने शहाब رحمة الله عليه बयान करते है के, **<u>जमा-ऐ उम्मे-खालिद पर एक क़ब्र दिखाई दी. जो चालीस चालीस हाथ लंबी और मरबी (कोहान नुमा) शक्ल की थी</u>**. **<u>उसके एक पत्थर पर लिखा था</u>** के, “में आले नैनवा में से अल्लाह का बंदा हूँ. और हज़रत ईसा बिन मरयम عليه السلام का ख़बरी था. जिसे इस बस्ती की हिदायत के लिए मुक़र्रर किया गया था. मुझे मौत आ गई तो में ने आखरी वक़्त में ये वसीयत की थी के मुझे जमा-ऐ उम्मे-खालिद पर दफ्न करना.”

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(7.) अगर इन मस्जिदों में नमाज़ अदा करने के लिए कोई शख्स नज़्र (मन्नत) मानता है तो उन मस्जिदों में नमाज़ अदा कर उन मन्नतो को पूरा करना लाजिम है

दलील-(11.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 167 से 168

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: याद रहे के मस्जिदों की तलाश हर सुरत ज़रूरी है. इस लिए,
हज़रत अल्लामा बग़वी शाफ़ई رحمة الله عليه बयान करते है के, वो मस्जिदें जिन के बारेमे साबित है के हुजुर ﷺ ने वहां नमाज़ अदा की थी, अगर उन में नमाज़ अदा करने के बारेमे कोई शख्स नज़्र (मन्नत) मानता है तो उन मस्जिदों में नमाज़ अदा कर उन मन्नतो को पूरा करना लाजिम हो जाएगा. जैसे तीनों मस्जिदें मुतईन है. सलफ़ सलिहीन (सहाबा, ताबईन, तबाताबईन) के बारेमे मालूम है के वह हुजुर ﷺ के आसार की तलाश करते थे. इस लिए जितना हम से हो सका हमने भी तालाश की है.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(8.) अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه वालिद ए रसूल-अल्लाह ﷺ

दलील-(12.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 233 से 234

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: **<u>जिन मस्जिदों में हुजुर ﷺ ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं में से</u>** मस्जिदे बनू-अदि बिन नज्जार और **<u>मस्जिदे दारे-नाबिगा भी है</u>**. जो कबीला ऐ बनू-अदि में थी. इस लिए,
इमाम इब्ने शब्बाह رحمة الله عليه के मुताबिक: हज़रत याहया बिन अमारह अल-माज़नी رضي الله عنه बयान फरमाते है के, **<u>नबी ऐ करीम ﷺ ने मस्जिदे दारे-नाबिगा में नमाज़ अदा की</u>**. जब के मस्जिदे बनू-अदि में गुस्ल फ़रमाया था.

याहया बिन अल-नद्र बयान फरमाते है के, **<u>हुजुर ﷺ ने मस्जिदे दारे-नाबिगा और मस्जिदे बनू-अदि में नमाज़ अदा की</u>**.

इमाम इब्ने ज़बाला फरमाते है के, **<u>रसूल-अल्लाह ﷺ ने मस्जिदे दारे-नाबिगा और मस्जिदे बनू-अदि में नमाज़ अदा की</u>**.

इमाम इब्ने शब्बाह ने हज़रत अबु-ज़ैद अल-बुखारी से रिवायत की है के, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब यानी रसूल-अल्लाह ﷺ के वालिद की **<u>क़ब्र दारे-नाबिगा में थी</u>**.

अब्दुल-अज़ीज़ बयान करते है के, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन करीम ने क़ब्र-मुबारक की पहचान कराते हुए कहा के, **<u>जो शख्स दारे-नाबिगा में दाखिल होता है तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब की क़ब्र-मुबारक दुसरे घर के किवाड़ (शटर) की बाई तरफ नीचे मौजूद है</u>**.

अल्लामा इब्ने अब्दुल-बर फरमाते है के, रसूल-अल्लाह ﷺ के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह मदीना-मुनव्वरा में फौत हुए. और **<u>हज़रत अब्दुल्लाह की क़ब्र-मुबारक अदि बिन नज्जार के घरों में से एक घर में थी. ईस लिए अल्लामा इब्ने जव्ज़ी फरमाते है के, ये घर ही दारे-नाबिगा है</u>**.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(9.) आमिना बिन्ते वहब उम्मे रसूल-अल्लाह ﷺ

दलील-(13.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 443, जिल्द-4 108 से 109

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: **<u>जिन मस्जिदों में हुजुर ﷺ ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं मस्जिदों में से एक "मस्जिदे अल-अबवा" है</u>**. इस लिए,

अल्लामा असदी ने अबवा और जुह्फा के दरमियानी मक़ाम पर गुफ्तगू करते हुए लिखा था के, जुह्फा अबवा के बाद 13 मील के फासले पर था. और अबवा के दरमियान रसूल-अल्लाह ﷺ की सजदागाह थी.

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: सब मानी जमा करने की सुरत ये है के अबवा पहाड़ का नाम भी है, बस्ती का नाम भी है और वादी का भी. अबवा का ज़िक्र हदीसे हज़रत सअब बिन जसामा में आता है, और **<u>यहीं हुजुर ﷺ की वालिदा आमिना की क़ब्रे-अनवर भी है</u>**. और वाकिया ये है के, आप ﷺ के वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह खजूरें लेने के लिए मदीना-मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए. और वहीं फौत हो गए. **<u>हज़रत अब्दुल्लाह की जव्ज़ा मोहतरमा आमिना हर साल उनकी क़ब्रे-अनवर की ज़ियारत के लिए जाया करती थी</u>**. और जब रसूल-अल्लाह ﷺ 6 साल के हो गए तो आमिना आप ﷺ को साथ में ले कर गईं. हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब भी साथ थे. कुछ कहते है के हज़रत अबु-तालिब थे. और उम्मे-अयमन भी थी. ईस तरह वापसी पर आमिना अबवा में इंतकाल फरमा गईं. एक रिवायत में है के आमिना की क़ब्रे-अनवर मक्का में है. ताहम अल्लामा नूदी कहते है के, **<u>अबवा की पहली रिवायत ही सहीह है</u>**.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(10.) उम्मुल-मोमिनीन मय्मुना बिन्ते अल-हारिस

दलील-(14.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 448

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: **<u>जिन मस्जिदों में हुजुर ﷺ ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं मस्जिदों में से एक</u>**

"मस्जिदे सरीफ" थी. और **यही मस्जिद है जिस में सय्यदा मय्मुना رضی اللہ عنہا की क़ब्र-मुबारक है**.

इमाम अल-सम्हुदी رحمۃ اللہ علیہ फरमाते है **में वहाँ हाज़िर हुवा और ज़ियारत का शर्फ़ हासिल किया**. एक रिवायत में है के **सय्यदा मय्मुना رضی اللہ عنہا को "सरीफ" में दफन किया गया. और रसूल-अल्लाह ﷺ ने उनकी क़ब्र पर (मस्जिद) तामीर फरमाई थी**.

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ की हदीस में है के, रसूल-अल्लाह ﷺ जब भी किसी मक़ाम पर ठहेरते तो उस मक़ाम को छोड़ने से पहले वहाँ 2 रकात नफ्ल अदा करते.

अल्लामा अल-तकी अल-फ़ासी رحمۃ اللہ علیہ लिखते है, काबिले ज़ियारत क़बरों में से एक सय्यदा मय्मुना बिन्ते अल-हारिस अल-हिलालिया رضی اللہ عنہا की क़ब्र-मुबारक है. ये वादी ऐ मुर्र के रास्ते में मशहूर है.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(11.) उबेयदा बिन अल-हारिस बिन अल-मुत्तलिब رضی اللہ عنہ

दलील-(15.) इमाम अल-सम्हुदी رحمۃ اللہ علیہ (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 455 से 456

इमाम अल-सम्हुदी رحمۃ اللہ علیہ रिवायत फरमाते है: जफरान के मक़ाम पर आज-कल एक मस्जिद दिखाई देती है. जिसे लोग **मुतबर्रक जानते है**. ये यनबी जाने वालो की बाई तरफ आती है. मेरा ख़याल है के ये मस्जिदे ज़फरान है. और ज़फरान के मकाम की तरफ पोहोंचने से पहले में ने देखा के वहां एक मस्जिद है. जो चुने से बनी है. और रास्ते से थोड़ी सी ऊँची है. **लोग ईस में नफ्ल पढना मुतबर्रक जानते है**. इसके करीब कोई घर नहीं. तो ज़ाहिर है के **ये उन्हीं मजकुरा मस्जिदों में से एक है जिन मस्जिदों में हुज़ुर ﷺ ने वहां नमाज़ अदा की थी**. फिर **ईस मस्जिद की मेहराब के सामने एक पुरानी और मज़बूत क़ब्र देखी. शायद ये उबेयदा बिन अल-हारिस बिन अल-मुत्तलिब رضی اللہ عنہ की क़ब्र-मुबारक थी**.

अल्लामा इब्ने अब्दुल-बर رحمۃ اللہ علیہ फरमाते है के, रसूल-अल्लाह ﷺ जब अपने सहाबा के हमराह अल-नाज़ीईन के मक़ाम पर ठहरे तो सहाबा से पूछा के हमें कस्तूरी की खुसबू आ रही है. आप ﷺ ने फ़रमाया, ये केसे रुक सकती है ? यहाँ तो मुआविया رضی اللہ عنہ के बाप यानी उबेयदा बिन अल-हारिस رضی اللہ عنہ की कब्र है. आज-कल ये अल-नाज़ीईन का मक़ाम किसी को मालूम नहीं.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(12.) मस्जिदे अर्क अल-ज़बियाह के किबले की तरफ एक बड़ी क़ब्र है

दलील-(16.) इमाम अल-सम्हुदी رحمۃ اللہ علیہ (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 430 से 432

इमाम अल-सम्हुदी رحمۃ اللہ علیہ रिवायत फरमाते है: **जिन मस्जिदों में हुज़ुर ﷺ ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं में से** मस्जिदे अर्क अल-ज़बियाह है. अल्लामा अल-मितरी رحمۃ اللہ علیہ रिवायत फ़रमाते है, फिर वादी ऐ रूहा में उतर जाए जो किबले की जानिब है. तुम किबले की जानिब चलो, घाटी तुम्हारी बाई तरफ हो तो ये रास्ता तुम्हें मगरिब की तरफ ले जाएगा. हालांके तुम पहाड़ के दामन में साथ साथ चल रहे होंगे. यूँ सब से पहले तुम्हें एक मस्जिद नज़र आएगी जो तुम्हारी दाई तरफ होगी. **ईस मस्जिद के किबले की तरफ एक बड़ी क़ब्र होगी. जो तवील दौर गुजरने की वजह से घिर चुकी है. ईस मस्जिद में रसूल-अल्लाह ﷺ ने नमाज़ अदा की थी**. ये मकाम अर्क अल-ज़बियाह के नाम से जाना जाता है.

हज़रत अल्लामा अल-मिज्द रिवायत फरमाते है, हदीसे आईसा में आता है, रसूल-अल्लाह ने मदीना से एक रात के फासले पर, हफ्ते के दिन मलिल में पोहोंचे फिर वहां से रवाना हुए और रात के वक़्त "शर्फ़ अल-सियाला" में पोहोंचे. और **सुबह की नमाज़ अर्क अल-ज़बियाह में अदा की**.

इमाम तबरानी ने और इमाम इब्ने ज़बाला रिवायत फ़रमाया है हज़रत अम्र बिन औफ़ मज़नी ने बयान किया हे के, नबी ऐ करीम ने पहला गजवा किया तो में साथ ही था. ये गजवा ऐ अबवा था. जब आप **रूहा में अर्क अल-ज़बियाह के मक़ाम पर पोहोंचे** तो फ़रमाया, "ईस पहाड़ का नाम जानते हो?" यानी वरकान का. तो सहाबा ने अर्ज़ किया, **अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते है**. आप ने फ़रमाया, "ये जन्नत के गर्म पहाड़ो में से एक है. ईलाही, इस में हमारे लिए बरकत रख दे. और अहले-जन्नत के लिए भी ईस में बरकत फरमा." फिर फ़रमाया, "जानते हो ईस वादी का नाम क्या है?" यानी वादी ऐ रूहा के बारे मी पूछा. फिर फ़रमाया, "ये मुअतदील इलाका है. **मुझसे क़ब्ल ईस में 70 अंबिया नमाज़ अदा कर चुके है**. ईस वादी से नबी हज़रत मूसा बिन इमरान सत्तर हज़ार बनी-इसराइल को लेकर गुज़रे थे. आप पर क़त्वानी दो आबाएं थी. और ऊंटनी पर सवार थे." फिर फ़रमाया, "**क़यामत उस वक़्त तक कायम ना हो सकेगी जब तक हज या उमराह के लिए हज़रत ईसा यहाँ से ना गुज़ारेंगे**. ये दोनों इबादतें उनके लिए जमा हो सकेगी. इमाम अल-सम्हुदी फरमाते है, ईस मस्जिदे अर्क अल-ज़बियाह के आसार अब तक मौजूद है.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(13.) मस्जिद अल-अजूज़ में बरा बिन मआरूर की क़ब्र है

दलील-(17.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा, जिल्द-3, सफा- 242

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: **जिन मस्जिदों में हुज़ूर ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं में से मस्जिदे बनु-खतिमा भी थी जो औस से तआल्लुक़ रखते थे. और फिर मस्जिद अल-अजूज़ भी थी**. ईस लिए,

इमाम इब्ने ज़बाला रिवायत फरमाते है हज़रत हारिस बिन फ़ज़ल और हिशाम बिन उरवाह कहते है के, नबी ऐ करीम ने मस्जिदे बनु-खतिमा में नमाज़ अदा की.

इमाम इब्ने शब्बाह के मुताबिक: हज़रत मुस्लिमा बिन अब्दुल्लाह अल-खतमी बयान करते है के, **नबी ऐ करीम ने मस्जिद अल-अजूज़ में नमाज़ अदा की, जो बनु-खतिमा में क़ब्र के नज़दीक थी. और मस्जिद अल-अजूज़ वो थी जो हज़रत बरा बिन मआरूर की क़ब्र के पास थी**. हजरत बरा बैतूल-उक़बा में मौजूद थे. और हिजरत से पहले फौत हो गए. उन्होंने अपने माल का तीसरा हिस्सा नबी ऐ करीम को पेश करने की वसीयत की थी. और अपनी क़ब्र के बारेमे कहा था के उसे क़ाबतुल्लाह रुख बनाया जाए.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(14.) मस्जिद अल-मिन्बजिस में पत्थरो वाली दो या तिन क़ब्रे है

दलील-(18.) इमाम अल-सम्हुदी की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा, जिल्द-3, सफा- 439

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: **जिन मस्जिदों में हुज़ुर ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं में से मस्जिद अल-मिन्बजिस भी है**. जो अर्ज की पिछली तरफ एक टीले के पहलु में है.

इमाम अल-बुखारी हज़रत नाफीअ की मस्जिद अल-रवीसा की रिवायत के बाद हज़रत अब्दुल्लाह से रिवायत करते है के, रसूल-अल्लाह ने हद्बाह को जाते हुए अर्ज की पिछली तरफ टीले की जानिब नमाज़ अदा की. ईस **मस्जिद के करीब दो या तीन कब्रें थी. रास्ते की दाहिनी तरफ ईन क़बरों पर ऊपर और निचे पत्थर रखे थे**. ये क़ब्रे रास्ते पर खड़े दरख्तों के पास थी.

फ़स्ल-(2.) वह मस्जिदें जिस में रसूल-अल्लाह ﷺ ने क़बरों के करीब नमाज़ अदा

बाब-(15.) मक्का में नबी ﷺ के अजदाद की क़बरों के दरमियान मस्जिदे ज़ी-तूई

दलील-(19.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 450 से 451

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: **जिन मस्जिदों में हुज़ुर ﷺ ने नमाज़ अदा की थी, उन्हीं में से मस्जिदे ज़ी-तूई है**. इमाम अल-बुखारी رحمه الله मस्जिदे बतन-मुर्र के बारे हज़रत नाफीअ رضي الله عنه से लिखते हुए हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत करते है के, नबी ऐ करीम ﷺ ज़ी-तूई में ठहरा करते थे. और रात वहीँ कयाम फरमाते. और फिर सुबह होती तो वहां नमाज़ अदा कर कर मक्का तशरीफ़ लाते. आप ﷺ का मुसल्ला एक सख्त टीले पर था. उस मस्जिद में न था जो वहां बनाई गई. बल्कि उस्से ज़रा निचली तरफ था. इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: ये वादी अहले-मक्का के नज़दीक हुजुनैन के दरमियान मशहूर है. और ये बात अल्लामा अल-अज़रकी رحمه الله के क़ोल से मिलती जुलती है. ईस लिए अल्लामा अल-अज़रकी رحمه الله कहते है, **वादी ऐ ज़ी-तूई (जहां आप ﷺ नमाज़ अदा करते थे) मोअला नामी कब्रस्तान की पहाड़ी में उतरने की जगह पर है. (जिस कब्रस्तान में नबी ﷺ के अजदाद की क़ब्रे है, वहाँ से ये वादी) खिजरा तक जाती है. और मुहाजिरीन की क़बरों तक पोहोंचती है**.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(16.) आईसा رضي الله عنها के घर में दफन किया गया

दलील-(20.) इमाम अल-बुखारी رحمه الله (विसाल-256 हिजरी) की किताब: सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-296, बाब-95 नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما की क़ब्र-मुबारक, हदीस-1398

हज़रत उरवा رضي الله عنه से रिवायत है के, सय्यदा आईसा رضي الله عنها ने फ़रमाया, रसूल-अल्लाह ﷺ अपनी बिमारी की इब्तिदा में दूसरी अज़वाज से बतौरे मआजरत फरमाते थे, “में आज कहाँ हूँ? और में कल कहाँ होऊंगा? आईसा رضي الله عنها की बारी को आप ﷺ दूरगुमान करते थे. फिर जिस दिन अल्लाह ने आप ﷺ की रूह को कब्ज़ फ़रमाया उस दिन आप ﷺ मेरे पहलूँ और मेरे सीने के दरमियान (गोद में) थे. **और आप ﷺ मेरे घर में दफन किए गए.**

दलील-(21.) इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती رحمه الله (विसाल-911 हिजरी): अल-खसाईस अल-कुबरा, जिल्द-2, सफा-281 से 282

सय्यदा आईसा सिद्दीक़ा رضي الله عنها से रिवायत है के, उन्होंने फ़रमाया, जब मेरे वालिदे माजिद हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه बीमार हुए तो उन्होंने वसीयत की के मुझे नबी ऐ करीम ﷺ की **क़ब्रे-अनवर के पास ले जाया जाए. और आप ﷺ से इजाज़त मांगी जाए**. और कहा जाए के, **“यह अबुबक्र رضي الله عنه है या रसूल-अल्लाह ﷺ ! क्या इन्हें आप ﷺ के पहलूं में दफन किया जाए.?”** अब अगर तुम्हें इजाज़त मिल जाए तो मुझे वहां दफ्न कर देना. और अगर तुम्हें इजाज़त ना मिले तो मुझे बक़ी में दफ़नाने के लिए ले जाना. इस लिए अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه के जनाज़े को आप ﷺ के दरवाजे तक लाया गया. और यह अर्ज़ किया गया, “**ये अबुबक्र رضي الله عنه हाज़िर है, इन्की ख्वाहिश थी के नबी ऐ करीम ﷺ के पहलूँ में दफन किया जाए और हमें इसकी वसीयत की है. अब अगर हमारे लिए इजाज़त हो तो हम अंदर दाखिल हों और अगर इजाज़त ना हो तो हम पलट जाए**.” तो हमें निदा की गई के, “**इन्हें इज्ज़त व एहतराम के साथ अंदर ले आओ.**” हमनें कलाम तो सुना लेकिन किसी शक्श को हमनें देखा नहीं.

हज़रत अली अल-मुर्तुज़ा رضي الله عنه से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया, जब हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه की रेहलत का वक़्त आया तो उन्होंने मुझे अपने सिरहाने बिठा कर मुझसे फ़रमाया, “ऐय अली رضي الله عنه, जब में सो जाऊ तो मुझे ईन हाथों से गुस्ल देना जिससे तुमने

हुज़ुर नबी ऐ करीम ﷺ को गुस्ल दिया और मुझे खुसबू में बसा कर उस हुजरे तक ले जाना जिस में हुज़ुर नबी ऐ करीम ﷺ आराम फरमा है. और इजाज़त चाहना. अब अगर तुम देखो के दरवाज़ा खुल गया है तो मुझे अंदर ले जाना. वरना मुझे मुसलमानों के कब्रस्तान ले जाना. यहाँ तक के अल्लाह तआला अपने बन्दों के दरमियान फैसला फरमाए.” हज़रत अली अल-मुर्तुज़ा رضي الله عنه ने फ़रमाया, “ईस लिए अबुबक्र رضي الله عنه को गुस्ल दिया गया और सब से पहले में ने दरवाज़े तक पोहोंचने में जल्दी की. और अर्ज़ किया, “**या रसूल-अल्लाह ﷺ ! यह अबुबक्र رضي الله عنه हाज़िर है. और इजाज़त चाहते है**.” फिर में ने देखा के दरवाजा खुल गया. और किसी कहने वाले ने कहा, “हबीब को उसके हबीब के पास ले आओ, क्यों की हबीब अपने हबीब का मुश्ताक़ है.”

दलील-(22.) इमाम अल-बुखारी رحمه الله (विसाल-256 हिजरी) की किताब: सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-298, बाब-95 नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما की क़ब्र-मुबारक, हदीस-1403

हज़रत उरवा बिन मय्मून अल-अवदी رضي الله عنه से रिवायत है के, में ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه को देखा. के उन्होंने फ़रमाया, “ऐय अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه ! उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईसा सिद्दीक़ा رضي الله عنها की खिदमत में जाओ. और कहना के उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه आप رضي الله عنها को सलाम कहते है. फिर पूछते है के **क्या मुझे मेरे दोनों साथियों के पास दफ्न कर दिया जाए.**? सैयदा आईसा رضي الله عنها फरमाती है के, वह जगह में अपने लिए चाहती थी. लेकिन **आज में ने उन्हें अपने ऊपर तरजीह दी (के उन्हें वहां दफ्न कर सकते हो)**. जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه वापिस लोटे तो फ़रमाया, क्या खबर लाए? अर्ज़ की के, **ऐय अमीरुल-मोमिनीन ! आप رضي الله عنه के वहां दफ्न के लिए इजाज़त दे दी**. हज़रत उमर رضي الله عنه ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक उस आरामगाह से ज्यादा अहमियत वाली कोई जगह न थी. **जब मेरा विसाल हो जाए तो मुझे उठा कर वहां ले जाना. और सलाम अर्ज़ करना. फिर कहना के, उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه इजाज़त तलब करते है. अगर इजाज़त मिल जाए तो मुझे वहां दफन करना**. वरना मुझे मुसलमानों के कब्रस्तान में ले जाना.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(17.) खजूर के बने घर को उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने दिवार की शक्ल दे दी थी

दलील-(23.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 297 से 298

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: हुज़ुर ﷺ ने जब तामीर फरमाई तो अपनी दो बीवियों सैयेदा आईसा सिद्दीक़ा رضي الله عنها और सैयेदा सवदा رضي الله عنها के घर भी कच्ची ईंटो और खजूर की टहनियों से बने थे.

हज़रत इब्ने नज्जार رحمه الله फरमाते है के, सैयेदा आईसा رضي الله عنها के घर का एक दरवाजा था जो अर-अर या साज की लकड़ी से बना था.

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, और जिन हज़रात ने अज़्वाजे मुतहहरात رضي الله عنهن के घर मस्जिद में शामिल होते देखे, उन्होंने बताया के वो खजूर की टहनियों से बने हुए थे. जिन पर बालों से बने कम्बल पड़े थे.

इमरान बिन अबी-उन्स رضي الله عنه ने कहा, उन घरों में से चार तो कच्ची ईंटो से बने थे जिन के आगे खजूर की टहनियों का पर्दा था.

इमाम इब्ने साद رحمه الله की रिवायत में है के, हुज़ुर ﷺ के (ज़ाहिरी हयाती ज़िंदगी के) दौर में आईसा सिद्दीक़ा رضي الله عنها के हुजरे के ईर्द-गिर्द दिवार ना थी. **सब से पहले दिवार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने बनाई थी**.

हज़रत उबेय्दुल्लाह बिन अबु-ज़ैद رحمه الله फ़रमाते है, **ये दिवार ज्यादा ऊँची न थी. फिर इसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضي الله عنه ने (ज्यदा ऊँचा और मजबूत) बनाया था.**

इमाम अल-सम्हूदी फरमाते है, इसे यूँ समझो के हुजरे की हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की तरफ से निस्बत का मतलब यह है के **खजूर के बने घर को उमर बिन खत्ताब ने दिवार की शक्ल दे दी थी. ईस में सारी रिवायतें जमा हो जाती है**.

अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अल-हज़ली का भी ये क़ोल है के, जब हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने अज़्वाजे-मुतहहरात के घर गिराए तो देखा के वह कच्ची ईंटो से और खजूर की लंबी टहनियों से बने थे. शिर्फ़ सैयदा उम्मे-सलमा के घर का हुजरा न था. फिर हज़रत हसन बसरी का क़ोल भी है के, में अभी छोटा ही था. रसूल-अल्लाह के घरों में चला जाया करता था. (छत इतनी नीची थी के) में छत को हाथ से छू लेता था. हर घर का एक हुजरा था. और ये हुजरे अर-अर की लकड़ी पर बालों से बने कंबल से ढांपे हुए थे.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम, अबुबक्र और उमर का मज़ार शरीफ़

बाब-(18.) सैयदा आईसा के हुक्म से हुजरे की छत में सुराख़ (खिड़की)

दलील-(24.) इमाम अल-दारिमी (विसाल-255 हिजरी) की किताब: अल-मुसनद अल-जामी (सुनन दारिमी), सफा- 122

अबु-जव्ज़ा अव्स बिन अब्दुल्लाह बयान करते है, अहले-मदीना शदीद क़हत में मुब्तिला हो गए. उन्होंने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईसा सिद्दीक़ा से शिकायत की. सैयदा आईसा ने फ़रमाया, **नबी ऐ करीम की क़ब्र-मुबारक के पास जाओ और आसमान की तरफ (छत में) एक छोटा सा सुराख बना दो. के जिस से आप की क़ब्र-मुबारक और आसमान के दरमियान छत हाईल ना हो.** रावी बयान करते है, **लोगों ने ऐसा ही किया और इतनी शदीद बारिश हुई के घास उग गई**. और वह घास खाकर ऊंट इतने मोटे ताज़े हो गए के चरबी की वजह से वह फूल गए. उस साल को आम अल-फतक़ (बारिश का साल) क़रार दिया गया.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम, अबुबक्र और उमर का मज़ार शरीफ़

बाब-(19.) सैयदा आईसा ने हुजरे में एक दिवार और एक दरवाजा बनवाया

दलील-(25.) इमाम अल-सम्हूदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख़बारी दारिल मुस्तफ़ा, जिल्द-2, सफा- 299 से 301

इमाम अल-ज़ेन अल-मुराग़ी रिवायत फरमाते है: हुजरे में दो दरवाज़े है. **(वो दरवाज़े जो) सैयदा आईसा ने हज़रत उमर के दफ्न के बाद एक दिवार बना दी थी जो हुजरे के और दीगर पाकीज़ा क़बरों के दरमियान थी**.

इमाम इब्ने साद रिवायत फरमाते है: हुजरा शरीफ़ के दो दरवाज़े थे. क्यों की उन्होंने वजाहत के साथ कई तरीको से लिखा है के, उन्होंने हुज़ुर की नमाज़े जनाज़ा उनके हुजरे ही में पढ़ी और फिर उसी के दौरान कहा, जब हुज़ुर का विसाल मुबारक हो गया तो सहाबा ने कहा, आप की नमाज़े जनाज़ा कैसें पढ़े? तो उन्होंने कहा, ईस दरवाज़े से छोटी छोटी टोलिया दाखिल करते जाओ वह आप के लिए दुआ कर लें तो उन्हें दुसरे दरवाज़े से निकालते जाओ.

अल्लामा इब्ने जबाला फरमाते है, सैयदा हफ्सा बिन्ते उमर का घर और सैयदा आईसा का घर (जिस में क़ब्रे-अनवर मौजूद है) के दरमियान एक रास्ता था. घर इतने करीब थे के वह आपस में बात-चित कर लिया करती थी. सैयदा हफ्सा का घर खोखा के दाई जानिब था.

इमाम अल-सम्हूदी रिवायत फरमाते है: **ज़ाहिरीन आज कल मक़सूरा शरीफ़ (मज़ार-शरीफ़ का हिस्सा) के अंदर-बाहर यहीं खड़े होते है. ऐसा अल्लामा मितरी ने भी फ़रमाया है**.

अल्लामा इब्ने जबाला फरमाते है, सैयदा आईसा ने फ़रमाया, **जब से हज़रत उमर बिन ख़त्ताब दफ्न हो गए, में पर्दा कर के आती. और मामूली लिबास पहना करती. जब तक में ने अपने और क़बरों के दरमियान दिवार नहीं बना दी. में अपने लिबास का ध्यान करती रही**.

हज़रत मुत्तलिब फरमाते है, **लोग क़ब्रे-अनवर से (तबर्रुक के लिए) मिट्टी लेते थे. ईस लिए (अदब व ताजीम बरकार रखने के लिए) सैयदा आईसा ने हुक्म दिया तो सामने दिवार बना दी गई. फिर दिवार में छोटा सा सुराख था. वो भी आप के हुक्म से बंद कर दिया गया क्यों की उससे मिट्टी लेने लगे थे**.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम, अबुबक्र और उमर का मज़ार शरीफ़

बाब-(20.) उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने 88 हिजरी मज़ार-शरीफ़ को दोबारा बनवाया

दलील-(26.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख़बारी दारिल मुस्तफ़ा, जिल्द-2, सफा- 269, 270, 272, 274 से 276, 326, 327 से 329, 332, 382 से 383

इमाम इब्ने ज़बाला रिवायत फरमाते है: हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने मस्जिदे-नबवी को 91 हिजरी में गिराया **और फिर नक्श व निगार वाले पत्थरों से बनाया**. जिस पर **बतन नखल से लाया हुवा चुना लगाया**. फिर **जवाहरात और मर-मर से उसे चार-चाँद लगा दिए**. उनके कारीगरों ने कहा जो पत्थर का काम कर रहे थे के हम इसे यूँ बना रहे है जेसे हमारे मालूमात के मुताबिक़ जन्नत के दरख्तों और महल्लात की सूरत है. और **यहाँ से उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने मस्जिदे-नबवी की कच्ची ईंटें और मजारे रसूल-अल्लाह की ईंटें लेकर हुर्रा में अपना मकान बनाया. उस मकान पर आज-कल सफ़ेदी की गई है**.

इमाम याह्या फरमाते है: उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने साल भर चुना पकाया जिससे **नक्श व निगार का सामान तैयार किया था**. चुना वह बतन नखल से लेकर आए. **बुन्याद पत्थरों से तैयार की और दीवारें पत्थरों से बनाई. और उन्हें चुना लगाया. मस्जिद के सुतून अंदर से खालिस पत्थरों के तैयार किए जिन के अंदर लोहा और सक्का पिघला कर भर दिया**.

उन्होंने मग़रिब के रुख तक 6 सुतुनो का इजाफा किया. और शाम की तरफ उस सुतुने मरबा जो मज़ार-शरीफ़ के अंदर है वहां से 14 सुतून और बढ़ाए. सुतूने मरबा (मज़ार-शरीफ़ के अंदर वाले सुतून) से मशरिक की तरफ 4 सुतून और बढ़ा दीए. **ईस तरह मस्जिदे-नबवी के इज़ाफे में मज़ार ऐ रसूल-अल्लाह को भी शामिल कर लिया गया**.

जब उन्होंने छत वाला मशरिकी हिस्सा बनाया तो इब्तिदा उस खुली जगह से की (जो मज़ार शरीफ़ के अलावा की मस्जिद की जगह पर थी) और उसी लाईन में शाम की तरफ 14 सुतून बनाए. जिनमे से 10 तो खुली जगह पर और 4 छूटे हुए (मज़ार शरीफ़ वाले) हिस्से पर बनाए. ये (मज़ार शरीफ़ की) छत पहले मौजूद थी. **यानि शाम की तरफ छूटे हुए हिस्से (मज़ार शरीफ़ की छत पर मस्जिद की छत) बनाई**. **फिर शामी तरफ के खुले हिस्से (मज़ार शरीफ़ की दूसरी तरफ के हिस्से) पर छत डाली. और ये छत 14 सुतूनो के बाद है**.

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: **हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने मस्जिद के हुस्न में बड़ी दिलचस्पी ली. ईस तरह के आप किसी कारीगर को देखते के उसने पत्थर वगैरा निहायत खूबसूरती से लगाया है तो उसे अस्ल मजदूरी से ज्यादा 30 दीनार और बतौरे इनाम देते**.

इमाम इब्ने ज़बाला रिवायत फरमाते है: इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-ज़ोहरी अपने दादा से रिवायत फरमाते है, जब वलीद बिन अब्दुल-मालिक मदीना पोहोंचे तो ईस वक़्त हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ तामीर से फारिग़ हो चुके थे. वलीद ने मस्जिद में घूमना शुरू किया. और सारी मस्जिद देखी. **जब मक्सुरा शरीफ़ (मज़ार शरीफ़ के हिस्से) की छत पर नज़र पड़ी तो कहा, आप ने (जैसी खुबसूरत छत मज़ार शरीफ़ की बनाई वैसी) पूरी मस्जिद की छत क्यों नहीं बनाई? हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने जवाब दिया, एय अमीरुल-मोमिनीन, ऐसा करने से खर्च बोहोत बढ़ जाता. वलीद ने कहा, कोई बात न थी.**

रावी कहते है के, **<u>मक्सुरा शरीफ़ जो हुजरे-शरीफ़ का हिस्सा है उसे बनाने पर चालीस हज़ार दीनार खर्च हुए थे.</u>**

इमाम इब्ने नज्जार رحمة الله عليه ने अहले-सीरत से यही बात रिवायत फरमाई उसमे उनके अल्फाज़ ये है: फिर उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمة الله عليه ने फ़रमाया, एय अमीरुल-मोमिनीन, यूँ बनाने से खर्चा बोहोत बढ़ जाता. वलीद ने कहा, कोई बात न थी फिर क्या होता? **<u>उमर رحمة الله عليه ने फ़रमाया, आप को मालूम है के मैं ने किबले वाली दिवार (पांच कोना दिवार) और दो छतो के दरमियान (मज़ार-शरीफ़ के हिस्से में) कितना खर्च किया है? उसने पूछा बताइए. तो उमर رحمة الله عليه ने फ़रमाया: पैतालीस हज़ार दीनार खर्च हुए है</u>**.
कुछ रावी के मुताबिक़ कहा चालीस हज़ार दीनार खर्च हुए. कुछ रावी कहते है ये खर्च चालीस हज़ार मिस्काल का था.
<u>[1441 हीजरी की कीमत के मुताबिक़: 1 दीनार के 32.5 डॉलर आज 1 डॉलर तक़रीबन 70 रूपये का है तो 45,000 दीनार के 10,23,75,000 दस करोड़ तेईस लाख पचत्तर हज़ार रूपये खर्च हुए थे.]</u>

<u>हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمة الله عليه ने मज़ार-शरीफ़ की पांच कोनी दीवार की ईमारत बनाई थी</u>. (जब इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه को अपने दौर में उन दीवारों के अंदर मज़ार-शरीफ़ की ईमारत में जाने का मोका सर्फ़ हासिल हुवा)
इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: **<u>हमने देखा तो मज़ार शरीफ़ मरबी (चोकोर) शक्ल में था. जिसे साफ़ और मुलायम स्याह (काला) पत्थरो से बनाया गया था. उनका रंग खाना ऐ काबा के पत्थरों के जैसा स्याह था. वहां ऐसे रॉब और उन्स की कैफ़ियत महसूस होती है के अहले-ज़ोक ही को पता चल सक्ता है</u>**. फिर बाहर वाली (पांच कोना की) दीवार और मगरीबी अंदर वाली दीवार में हमने तो फासला बिलकुल नहीं देखा. बलकी सूई गाड़ने की जगह भी नहीं देखी. ना ही अंदर वाले हुजरा-शरीफ़ का कोई दरवाजा देखा. और ना ही दरवाज़े की कोई जगह नज़र आई. ना ही शामी तरफ और ना किसी और तरफ. और हुजरा-शरीफ़ के पीछे शाम की तरफ हुजरा-शरीफ़ और दिखाई देने वाली दीवार के अंदर की खाली जगह मिस्लस (त्रिकोन) शक्ल की दिखी थी.
इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: **<u>अल्लाह-तआला ईस बनाने वाले को बेहतरीन जज़ा दे</u>**.

इमाम इब्ने नज्जार رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: **<u>नबी ऐ करीम ﷺ के हुजरा-मुक़द्दसा की छत पर खैमा की तरह (गुंबद की शक्ल में) मोम जमा किया हुवा कपडा था. और उस पर (मस्जिद की) छत थी. उस कपडे के निचे छोटा सा दरवाज़ा था. जिस पर बंद शीशा था. और सतह की छत में खोखा के ऊपर और खोखा था (2.5 फिट का चबूतरा था जैसे सफा-27 में बयान है)</u>**. जो उस खोखा के ऐन ऊपर था. और उसके ऊपर और भी शीशा लगा था. जिस पर ताला लगा हुवा था. हुजरा-शरीफ़ की छत और सतह मस्जिद की दूसरी छत के दरमियान दो हाथ का खुला था. इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: हुजरा-शरीफ़ से मिलने वाली जिस छत का उन्होंने ज़िक्र किया है तो उसे **<u>हमने देखा के वह मौजूद है जिस पर लोहे का ताला लगा है</u>**. रहा वह **<u>रोशन-दान</u>** का ज़िक्र इमाम इब्ने नज्जार رحمة الله عليه ने हुजरा-शरीफ़ की छत में किया वह उस **<u>मोम जमा किये हुए कपडे के नीछे है</u>**. जिस की तरफ उन्होंने इशारा किया है और और **<u>इमाम इब्ने नज्जार رحمة الله عليه ने ज़िक्र किया हुवा पहली बार आग लगने से पहले का (यानि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمة الله عليه की तामीर का) हाल है.</u>** और आग लगने के बाद जब छत तामीर हुई तो उसमे रोशन-दान न था.

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है: वो जो सुतूने वफूद की सफ (लाईन) के बराबर थी. तो उस पर वो दीवार थी जो निचली (मज़ार शरीफ़ की) छत और ऊपर वाली (मस्जिद की) छत के दरमियान पर्दा की हैसियत में थी. **<u>ईस में एक दरवाज़ा था जिससे दोनों छतों के दरमियान जा सकते थे. ईस तरह ये तीन बरामदे वही थे जिन की ऊँची छत और इर्द-गिर्द के उन सुतूनों की छत से बुलंद थी. जो मक्सूरा-शरीफ़ से जुड़े हुए थे</u>**. (इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه के ज़माने में दुबारह मस्जिद की तामीर के वक़्त तामीर करने वालो ने) वह नीची छत उखाड़ दी जो उस जगह के बराबर थी जहाँ रसूल-अल्लाह ﷺ का चेहरा-मुबारका के सामने ज़ाईरीन ज़ियारत करने खड़े होते थे. ये सब से क़दीम छत थी. क़दीम (पुरानी) होने के बावजूद वह लोग उस छत को उखाड़ते वक़्त किसी और मक़ाम को उखाड़ने से ज्यादह थक गए थे. क्यों की **<u>(उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمة الله عليه ने तामीर की हुई) ये छत बोहोत मज़बूत और पुख्ता थी</u>**.

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'a
SHAIKH MOHAMMED SHAKIL
Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima
MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com
FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE
Surat, Gujarat, India.

[रसूल-अल्लाह ﷺ अबुबक्र व उमर رضي الله عنهم की मुक़द्दस-क़बरों पर सहाबा, ताबईन व सालिहीन की तामीरात]

नज़रे सानी: सैयद मुहीउद्दीन साहब (जामा मस्जिद ख्वाज़ा दाना रحمه الله सुरत), मुआविन: अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी(रतलाम), मुरत्तिब: शेख मुहम्मद शकील अहमद

बा.हवाला: किताब वफ़ा उल वफ़ा बा अख़बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जुज्ब अल क़ुलूब इला दयारे मेहबूब ﷺ (तारीखे मदीनतुल मुनव्वरा) ☎ +91-76986-79976

maktabatzeenatfatima.wordpress.com

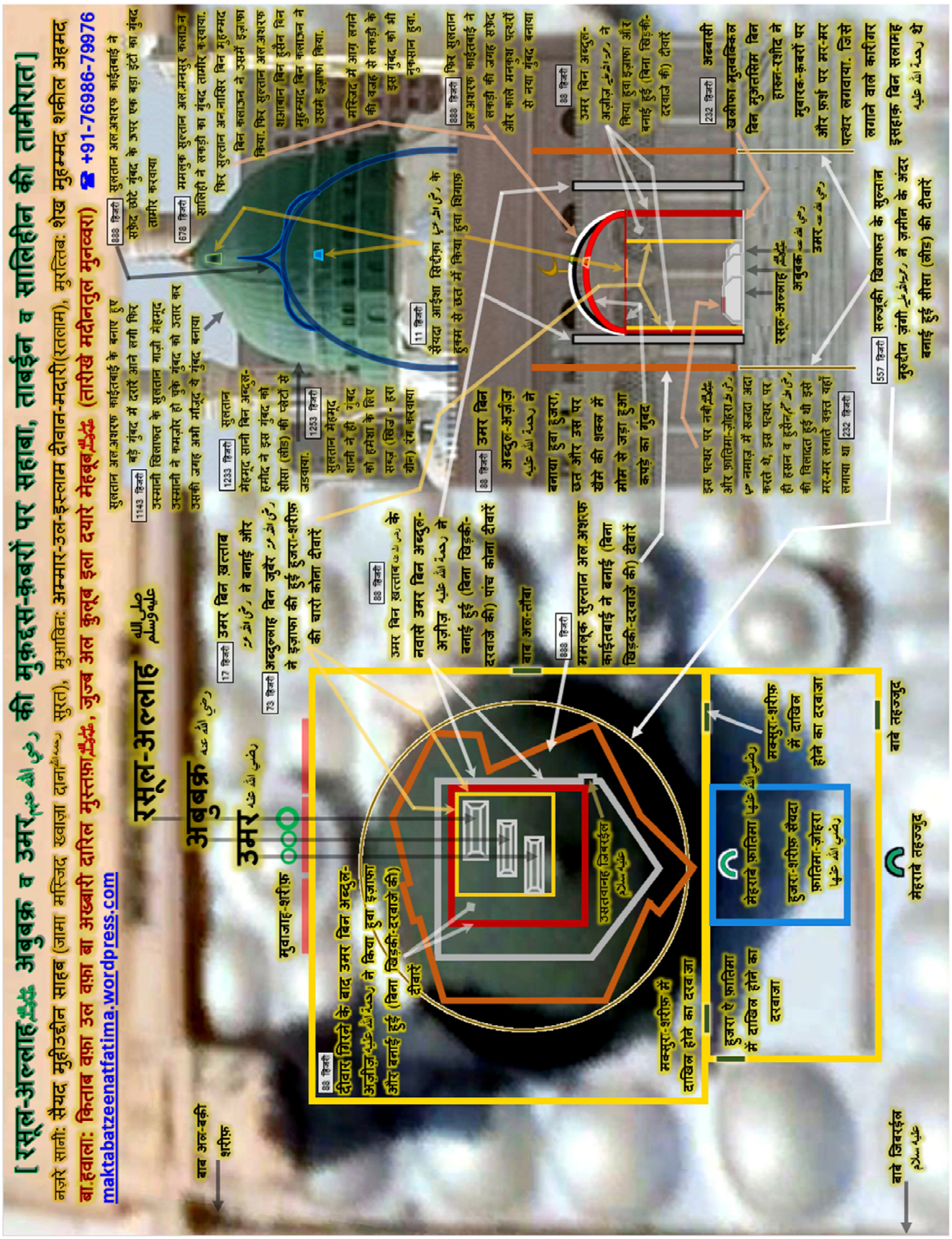

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(21.)उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله ने तीनों मुक़द्दस क़बरों को कोहान की तरह और चार ऊँगल ऊँचा बनवाया

दलील-(27.) इमाम अल-बुखारी رحمه الله (विसाल-256 हिजरी) की किताब: सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-297, बाब-95 नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما की क़ब्र-मुबारक, हदीस-1400

दलील-(28.) इमाम मुहम्मद अल-तावूदी अल-मालिकी رحمه الله (विसाल-1209 हिजरी) की किताब: हाश्या अल-तावूदी अल सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-96

हज़रत सुफ़यान अल-तमार رضي الله عنه ने हदीस रिवायत की है, उन्होंने **नबी ऐ करीम ﷺ की क़ब्र-मुबारक को देखा, वह कोहान की तरह थी**. इमाम इमाम मुहम्मद अल-तावूदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: **ईस हदीस में ज़िक्र किया है के नबी ﷺ की क़ब्रे-अनवर कोहान की तरह थी. यानी ज़मीने सी उठी हुई और बुलंद थी**.

इमाम अबु-नईम رحمه الله ने ये इजाफा किया है के, **हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه और उमर رضي الله عنه की कबरें भी इस तरह ही थी**.

इमाम अबु-दावूद رحمه الله अपनी सनद के साथ हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबुबक्र رحمه الله से रिवायत करते है के, में सैयदा आईसा رضي الله عنها के पास गया. और मेने अर्ज़ की, एय मेरी माँ ! मुझे रसूल-अल्लाह ﷺ की क़ब्र-मुबारक और उनके दो साहिबों رضي الله عنهما की कबरें दिखाइये. सैयदा आईसा رضي الله عنها ने तीनों कबरें मेरे लिए खोल दी. ये कबरें न बुलंद थी न ज़मीन से मिली हुई थी. **उन क़बरों के ऊपर मेदान की लाल कंकरिया डाली हुई थी**.

इमाम मुहम्मद अल-तावूदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबुबक्र رحمه الله ने (कबरें न बुलंद थी न ज़मीन से मिली हुई थी का) ये मुशाहिदा हज़रत मुआविया رضي الله عنه की खिलाफत में किया था. मतलब ये के पेहले ये कबरें मुसतेह थी. फिर **जब उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله की खिलाफत में मदीना में वलीद बिन अब्दुल-मलिक के हुक्म से हुजरा-शरीफ़ की दीवार बनाई गई तो उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله ने क़बरों को कोहान की सूरत में कर दिया**.

हज़रत अबुबक्र अल-अजरी رحمه الله ने हज़रत गनीम बिन बस्ताम رضي الله عنه से रिवायत की है के**, में ने नबी ऐ करीम ﷺ की क़ब्र-मुबारक को हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله ने बनाई हुई हुजरा-शरीफ़ की ईमारत (मज़ार-शरीफ़) में देखा तो क़ब्र-मुबारक ज़मीन से चार ऊँगल बुलंद (ऊँची) थी**. और हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक को आप ﷺ की क़ब्र-मुबारक के पीछे और निचे देखा. और हज़रत उमर رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक को हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक के पीछे और निचे देखा.

अल्लामा मुज़नी शाफ़ई رحمه الله ने क़ब्र को कोहान की तरह बनाने को मुस्तहब क़रार दिया है. क्यों की अगर क़ब्र मुसतेह हो तो वो उस तरह होगी जैसे बेठने के लिए कोई चीज़ (यानि बेंच वगेरह) बनाई जाती है. ईस तरह क़ब्र दुनयावी बेठने की चीजों के मुसबेह होगी.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(22.) हुजरा मुरबारका में मुबारक क़बरो की तरतीब

दलील-(29.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख़बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 512 से 520

हज़रत नाफीअ बिन अबु-नईम رحمه الله से रिवायत है के, नबी-ऐ-करीम ﷺ की क़ब्रे-अनवर किबले की तरफ है. फिर हजरत अबुबक्र رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक रसूल-अल्लाह ﷺ के दोनों कंधो के सामने है. और फिर उमर رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक हजरत अबुबक्र رضي الله عنه के कंधो के सामने है जिसकी सुरत (सफा-15 में) है.

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'a SHAIKH MOHAMMED SHAKIL Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE Surat, Gujarat, India.

इमाम अल-सम्हुदी ﷬ रिवायत फरमाते है: ये वह रिवायत है जिस पर अक्सर उलेमा का इत्तफ़ाक़ है.

अल्लामा ज़ेन मरागी ﷬ फरमाते है के, अल्लामा रज़ीन ﷬ और अल्लामा याहया ﷬ इसी बात पर यक़ीन रखते है. और अल्लामा रज़ीन ﷬ के जमा किए हुए कलाम में यूँ ही है. उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील ﷬ से रिवायत की और अपनी पहली रिवायत के बाद हुजरा मुबारक की दिवार के गिरने का किस्सा बयान किया है. और लिखा है: मेंने उन मुबारक क़बरों को देखा तो उन में हुज़ुर ﷺ की क़ब्र-शरीफ़ तो आगे थी. (किबले की तरफ़) और हजरत अबुबक्र ؓ की क़ब्र-मुबारक उनके पीछे थी. और हजरत उमर ؓ की क़ब्र-मुबारक हजरत अबुबक्र ؓ की क़ब्र-मुबारक के पीछे थी. हजरत अबुबक्र ؓ का सर हुज़ुर ﷺ के कंधो के पास था. और हज़रत उमर ؓ का सर हजरत अबुबक्र ؓ के कंधो के पास था.

इमाम अल-सम्हुदी ﷬ (तमाम रिवायतों को जमा करने के बाद आखिर में) रिवायत फरमाते है: अब शिर्फ़ दो पहले रिवायतें रह जाती है और उनमे शिर्फ़ अव्वलियत बताना होगी. लेकिन उनमें पहेली रिवायत (नाफ़ीअ बिन अबु-नईम ﷬ की रिवायत) ज्यादा मशहूर है. और इमाम अल-हाकिम ﷬ की दूसरी रिवायत को सहीह कहने का मक्सद ईस बात को अव्वलियत देना है के ये सब से सहीह रिवायत है जिस में बताया गया है के मुबारक कबरें ज़मीन से ऊँची न थी. और अल्लामा याहया ﷬ ने भी कहा, मुझे हारुन बिन मुसा ﷬ ने बताया के उन्हें बोहोत से मदीना में रहनवाले उलेमा ने बताया के ये मुबारक-कबरें ज़मीन के बराबर थी. और **उन क़बरों पर बतहा (वादी) की सुर्ख (लाल) कंकरियां डाली गई थी**. अल्लामा इब्ने जबाला ﷬ ने सैयदा आईसा ؓ की रिवायत फरमाई के, **रसूल-अल्लाह ﷺ की क़ब्रे-अनवर मरबीअ (चोकोर) शक्ल की थी**. और आप ﷺ का सर-ऐ-अनवर मग़रिब की तरफ रखा गया था.

रहा वह जो सहीह बुखारी शरीफ़ में हजरत सुफ़यान तमार ﷬ ने कहा के, उन्होंने **नबी-ऐ-करीम ﷺ की क़ब्रे-अनवर ज़मीन से ऊँची देखी**. ईस रिवायत में अल्लामा अबु-नईम ﷬ ने ये इज़ाफा किया के **हज़रत अबुबक्र ؓ और हज़रत उमर ؓ की कबरें भी अय्सी ही थी**. और फिर अल्लामा इब्ने-साद ﷬ ने ये अलफ़ाज़ लिखे, **मेंने नबी-ऐ-करीम ﷺ, हज़रत अबुबक्र ؓ और हज़रत उमर ؓ की मुबारक-कबरें ज़मीन से ऊँची देखी. (जैसे ऊंट की कोहन होती है)**.

इमाम अल-सम्हुदी ﷬ रिवायत फरमाते है: **ये (मुबारक-क़बरों का ऊँचा होने की) रिवायते ईस से पहले ज़िक्र की हुई रिवायतों से नहीं टकराती क्यों की हज़रत सुफ़यान तमार ﷬ हज़रत मुआविया ؓ के दौर में पैदा हुए लिहाज़ा उन्होंने (पहली रिवायतों में रावी ने क़ब्र-शरीफ़ की जिस वक़्त ज़ियारत की थी. उन ज़मानो के बाद) आखिर में क़ब्र-शरीफ़ की ज़ियारत की**. और इमाम बय्हकी ﷬ के मुताबिक़ पहले क़ब्र-शरीफ़ ऊँची ना हो और फिर जब (उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ﷬ के दौर में हुजरा-शरीफ़ की) दिवार गिरी तब क़बरों को ऊँचा कर दिया गया. अल्लामा याहया ﷬ ने अब्दुल्लाह बिन हुसैन ﷬ से रिवायत की उन्होंने फ़रमाया: **मैने वलीद बिन अब्दुल-मलिक के दौर में नबी-ऐ-करीम ﷺ की क़ब्रे-अनवर देखी तो वह ऊँची थी**.

हुजरा-शरीफ़ में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है : इमाम अल-सम्हुदी ﷬ रिवायत फरमाते है: उन तीनों मुबारक-क़बरों के अलावा हुजरा-शरीफ़ में एक क़ब्र की जगह खाली है. ईस बात को सैयदा आईसा ؓ की यह रिवायत सहीह बताती है के, सैयदा आईसा ؓ ने हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ ؓ को उस वक़्त पैगाम भेजा जब वह मौत के करीब थे के रसूल-अल्लाह ﷺ और अपने भाइयों के पास दफन हो. तब हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ ؓ ने कहा के, में आप के घर में तंगी पैदा करना नहीं चाहता.

यूँही सैयदा आईसा ؓ ने हज़रत हसन बिन अली ؓ को इजाज़त दी थी के उनके पास दफन हो लेकिन बनु-उमय्या ने रोक दिया था. यूँही बुखारी शरीफ़ में सैयदा आईसा ؓ ने हज़रत अब्दुल्ला बिन ज़ुबेर ؓ को वसिअत फरमाई के मुझे नबी-ऐ-करीम ﷺ और उनके साथियों के पास दफ्न ना करना, हाँ मेरे साथी उम्महातुल-मुअमिनीन के पास दफ्न करना. अल्लामा याहया ﷬ रिवायत फरमाते है, हजरत ईसा ؑ हुज़ुर ﷺ और आप के दोनों साथियों के हमराह दफ्न होंगे और उनकी यह चोथी क़ब्र होगी.

सुनन (जामी) अल-तिरमिज़ी में रिवायत है के, तौरात शरीफ़ में हज़रत मुहम्मद ﷺ की तारीफ़ लिखी है और यह भी के हज़रत ईसा عليه السلام आप ﷺ के पास दफ्न होंगे. रावी कहते है अबु-मौदूद رحمه الله ने कहा के हुजरा-शरीफ़ में एक क़ब्र की जगह मौजूद थी.

तबरानी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम رضي الله عنه से रिवायत है के, हज़रत ईसा عليه السلام रसूल-अल्लाह ﷺ और आप के दोनों साथियों के हमराह दफ्न होंगे. तो यह चोथी क़ब्र होगी.

अल्लामा ज़ेन मरागी رحمه الله फरमाते है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه ने बयान किया के रसूल-अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, हज़रत ईसा عليه السلام जमीन पर उतरेंगे, शादी करेंगे और उनके वहा औलाद होगी फिर पैतालीस (45) साल तक यहाँ तहरेंगे. फिर वह फौत होंगे तो मेरे पास दफ्न होंगे. ईस लिए में और हजरत ईसा عليه السلام एक ही क़ब्र से हजरत अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما के दरमियान उठेंगे.

इमाम इब्ने नज्जार رحمه الله रिवायत फरमाते है, अहले-सीरत का कहना है के, हुजरा-शरीफ़ में मशरिकी ताक्चे में एक क़ब्र की जगह है, हज़रत सईद बिन मुसय्यब رضي الله عنه के मुताबिक़ हज़रत ईसा عليه السلام वहीं दफन होंगे.

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: हुजरा-शरीफ़ के मशरिकी तीसरे हिस्से पर रेत का ढेर था जिस की बिना पर वह जगह हुजरा-शरीफ़ की बाकि जगह से अलग मालूम होती थी. और ईस से पहले मजार-शरीफ़ में शाम से किबले की तरफ इसी जगह में एक दीवार की दलील मिलती है. और शायद यही वह जगह है. जिसे ताक्चा कहा गया.

हज़रत कआब अहबार رضي الله عنه रिवायत फरमाते है, **जब भी फ़जर तुलुअ होती है तो सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्ते ज़मीन पर उतर कर क़ब्रे-अनवर को घेरे में ले लेते है उस मक़ाम पर अपने पर बिछा देते है. नबी-ऐ-करीम ﷺ पर दुरूद पढ़ते है. और जब शाम होती है तो वह फ़रिश्ते (आसमान की और) ऊपर चढ़ जाते है. और उस दौरान (सत्तर हज़ार) नए फ़रिश्ते आजाते है, जो पहले के फरिश्तो की तरह ही अमल करते है. और फिर जब क़यामत को ज़मीन फटेगी तो हुज़ुर ﷺ सत्तर हज़ार फरिश्तों में क़ब्रे-अनवर से बहार निकलेंगे**.

सुनन दारिमी में सैयदा आईसा رضي الله عنها से रिवायत है के, **सत्तर हजार फ़रिश्ते रात में और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते ही दिन में होते है**.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(23.) इसहाक बिन सलामाह رحمه الله ने अब्बासी खलीफा मुतवक्किल के हुक्म से हुजरा मुरबारका और मुक़द्दस क़बरों पर संगे मरमर पत्थर लगाया

दलील-(30.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 530 से 531

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله रिवायत फरमाते है: हुजरा-शरीफ़ संगे मरमर पत्थर लगा कर मजबूत किया गया था.

(क़ब्रे-अनवर पर लगे हुए सुर्ख पत्थर की फ़ज़ीलत): अल्लामा याहया رحمه الله रिवायत फरमाते है, जब सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा رضي الله عنها के हुजरे में रह रहे सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन رحمه الله और उनके शोहर हज़रत हसन मस्नी बिन हसन बिन अली رحمه الله को निकाल कर उस घर को गिराया जाने लगा तो हज़रत हसन मस्नी رحمه الله ने अपनी अवलाद में सब से बड़े लड़के हज़रत जाफर رحمه الله को उस जगह भेजा और ताकीद की के मजार-ऐ-रसूल-अल्लाह ﷺ की तामीर के करीब ठहरे रहना और देखते रहना फ़लां क़िस्म का पत्थर वह तामीर करने वाले बुन्याद में लगते है या नहीं? वह देखते रहे. तामीर करने वालो ने बुन्यदें ऊँची कर ली लेकिन वह पत्थर वहां नहीं लगाया. हज़रत जाफर رحمه الله ने बताया के उन्होंने वह पत्थर निकाल दिया है. ये सुन कर हज़रत हसन मस्नी رحمه الله सजदे में गिर गए. और कहने लगे, **"ये वह पत्थर था के जब भी नबी-ऐ-करीम ﷺ सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा رضي الله عنها के घर तशरीफ़ लाते तो ईस पत्थर की तरफ मुंह कर कर नमाज़ अदा करते थे. या सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा رضي الله عنها ईस पत्थर की तरफ मुंह कर कर नमाज़ अदा करती थी. और इमाम अली रज़ा बिन मुसा काज़िम رحمه الله तो फरमाते है के, सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा رضي الله عنها ने ईस पत्थर पर ही हज़रत इमाम हसन व हुसैन رضي الله عنهما को पैदा किया था."**

(क़ब्रे-अनवर पर लगे हुए सुर्ख पत्थर का शिफ़ा देना): अल्लामा याहया ﷫ आगे फरमाते है के, मेंने हज़रत हुसैन बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन हुसैन ﷫ को देखा था. हम में से कोई भी उनसे अफज़ल ना था. **हज़रत हुसैन बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन हुसैन ﷫ को जब भी कोई जिस्मानी तकलीफ़ होती तो उस पत्थर को तकलीफ़ वाले मक़ाम पर लगाते**. हम अरसा तक उस पत्थर को उनके पास देखते रहे. **यहाँ तक के जब हमें वह पत्थर नज़र नहीं आया तब के जब हुजरा-शरीफ़ में क़ब्रे-अनवर के उपर संगे मरमर लगाया गया. तब वह (मरमर लगते वक़्त) पत्थर क़ब्रे-अनवर से मुतसील किया था**. और (अपने आखरी वक़्त तक उस कारीगर यानि हज़रत इसहाक बिन सलामाह ﷫ ने हुजरा-शरीफ़ और मस्जिद की तामीर की और) मस्जिद की तामीर करते वक़्त ही वह फौत हो गए. आगे अल्लामा याहया ﷫ की रिवायत के रावी फरमाते है, जिस कारीगर को अब्बासी खलीफा मुतवक्किल ने (हुजरा-शरीफ़ में और क़ब्रे-अनवर पर) मरमर लगाने और तामीर के लिए मुक़र्रर किया था वह कारीगर हजरत इसहाक बिन सलामाह ﷫ थे.

इमाम अल-सम्हूदी ﷫ रिवायत फरमाते है: अब्बासी खलीफा मुतवक्किल (नसब: मुतवक्किल बिन मुअतसिम बिन हारून रशीद बिन मुहम्मद महदी बिन मन्सूर बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ) की खिलाफत 232 हिजरी से सुरु हुई और वफात शव्वाल 247 हिजरी को हुई.

अल्लामा इब्ने नज्जार ﷫ की रिवायत में फ़रमाया है के, (हज़रत इसहाक बिन सलामाह ﷫ मक्का और मदीना मुतवक्किल की तरफ से तामीर पर मुक़र्रर थे) खलीफा मुतवक्किल ने अपने दौर में हज़रत इसहाक बिन सलामाह ﷫ को हुक्म दिया था के हुजरा-मुबारक को मरमर लगा कर मजबूत कर दें तो वेसा ही उन्होंने कर दिया.

[232 हिजरी में खलीफा मुतवक्किल के दौर में क़ब्रे-अनवर पर संगे मरमर के साथ लगे हुए पत्थर की 888 हिजरी में इमाम अल-सम्हूदी ﷫ और आपके साथियों ने जियारत की]: इमाम अल-सम्हूदी ﷫ रिवायत फरमाते है: खलीफा मुतवक्किल की तामीर के बाद मरमर को नए सिरे से फिर लगाने का ज़िक्र किसी भी मुअर्रिख ने नहीं किया. अलबत्ता हमारे दौर (888 हिजरी) के हुजरा-शरीफ़ के तामीरी निगरानी करने वाले जनाब शम्स मेहसनी ख्वाजगी बिन जमन ने संगे मरमर को सुल्तान अशरफ काईतबाई के हुक्म से लगाया था. और उस वक़्त किबले की जानिब मग़रिब की तरफ से इब्तिदा ही में गेहरा सुर्ख (लाल) रंग की तख्ती देखी जिसेसफ़ेद वाजेह संगे मरमर ने घेर रखा है. उस के अंदर दीनार से बड़ा टुकड़ा ईस तख्ती के ज़ाहिरी हिस्से पर चुने से चिपका हुवा है. ईस के बारे में मशहूर है के ये नफीस किस्म का चमकदार गोहर है. फिर तामीर के निगरान ने मुझे दिखाया के वह शहद के रंग का पत्थर है जिस की सुर्ख (लाल) जर्दी माइल थी. उन्होंने मुझे बताया के, में तो इसे हजर अल-यरकान समझता हूँ. निगरान को डर था के उस पत्थर को पहले की तरह कैसे चिपकाया जाएगा ईस लिए पहले मरमर को खरोचने का हुक्म दिया और उस पत्थर को उस खरोचे हुए हिस्से में लगाने को कहा. उन कारीगरों ने एय्सा ही किया और उस पत्थर को अपने मक़ाम पर लगा दिया.

मेंने किसी भी मुअर्रिख को नहीं देखा के उसने ईस मरमर के बारे में बताया हो जो हुजरा-शरीफ़ के अंदर जमीन में लगाया गया है. और ज़ाहिर है के ये उस वक़्त दिखाई दिया जब ईस दौर (888 हिजरी) की तामीर में ज़मीन पर मरमर लगाया जा रहा था. क्यों की अल्लामा याहया ﷫ की रिवायत में उस पत्थर के बारे में (जिसे मुतबर्रक समझा जाता था) बताया जा चूका है के हज़रत हुसैन बिन अब्दुल्लाह ﷫ ने ईस पत्थर से कंकरिया दूर की. तामीर में नहीं लगाया और अल्लामा याहया ﷫ ने उसे उस वक़्त से नहीं देखा जब से हुजरा-शरीफ़ को मरमर से पुख्ता किया गया था. **ईस से पता चला के (232 हिजरी में खलीफा मुतवक्किल के दौर में) उन्होंने ज़मीन पर (फ़र्श पर) भी मरमर लगाया था. वरना वह पत्थर छुप जाता**.

इमाम अल-सम्हूदी ﷫ रिवायत फरमाते है: उन्होंने दोनों गुंबद बनाए है फिर मक्शुरा (मज़ार शरीफ़) के अंदर और बहार से उसे पत्थर लगा दिया गया है और आज मस्जिदे नबवी में मरमर का जितना भी काम नज़र आ रहा है वह हमारे दौर के **सुल्तान अशरफ काईतबाई का कराया हुवा है अल्लाह उनके मददगारो को इज्ज़त दे और उनका इक्तादार बढ़ाए.**

[कुछ गुमराह आज 1441 हिजरी में झूट फैला रहे है के इमाम सम्हूदी ﷫ ईस तामीर से राज़ी ना थे ईस किताब में तो ये हाल है के मज़ार-शरीफ़ की तामीर के मुख्तलिफ बाब में अहादीस जमा कर कर आखिर में वो पर सुल्तान और उनके साथियों को दुवाएं दे रहे है.]

बाब-(24.) इमाम इब्राहीम नखई رحمه الله ने खबर दी के तीनों मुक़द्दस कबरें चोकोर, ज़मीन से उभरी हुई है और उन पर सफ़ेद संगे मरमर है

दलील-(31.) इमाम इब्ने-बताल رحمه الله (विसाल-449 हिजरी) की किताब: अल-फहारिस अल-उलमिया शरह इब्ने बताल अल सहीह अल-बुखारी, जिल्द-3, सफा-382

दलील-(32.) इमाम बदरुद्दीन अल-अयनी رحمه الله (विसाल-855 हिजरी) की किताब: उमदातुल क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी, जिल्द-8, सफा-364, किताब-23 अल-जनाईज़, बाब-96

हज़रत इमाम अल-तहावी رحمه الله हज़रत इब्राहीम बिन यज़ीद अल-नखई رحمه الله (विसाल-96 हिजरी) की रिवायत बयान फरमाते है: ताबईने सहाबी हज़रत इब्राहीम बिन यज़ीद अल-नखई رحمه الله ने फ़रमाया जिस शक्श (हदीस रिवायत करने वाले रावी) ने नबी-ऐ-करीम ﷺ और साथी साहबीन رضي الله عنهم की कबरें देखी है उसने मुझे खबर दी है (हदीस रिवायत की है) के, **वो तमाम मुबारक-कबरें मुसन्नम (चोकोर), ज़मीन से उभरी हुई है और उन पर सफ़ेद संगे मर-मर है.**

[ये रिवायत ताबईने सहाबी हजरत इब्राहीम अल-नखई رحمه الله से है उनका विसाल 96 हिजरी में हुवा यानि 232 हिजरी में अब्बासी खलीफा मुतवक्किल के मुबारक क़बरों पर मरमर लगाने से पहले ही से मुबारक क़बरों पर मरमर लगा हुवा था जो हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज رحمه الله ने 88 हिजरी में लगवाया होगा]

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(25.) जिसे मुक़द्दस हुजरा-शरीफ़ में दाखिल होने का मोक़ा मिला

दलील-(33.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 528 से 530

(570 हिजरी का वाकिया): हज़रत अल्लामा अक़शहरी رحمه الله रिवायत फरमाते है: अबु-अम्र अहमद बिन अबु-मुहम्मद हारुन बिन आस नफरी رحمه الله फरमाते है के, मदीना शरीफ़ में एक हादसा रुनुमा हुवा था. उन्होंने सुन रखा था के ईस वाकिये को चालीस (40) साल हुए थे. वाकिया ये था के, हुजरा-मुबारका में एक धमाका हुवा था उस बात के बारे में खलीफा ऐ वक्त को लिखा गया. खलीफा ने फुकहा (फकीह उलेमा) से मशवरा किया तो उलेमा ने यह मशवरा दिया के मस्जिदे नबवी के खादिमो में से कोई फ़ाज़िल शक्श ईस हुजरा-शरीफ़ में दाखिल हो. ईस लिए उन्होंने बदर ज़ईफ़ को मुन्तखब किया. वह एक फ़ाज़िल शक्श थे. रात को इबादत करते और दिन को रोज़ा रखते थे. और बनु-अब्बास से उनका तआल्लुक था. उन्हें हुजरा-शरीफ़ में दाखिल कर दिया गया. उन्होंने देखा के मगरीबी दिवार गिर चुकी थी. ये बाहर वाली दिवार के अंदर की तरफ नीची दिवार थी. **मज़ारे-रसूल-अल्लाह ﷺ के लिए मस्जिदे-नबवी की मिट्टी से ईंटें तैयार की गई.** ईस तरह खलीफा ने पहले जैसी दिवार थी बिलकुल वैसे ही तामीर कर दिया. **हुजरा-शरीफ़ में (क़ब्रे-अनवर के करीब) एक लड़की का प्याला था. जो दिवार गिरने से टूट गया था. जिसे दिवार कुछ मिट्टी साथ बग़दाद (तबर्रुक ऐ रसुल-अल्लाह ﷺ के तौर पर) पोहोंचा दिया गया और और जिस दिन वह प्याला बग़दाद पोहोंचा लोग इस्तकबाल के लिए आए और उसे देखने के लिए बेशुमार लोग जमा हो गए. लोगो की भीड़ की वजह से कारोबार बंद हो गया. और खरीद व फरोख्त भी रुक गई.** अल्लामा इब्ने आस नफ़री رحمه الله ने ये रिवायत में ज़िक्र सफ़र 613 हिजरी में किया था. उन्होंने कहा के ईस वाकिये को तक़रीबन 40 साल हुए. तो इसका मतलब है के ये वाकिया 570 हिजरी या उससे ज्यादा पहले का है.

अल्लामा इब्ने आस नफ़री ने ईस वाकिये को अपने सफरनामे में लिखा है जिस से अल्लामा अक़शहरी ने नक़ल किया है. तो समझो के यह वाकिया अब्बासी खलीफा मुस्तदी बिल्लाह बिन मुस्तनज्द बिल्लाह के दौर का है.

(548 हिजरी का वाकिया): हज़रत अल्लामा अक़शहरी अपनी उसी रिवायत में आगे फरमाते है: अल्लामा इब्ने नज्जार ने अपनी किताब अल-दुर्र अल-समीना में लिखा है, यकीन कीजिये के उन्होंने 548 हिजरी में हुजरा-मुबारका में धमाके की आवाज़ सुनी थी. उस वक़्त कासिम बिन महनी हसनी अमीरे मदीना थे. लोगों ने उन्हें उस वाकिये की खबर दी तो उन्होंने कहा, कौन सा शक्श अंदर दाखिल हो कर देख सक्ता है के हुजरा-शरीफ़ के अंदर क्या हुवा है? उन्होंने एय्से शक्श के बारे में सोचा जो ईस काम को सहीह तरीके से कर सके. ईस लिए हज़रत उमर नसाई का नाम सामने आया. ये मुसिल के शैख़ सूफ़ी थे. इनके बारे में बताया गया के उन्हें पेसाब वगैरा की तकलीफ़ है जिस की वजह से उन्हें बार बार तहारत-खाना में जाना पढता है लेकिन खलीफा ने हज़रत उमर नसाई को ईस काम के लिए पसंद कर लिया. तो वो कहने लगे, मुझे मुहल्लत दीजिये के में अपने आप को ईस अमल के लिए तैयार कर लूँ. कहते है के **<u>हज़रत उमर नसाई ने खाना पीना छोड़ दिया और रसूल-अल्लाह से दरख्वास्त की के यह अमल करने और बाहर आने तक मर्ज़ से रिहाई मिली रहे</u>**. फिर उन्होंने हज़रत उमर नसाई को छत से उस बाणे में उतरा जिसे हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने बनाया था. वहां से आप हुजरा-मुबारका में शमा लिए दाखिल हो गए. देखा तो मुबारक-क़बरों पर छत की मिट्टी गिरी हुई थी. ईस लिए **<u>हज़रत उमर नसाई ने अपनी दाढ़ी से मुबारक-क़बरों पर से मिट्टी हटा कर सफाई कर दी. कहते है के आप की दाढ़ी ख़ूबसूरत हो गई. और अल्लाह-तआला ने मज़ार-ऐ रसूल-अल्लाह में जाने आने के दौरान उन्हें बीमारी से बचाए रखा.</u>** ये रिवायत अल्लामा इब्ने नज्जार ने बोहोत लोगो से सुनी थी.

(554 हिजरी का वाकिया): अल्लामा इब्ने नज्जार आगे रिवायत फरमाते है के, माहे रबीउल आखिर 554 हिजरी को खलीफा कासिम के दौर में **<u>लोगों ने हुजरा-मुक़द्दसा से खुसबू आई मेहसूस की. और वो खुसबू बढ़ गई तो लोगों ने अमीर ऐ मदीना से शिकायत की.</u>** <u>[सफा-22 के मुताबिक वैसी ही खुसबू जो हुजरा-शरीफ़ में कोई हादसा होने पर निशानी के तौर आती है जैसे उमर बिन अब्दुल-अजीज के दौर में जाहिर हुई थी जिस से लोग जान जाए और अंदर दाखिल हो कर देखे के हुजरा-शरीफ़ में कुछ मुआमला पेश आया है.]</u> उसने अंदर उतरने का हुक्म दिया. इसके बाद हज़रत ख्वाज़ा साराबियान अस्वद अंदर दाखिल हुए वह मज़ार-ऐ रसूल-अल्लाह के खादिम थे. उनके साथ मस्जिदे-नबवी के मुतवल्ली सफी मुसिली भी थे. और अमीरे मदीना से इजाज़त ले कर ईस मुबारक बारगाह में हाजरी देने के लिए सूफ़ी हज़रत हारुन शादी भी अंदर गए. अमीर ने उन्हें (अंदर दाखिल होने के लिए) ज़रूरी सामान का इंतजाम करवाया और जब वो अंदर गए तो देखा के एक बिल्ली ऊपर से गिर कर मर गई थी और फूल चुकी थी. उन्होंने उसे निकाल दिया. वह लोग हुजरा-शरीफ़ के और बाहर वाली (पांच कोना) दिवार के अंदर थे.

अल्लामा जेन मरागी रिवायत फरमाते है, उन्होंने देखा के उस जाली से बिल्ली गिरी है जो छत के ऊपर थी. बिल्ली उस (पांच कोना) दिवार और हुजरा-मुबारका की दिवार के दरमियान थी.

अल्लामा इब्ने नज्जार आगे रिवायत फरमाते है के, वह लोग 11 रबीउल आखिर बरोज़ ऐ हफ्ता मज़ार-शरीफ़ के अंदर दाखिल हुए थे. और ईस तारीख से आज तक वहां कोई नहीं जा सका.

इमाम अल-सम्हूदी रिवायत फरमाते है: वह दो दीवारों के दरमियान नाज़िल नहीं हुए थे. (यानि पांच कोना दिवार और हुजरा-शरीफ़ की दिवार के दरमियान) बलकी जो कुछ रिवायत में नक़ल किया है उसका मतलब ये है के हुजरा-शरीफ़ में रोशन-दान (सुराख़) था. और उसी के मुकाबिल मस्जिदे नबवी की छत में भी रोशन-दान था. वह ऊपर मस्जिद की छत के रोशन-दान से हुजरा-शरीफ़ की छत तक उतरे थे फिर वह से हुजरा-शरीफ़ तक.

वहां शाम की तरफ से किबले तक दिवार थी. और दरवाजे का हमें कोई नामो-निशान नहीं मिला. (यानि बिना दरवाजे की दिवार ने चारो तरफ से हुजरा-शरीफ़ को घेरे रखा है.)

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'a SHAIKH MOHAMMED SHAKIL Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE Surat, Gujarat, India.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर رضي الله عنهما का मज़ार शरीफ़

बाब-(26.) हर ज़माने में हुजरा-शरीफ़ की छत को बारिश के पानी से नुकशान हुवा हत्ता के आखिर सुल्ताने मिश्र ने हुजरा-शरीफ़ पर गुंबद तामीर करवाया

दलील-(34.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 509 से 510

अल्लामा याहया رحمه الله रिवायत फरमाते है: हजरत अब्दुल्लाह رحمه الله (बिन मुहम्मद बिन अक़ील बिन अबु-तालिब) फरमाते है, में रोजाना रात के आखरी हिस्से में घर से निकल कर मस्जिदे-नबवी को आया करता. (मजार-ऐ-अक़दस की तरफ जाकर) **नबी-ऐ-करीम ﷺ को सलाम पेश करता था.** और फिर अपनी नमाज़ की जगह पर आ बेठता था. और सुबह की नमाज़ अदा करता था. एक रात जब बारिश तेज हो रही थी तब में अपने घर से निकला और जब हजरत मुघीरा बिन शैबा رضي الله عنه के घर के करीब पोहोंचा तो **एय्सी खुसबू आई जो आज से पहले कभी महसूस नहीं की थी.** में मस्जिदे-नबवी में आया और हर रोज की तरह पहले रसूल-अल्लाह ﷺ के पास हाजिर हुवा. और मेंने देखा तो हुजरा-मुक़द्दसा की दिवार गिरी हुई थी. में अंदर दाखिल हुवा. नबी-ऐ-करीम ﷺ की खिदमत में सलाम अर्ज़ किया. और निहायत आराम से हुजरा-शरीफ़ में रुका. फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील رحمه الله ने मुबारक क़बरों का हाल बयान फ़रमाया. और फिर फ़रमाया, अभी कुछ ही देर गुज़री थी के मेंने क़दमों की आहट सुनी. देखा तो हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله थे. उन्हें दिवार गिरने का पता चल गया था तो वह आए थे. उन्होंने हुक्म दिया तो हुजरा-मुक़द्दसा में तीनों मुक़द्दस-क़बरों पर चादर डाल दी गई. सुबह हुई तो मिस्त्री हज़रत वरदान رحمه الله को बुला लिया. उन्हें हुजरा-शरीफ़ के अंदर दाखिल होने को कहा. वह अंदर गए और जो सूरते-हाल देखी और अर्ज़ की के मुझे एक आदमी की ज़रूरत है जो मुझे सामान देता रहे. ईस पर हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله ने अंदर दाखिल होने के लिए पिंडलियों से कपडा उठाया. (और अंदर दाखिल होने के लिए बिलकुल तैयार हो गए.)

हजरत अब्दुल्लाह رحمه الله (बिन मुहम्मद बिन अक़ील बिन अबु-तालिब) जो हुजरा-शरीफ़ के अंदर तीनों मुक़द्दस-क़बरों की जियारत करने के बाद हुजरा-शरीफ़ के बहार हाजिर होकर वहां का मंजर बयान फरमाते है के,

जब हजरत उमर رحمه الله (बिन अब्दुल-अजीज बिन मरवान) को रोजा.ऐ.रसूल-अल्लाह ﷺ में खिदमत के लिए दाखिल होता देख कर हजरत क़ासिम رحمه الله (बिन मुहम्मद बिन अबुबक्र) और हजरत सालीम رحمه الله (बिन अब्दुल्लाह बिन उमर) ने भी हुजरा-शरीफ़ के अंदर दाखिल होने की तैयारी कर ली. ईस पर हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज رحمه الله ने कहा, आप लोगों को क्या हुवा है? (आले अबुबक्र व उमर رضي الله عنهما ने अर्ज की), बखुदा हम भी आप के साथ हुजरा-मुक़द्दसा में जाएँगे. ईस पर हजरत उमर رحمه الله थोडी देर रुके. फिर फ़रमाया, **बखुदा हम सब भीड़ कर के उन हज़रात (रसूल-ऐ-करीम ﷺ, अबुबक्र व उमर رضي الله عنهما) को तकलीफ़ नहीं देंगे.** लिहाजा एय मजाहिम! तुम अंदर जाओ और वरदान رحمه الله की मदद करो. (हजरत मजाहिम बिन अबी-मजाहिम मक्की رحمه الله ताबई व मुहद्दिस और हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज رحمه الله के गुलाम थे.)

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है: अल-अतबीह में रिवायत है हज़रत इमाम मालिक رحمه الله ने फ़रमाया, रसूल-अल्लाह ﷺ के हुजरा-शरीफ़ की वह दिवार गिर गई जिस में आप ﷺ की क़ब्रे-अनवर थी. हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ رحمه الله वहां हाज़िर हुए उनके हमराह कुरेश के कुछ लोग थे. हज़रत उमर رحمه الله ने हुक्म दिया तो क़ब्रे-अनवर को ढांप दिया गया और जब आप ने वहां लोगों की भीड़ उमड़ते देखी तो हज़रत मज़ाहिम رحمه الله से कहा, हुजरा-शरीफ़ के अंदर जाओ और जो कुछ (दिवार का मलबा गिरा है) उसे निकाल दो. वह अंदर गए कच्ची ईंटें और मिट्टी वगैरा निकाल दी. और फिर क़ब्रे-अनवर को पूरी तरह दुरुस्त कर दिया. और जो कुछ ऊपर गिर गया था उसे साफ़ कर दिया. फिर बाहर निकले क़ब्रे-अनवर को ढांपा और फिर दिवार बनाई.

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है: पिछली रिवायत से ये बात साबित होती है के **हुजरा-शरीफ़ पर ईस तामीर का सबब खुद वह दिवार थी जो गिर गई थी और ये दिवार उस बारिश की वजह से गिरी थी जिसका गुज़िश्ता रिवायत में ज़िक्र है.**

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'at
SHAIKH. MOHAMMED SHAKIL
Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima
MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com
FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE
Surat, Gujarat, India.

दलील-(34.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 555

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: (655 हिजरी तक हुजरा-शरीफ़ की छत का हाल यह था के) मस्जिदे-नबवी की वह छत जो हुजरा-मुबारका के बराबर थी और जो हुजरा-मुबारका की छत से मिली हुई थी ये सारी के सारी साज की लकड़ी से बनी थी. जिस पर ना तेल था और ना ही नक्श व निगार. उन दोनों छत के दरमियान में एक तबक़ा था जिस पर ताला लगा था. और ऊपर शमा थी. ये उस वक़्त तक रहा जब तक दूसरी बार मस्जिदे-नबवी में आग़ लगने के बाद गुंबद नहीं बना दिया गया. और फिर हुजरा-शरीफ़ के अंदर की दिवार पर शाम की जानिब लकड़ी की तख्तियां थी. जो (हुजरा-शरीफ़ की) दिवार के सिरे से मस्जिद की छत तक थी.

इमाम अल-सम्हुदी आगे रिवायत फरमाते है, ताज्जुब की बात ये थी के (655 हिजरी में छत दोबारा बनाते वक़्त) कारीगरों ने हुजरा-शरीफ़ की ईस छत को उठाते वक़्त उसके निचे की तरफ लकडियों के दो हिस्से देखे. जो **दोनों ही हिस्से बारिश के पानी से खाए जा चुके थे.** शिर्फ़ एक बचा था. और खाए जाने के बावज़ूद उस हिस्से ने छत को उठा रखा था. **अल्लाह तआला उस दौर के लोगो को बेहतर जज़ाअ दे. (जिन्होंने हुजरा-शरीफ़ के छत को बनाई थी)** और ज़ाहिर ये है के ये काम उस वक़्त किया गया था जब मस्जिद की छत भी दोबारा बनाई गई थी. उन्होंने उस साल 655 हिजरी में हुजरा-मुबारका और उसके ईर्द-गिर्द किबले वाली और मशरिकी दिवार से लेकर बाब-ऐ-जिब्राइल तक छत डाली.

दलील-(34.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 560

इमाम अल-सम्हुदी (मुबारक-क़बरों पर गुंबद बनाने को जाईज़ बताते हुए) गुंबद बनाने की असल हदीस रिवायत फरमाते है: एक दिन रसूल-अल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ ले गए तो **आप ﷺ ने वह गुंबद नहीं देखा. तो पूछा: वह गुंबद कहाँ गया?** सहाबा ने अर्ज़ की के, गुंबद वाले ने हमें पूछा था के क्यों आप ﷺ ने उससे मुंह फेर लिया है. तो हमने उसे वजह बताई जिस की बिना पर उसने गुंबद गिरा दिया है. ईस पर रसूल-अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "हर माल एक वबाल (आफ़त) है, **हाँ मगर जहाँ खर्च करना ज़रूरी हो वहां खर्च करना चाहिए.**"

दलील-(34.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 559

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है: मस्जिदे-नबवी में पहली बार आग़ लगने से पहले और बाद हुजरा-मुबारका पर गुंबद न था. बलकी नबी-ऐ-करीम ﷺ के हुजरा-मुबारका के चारो तरफ (यानि हुजरा-शरीफ़ के बिलकुल ऊपर) मस्जिद की छत में **तकरीबन 2.5 फीट ऊँचा चबूतरा बनाया गया था. जो इंटों से बना था ता के मस्जिद की दूसरी छत से हुजरा-मुबारका की छत अलग दिख सके. (ये तामीर हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने करवाई थी)** जैसा अल्लामा इब्ने-नज्जार और दीगर अईम्मा ने रिवायत फ़रमाया है.

[जैसा के आगे रिवायतों में जिक्र किया था उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की तामीर के बाद से पेहली बार मस्जिदे-नबवी में आग लगने से पेहले तक बारिश के पानी से नुकशान होने पर हुजरा-मुबारका की छत की मरम्मत होती रही लेकिन फिर कभी बारिश के पानी से छत को नुकशान ना हो ईस लिए पहली बार] 678 हिजरी में ममलुक सुल्तान अल-मनसुर क़लाऊन सालेही के दौर में हुजरा-शरीफ़ की छत की जगह कुब्बा (गुंबद) तामीर किया गया. ये लकड़ी से बना था. निचे से मरबी और ऊपर से हश्त पहलूँ था. उसे सुतूनों के ऊपर खड़ा कर दिया गया था. और उस पर लड़की की तख्तियां लगाई गई थी. और उनके ऊपर सक्के की प्लेटें लगाई गई. उसमें एक ताक को रखा के जब उसमें से कोई शक्श देखे तो मस्जिद की निचली छत नज़र आए. (हुजरा-शरीफ़ और मस्जिद दोनों की) दो छतों के दरमियान लकड़ी की जाली थी जिसने उस छत को घेर रखा था. जिसमे छोटा दरवाजा था. जिस पर मोम में भीगा कपडा लगा था.

दलील-(38.) इमाम अल-सम्हुदी (विसाल-911 हिजरी) की किताबः वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 560

इमाम अल-सम्हुदी रिवायत फरमाते है : ममलुक सुल्तान अल-मलिक अल-नासिर हसन बिन मुहम्मद बिन क़लाऊन के दौर में ये गुंबद नए सिरे से बनाया गया. लेकिन सक्के की प्लेटें अपनी जगह से उखाड़ गई. ईस लिए **बारिशो के पानी से नुकशान का अंदेसा हुवा** ईस लिए ममलुक सुल्तान अल-मलिक अल-अशरफ शअबान बिन हुसैन बिन मुहम्मद के दौर में गुंबद को मजबूती से बना दिया गया. ये 758 हिजरी का वाकिया है.

फिर 881 हिजरी में कुछ लकडियों को **बारिश के पानी से नुकशान पोहोंचा** ईस लिए मुतवल्ली शम्श बिन जमन ने गुंबद को लकडियाँ लगा कर मजबूत कर दिया. इर्द-गिर्द वाली सक्के की वो प्लेटे उखडवा दी जो छत और जाली के दरमियान थी. देखा तो अरसा गुजर जाने की वजह से और **बारिशो के पानी की नमी पोहोंचने के बाईस उन लकड़ियों में से कुछ खाई जा चुकी थी**. ईस लिए उन्होंने दुरुस्त किया. और दोबारह बनाते वक्त उसमे बोहोत सा सक्का इस्तमाल किया. कुछ तो मस्जिदे-नबवी के स्टोर से लिया था और कुछ मिस्र से आया था. और रोज़ा-ऐ-अनवर के अंदर वाले जंगले (जाली) को भी नए सिरे से बनाया गया.

बारिशों के पानी की नमी हुजरा-मुबारका की छत तक पोहोंच चुकी थी. क्यों की नमी के आसार खुले दिखाई दे रहे थे. और उसका असर हज़रत उमर बिन अब्दुल-अजीज की तामीर की हुई पांच कोना दिवार के ऊपर लगी हुई **जालियों पर नज़र आ रहा था. के उन जालियों को गुन (जंख) लग चूका था**. ईस लिए मुतवल्ली ने उन्हें दुरुस्त कर दिया. और **बारिशों के पानी ने हुजरा-शरीफ़ के परदे को भी नुकशान पोहोंचाया यहाँ तक के परदे-मुबारक का कुछ हिस्सा गुल गया.** और फिर मस्जिदे-नबवी में दूसरी बार आग़ लगने की वजह से ये सब जल गया. ईस लिए अब उन सब की राए यह हुई के उन दिनों मौजूद सफ़ेद गुंबद की बुन्याद उन सुतूनों पर रखी जो ज़मीन पर इंटों से बनाए थे.

फ़स्ल-(3.) नबी ऐ करीम ﷺ, अबुबक्र और उमर का मज़ार शरीफ़

बाब-(27.) हज़रत शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी ने में रिवायत की हुई मज़ार-शरीफ़ की तारिख

दलील-(35.) शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी (विसाल-1052 हिजरी) की किताबः किताब जुज्ब अल-कुलूब इला दयारे मेहबूब, सफा- 121 से 123, फ़सल- उस हुजरा-शरीफ़ का बयान जो मुबारक-क़बरों को इहाता किए हुए है

शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी रिवायत फरमाते है : ये सैयदा आईसा सिद्दीक़ा के घर का हुजरा है. ये भी दीगर हुजरात ऐ मुस्ताफिया की तरह खजूर की छाल से तामीर हुवा था. जब हुक्मे इलाही के मुताबिक़ सरवरे अंबिया ﷺ का मद्फून यहीं हुजरा-शरीफ़ क़रार पाया तो सैयदा आईसा सिद्दीक़ा भी इसी हुजरा-शरीफ़ में कयाम फरमा थी. सैयदा आईसा सिद्दीक़ा और क़ब्र-शरीफ़ के दरमियान कोई पर्दा न था.

क़ब्र-शरीफ़ के पास जब लोग कसरत से आने जाने लगे और यहाँ की **मिट्टी भी बतौर तबर्रुक ले जाने लगे तो सैयदा आईसा ने ईस मकान के दो हिस्से कर दिए और अपनी सकुनत और क़ब्र-शरीफ़ के दरमियान एक दिवार खिंच दी** जब तक हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की क़ब्र ईस हुजरे में नहीं बनी थी तब तक सैयदा आईसा कभी कभी जिस तरह भी मुमकिन होता हुजुर ﷺ और सीदीक़े अकबर की क़ब्र पर आती रहती थी. जब हज़रत उमर भी वहां दफन हो गए तो आने में परदे का एहतमाम फरमाने लगी. जब तक कामिल परदा और पूरा लिबास ना इस्तिमाल करती क़बरों पर न आया करती थी.

अमीरून मोमिनीन हज़रत उमर ने जब मस्जिद में इज़ाफा किया था तो ईस हुजरे को खच्ची इंटों से तामीर कर दिया था. वलीद की तामीर के ज़माने तक ये हुजरा बरक़रार रहा. उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने वलीद बिन अब्दुल-मलिक के हुक्म से उसको मुन्हदिम कर के मनकुश पत्थरों से तैयार किया. इसकी पुस्त पर एक दूसरा इहाता बनवा दिया. और उन दोनों इमारतों में से किसी में कोई दरवाज़ा नहीं छोड़ा. बाज़ ने ये कहा के शाम की जानिब एक बंद दरवाज़ा है. लेकिन तहक़ीक़ ये है के पहला कौल सहीह है.

हज़रत उरवा से रिवायत है के, उन्होंने उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से कहा के अगर **हुजरा-शरीफ़ को उसके ही हाल पर छोड़ दिया जाए और हुजरा-शरीफ़ के इर्द-गिर्द एक नई ईमारत (नया मज़ार) तैयार किया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा.** हज़रत उमर ने कहा, मुझे अमीरुल-मोमिनीन ने जैसा हुक्म दिया है उसकी तामिल के सिवा कोई चारा नहीं है. मुहम्मद बिन अब्दुल-अज़ीज़ से रिवायत है के, उन्होंने हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से कहाँ के, **अगर हुजरा-शरीफ़ को उसके हाल पर ही छोड़ दिया जाए और उसके इर्द-गिर्द एक नई ईमारत (नया मज़ार) तैयार किया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा.** हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने फ़रमाया, **हुजरा-शरीफ़ में जगह की तंगी की वजह से दिवार की बुन्याद (को खोद कर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को दफन किया था, ईस लिए दिवार गिरने पर खुदाई के दौरान दिवार की बुन्याद) में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब का पाओं ज़ाहिर हो गया है. ईस लिए हुजरा-शरीफ़ को दोबारा बनाया गया.** और मुबारक-क़बरों की तरतीब में सहीह कोल यह है के, हज़रत अबुबक्र का सर नबी-ऐ-करीम ﷺ के सिने के पास है. और हज़रत उमर फारूक का सर हज़रत अबुबक्र के सिने के मुक़ाबिल है. जिसकी सुरत यह है. [ईस सुरत को आप सफा-15 में देख सकते है.] ईस सुरत में अगर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब का पाओं हुजरा-शरीफ़ की दिवार में है तो कोई तआज्जुब की बात नहीं.

[इसे से पहले की तमाम रिवायतों से ये बात वाज़ेह हो गई के पेहले मुबारक-कबरें कच्ची थी. और मुबारक-कबरें और हुजरे का फ़र्स दोनों ही मिट्टी के थे. ईस लिए 88 हिजरी आने तक क़बरों के निशान मिट चुके थे क्यों की उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के दौर में 88 हिजरी में गिरी हुई दिवार को दोबारा तामीर करने के लिए खुदाई करने पर ये पता भी ना चला के हज़रत उमर की कब्र-मुबारक कहाँ तक है और खुदाई करने पर हज़रत उमर का क़दम ज़ाहिर हो गया. आनेवाले ज़मानो में फिर कभी मुबारक-क़बरों के निशान मिट ना जाए और कोई ईन क़बरों को दोबारा खोल ना दे ईस लिए क़बरों के निशान बरक़रार रखने के लिए 88 हिजरी में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के नवासे और छट्टे खलीफा ऐ राशिद कहलाने वाले हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने तीनों मुबारक-क़बरों को ऊंट के कोहन नुमा और ऊँचा बनाया और हुजरा-शरीफ़ की चारो दीवारों को दोबारा और ऊँचा बनवाया और मस्जिदे-नबवी की छत से अलग मज़ार-ऐ-रसूल-अल्लाह ﷺ की छत बनवाई इतना ही नहीं मज़ार-शरीफ़ की छत के बिलकुल ऊपर जो मस्जिदे-नबवी की छत थी उसमे तकरीबन 2.5 फीट ऊँचा चबूतरा बनाया. जो इंटों से बना था ता के मस्जिद छत के बिच हुजरा-मुबारका की छत की जगह अलग दिख सके. और ताबईने सहाबी मुहद्दिस इब्राहीम अल-नखई जिनका विसाल 96 हिजरी में हुवा था उन्होंने भी गवाही दी के तीनों मुबारक-क़बरों पर संगे-मरमर लगा हुवा था. और फिर 232 हिजरी में अब्बासी खलीफा हारून रशीद के पोते खलीफा मुतवक्किल बिन मुअतसिम बिन हारून रशीद ने तीनों मुबारक-क़बरों पर और हुजरा-शरीफ़ की फ़र्स पर भी संगे मरमर लगवाया. इसके बाद हुजरा-शरीफ़ में जो भी तामीरी काम हुवा वो 888 हिजरी में यानि के इमाम अल-सम्हूदी की हयाती ज़िंदगी के दौर में सुल्तान अशरफ काईतबाई ने हुजरा-शरीफ़ पर सफ़ेद गुंबद तामीर करवाया और उस सफ़ेद गुंबद के ऊपर ईंटो का बड़ा गुंबद तामीर करवाया. और ईस तामीर से इमाम अल-सम्हूदी बोहोत खुस हुए उन्होंने तामीर करने वालो को दुवाएं दी और ईस मुकम्मल तामीर की तफसील में खास एक किताब जमा की जो वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ है.] ये हमारा खुलासा था. किताब जुज्ब अल-कुलूब का नहीं.

ऊपर की रिवायत में आगे शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस दहेलवी किताब जुज्ब अल-कुलूब रिवायत फरमाते है : हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की तामीर के बाद आज तक ईन मुबारक-क़बरों के हुजरे में आना नामुनकिन हो गया है.

बयान करते है के 548 हिजरी में हुजरा-शरीफ़ में एक धमाके की आवाज़ सुनी गई. एय्सा मालूम होता था के ईमारत में से कुछ गिरा है. हुजरा-शरीफ़ में एक एय्से शक्श को भेजना मुक़र्रर किया गया जो मशाईखे सुफिया में से थे और तहारत, सफाई, मुजाहिदा और रियाज़त जेसी सफात से मुतासिब थे. उन्होंने और ज्यादा सफाई और पाकीज़गी के लिए कुछ रोज़ तक गिज़ा ना इस्तमाल की. उसके बाद अपने आप को रस्सी से बांध कर छत में एक तरफ जो खिड़की का रास्ता था वहां से खुद को निचे लटकाया. तक़रीबन कुछ मिट्टी छत से गिरी हुई थी. उस मिट्टी को दूर किया और अपनी दाढ़ी को झाड़ू बना कर आस्ताने की सफाई की.

उसी तारीखे मजकुरा के करीब करीब एय्सी ही किसी दूसरी गरज से जो मज़ार-शरीफ़ की सफाई से तआल्लुक रखती थी. हुजरा-शरीफ़ की खिदमत पर मआमुर एक और शख्स को मस्जिद के मुतवल्ली के साथ हुजरा-शरीफ़ में निचे उतार कर उस मकाने-मुक़द्दस की सफाई कराई. 550 हिजरी में जमालुद्दीन अस्फहानी ﷫ जो साहिबे कमाल लोगों में से है मदीना मुनव्वरा में ही दफन किये गए. जमालुद्दीन अस्फहानी ﷫ की नेकियाँ और भलाईयां ज़माने के अवराक पर लिखी हुई है.

और उनके अव्साफ और मनाकिब का ज़िक्र मस्जिदे-नबवी के खतिबो की ज़बान पर रहता था. हुज़ुर ﷺ के करीब जो मशरिकी खिड़की है जिसको ईस ज़माने में बाबे जिबरईल कहते है उसके मग़रिब में रबात खुरद है और ये रबाते इज्म के नाम से मशहूर है. जमालुद्दीन अस्फहानी ﷫ यहीं दफन किये गए है. उन्होंने हुजरा-शरीफ़ के चारो और एक संदल की जाली खिंची थी. उन्हीं अय्याम में इब्ने अबी-ईज़ा ने सुर्ख रेशमी कपडा नकूश से मुनाकिश सफ़ेद उस मुबारक हुजरा-शरीफ़ पर लटकाने की गरज से भेजा. ईस रेशमी कपडे पर सुरह यासीन लिखी हुई थी. इब्ने अबी-ईज़ा शाहानी मिस्र के वजीरो में से थे. और उनका नाम बाज़ मसाजिदे मातुरा में मस्जिदे फ़तह की सिम्त में लिखा हुवा है. मजकुरा मुनाकिश खलीफा मुस्तदी बिल्लाह से इजाज़त हासिल कर के लटकाया गया था. इसके बाद हर बादशाह ने अपनी तख़्तनशीनी के वक़्त उस परदे का भेजना अपने फ़राइज़ और दस्तूर में शामिल कर लिया. सलातीने रोम का अब तक यही कायदा है के एक परदा भेजते है.

678 हिजरी में क़लाऊन सालीही ने तांबे की जालियों के साथ कुब्बा (गुंबद) ऐ खिजरा बनवाया. जो हुजरा-शरीफ़ के ऊपर मस्जिदे नबवी की छत से बुलंद है और अब तक इसी तरह से मौजूद है. ईस से पेहले हुजरा-शरीफ़ पर बने गुंबद की बुलंदी मस्जिदे नबवी की छत से आदमी की निस्फ़ क़द से ज्यादा ना थी. ये मस्जिदे नबवी शरीफ़ जो ईस वक़्त 1001 हिजरी में मौजूद है वह बादशाहे मिस्र काईतबाई की तामीर की हुई है. ये बादशाह 888 हिजरी में हुवा था. ये खादिमे हरमैन शरिफैन बादशाह ममलुक शराक्या से तआल्लुक रखता था. और उस वक़्त बोहोत ज्यादा सआादतमंद था. उसकी बड़ाई और अजमत का इज़हार हुजरा-शरीफ़ की तामीर, वज़ाईफ़ का ताईन और हरमैन शरिफैन के लिए अवकाफ़ के कयाम से बख़ूबी हो जाता है.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(28.) नबी आदम عليه السلام

दलील-(36.) इमाम अल-दारक़ुतनी ﷫ (विसाल-385 हिजरी) की किताब: सुनन अल- दारक़ुतनी, जिल्द-2, सफा- 218, किताब अल-जनाईज़, बाब-3 हज़रत आदम عليه السلام के क़ब्र की जगह और उनपर चार तक्बिरों का कहना, हदीस नं-1788

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान फरमाते है, हज़रत जिबरईल عليه السلام ने हज़रत आदम عليه السلام की नमाज़े जनाज़ा अदा की थी. उन्होंने हज़रत आदम عليه السلام पर चार तक्बिरें पढ़ी थी. हज़रत जिबरईल عليه السلام ने फरिश्तो को उसी दिन नमाज़ पढाई थी. और **हज़रत आदम عليه السلام को "मस्जिद अल-खैफ़" में दफन किया गया**. उनका रुख किबले की तरफ किया गया था. और उनके लिए लहद बनाई थी. और **हज़रत आदम عليه السلام की क़ब्र-मुबारक पर चुना लगा दिया गया था.**

दलील-(37.) अल्लामा गुलाम रसूल सईदी رحمة الله عليه (विसाल-1437 हिजरी) की किताब: नेअमतुल बारी फी शरह सहीह अल बुखारी, जिल्द-3, सफा- 585, किताब अल-जनाईज़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान फरमाते है, हज़रत जिबरईल عليه السلام ने फरिश्तो के साथ हज़रत आदम عليه السلام की नमाज़े जनाज़ा पढाई, और **हज़रत आदम عليه السلام की क़ब्र-मुबारक (ऊंट के) कोहान के मिस्ल बनाई और उनकी क़ब्र-मुबारक पर खैमा नसब किया.**

दलील-(38.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 98, अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

जब हज़रत नूह ﷵ के ज़माने में तूफ़ान का वक़्त करीब आया तो हज़रत नूह ﷵ ने अम्मा हव्वा ﷵ और हज़रत आदम ﷵ के जिस्मे-पाक़ को उठा कर (तूफ़ान थमने के बाद) **<u>बैतूल-मुक़द्दस में</u>** दफन कर दिया था. ईस रिवायत को अल्लामा इब्ने ज़रीर ﷶ ने नक़ल फ़रमाया है.

अल्लामा इब्ने असाकीर ﷶ बाज़ अहले किताब से रिवायत नक़ल फरमाते है के, बैतूल-मुक़द्दस में हज़रत आदम ﷵ का सर मुबारक **<u>मस्जिदे-इब्राहिमी के पास</u>** है और पाओं (पैर) **<u>बैतूल-मुक़द्दस की चट्टान (मस्जिदे सखरा) के पास</u>** है.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(29.) नबी नूह ﷵ

दलील-(39.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 120, अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

अल्लामा इब्ने ज़रीर ﷶ और अल्लामा अल-अज़रकी ﷶ अब्दुल-रहमान बिन साबित ﷛ और दुसरे ताबईन से रिवायत करते है के, **<u>हज़रत नूह ﷵ की क़ब्र-मुबारक मस्जिदे हराम (मक्का) में है</u>**. और ये बात अक्सर उन तारिख लिखने वालो अक़वाल के मुकाबले में ज्यादा सही और साबित है जो कहते है के बक़ा शेहेर जो आज कल (यानि 774 हिजरी के दौर में) "**<u>कर्क नूह</u>**" के नाम से मशहूर है वहां हज़रत नूह ﷵ की क़ब्र-मुबारक है. और इसी वजह से वहां **<u>(क़ब्र-मुबारक के पास) एक मस्जिद तामीर की हुई है</u>**.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(30.) नबी हूद ﷵ

दलील-(40.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 130, अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी-तालिब ﷛ से हज़रत हूद ﷵ की क़ब्रे-अतहर की सिफात मरवी है उनहीं में से ये भी है के, हज़रत हूद ﷵ यमन के इलाके में रहे. दुसरे बाज़ लोगों ने ज़िक्र किया है के वह दमिश्क में है. और **<u>दमिश्क की जामा मस्जिद में किबले की तरफ दिवार के इहाते में एक जगह है. बाज़ लोगों के ख्याल के मुताबिक वहीं हज़रत हूद ﷵ क़ब्र-मुबारक है</u>**.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(31.) नबी इब्राहीम खलीलुल्लाह ﷵ| उनकी जव्जह सैयदा सारा बिन्ते हारान ﷵ| नबी इसहाक बिन इब्राहीम ﷵ| उनकी जव्जह सैयदा रफीक़ा बिन्ते बतवाईल ﷵ| ऐयश बिन इसहाक ﷵ| नबी याक़ूब बिन इसहाक ﷵ| याक़ूब ﷵ की जव्जह सैयदा लीया बिन्ते लाबान ﷵ

दलील-(41.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 174, 175, 197, 220, अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

फिर सरज़मीने किनान में हबरून बस्ती में **<u>सैयदा सारा बिन्ते हारान</u>** ﷵ हज़रत इब्राहीम ﷵ से पेहले वफात पा गई. और उस वक़्त सैयदा सारा ﷵ की उम्र **<u>127 साल</u>** थी. और ये अहले-किताब के मुताबिक है. और सैयदा सारा ﷵ की वफात पर हज़रत इब्राहीम ﷵ

को बड़ा हुज़्न व मलाल हुवा. और सोगवारी की और **<u>बनी हैस क़बीले के एक शक्श अफ़रदन बिन सहर हय्सी से एक ज़मीन 400 दीनार में खरीदी. (जिसमे एक गार थी) और वहां (उस गार में) उनको दफन फ़रमाया</u>**.

फिर **<u>हज़रत इब्राहीम</u>** عليه السلام बीमार पढ गए. और **<u>175 साल</u>** की उम्र वफात पा गए. और उसी मज़कूरा जमीन में मद्फून हुए जो हबरून अल-हय्सी बस्ती में है (जिसे आप ने खरीदी थी). और अफरून अल-हय्सी के खेतो के पास **<u>उनकी बीवी सैयदा सारा عليها السلام के बिलकुल पड़ोस में दफन किए गए</u>**. और उनके कफ़न दफ़न का एहतमाम उनके दोनों पयगंबर बेटो हज़रत इस्माइल عليه السلام और हज़रत इसहाक عليه السلام ने फ़रमाया.

और फिर हज़रत याक़ूब बिन इसहाक عليه السلام अपने वालिद हज़रत इसहाक बिन इब्राहीम عليه السلام के पास आए. और हबरून बस्ती में रहने लगे. हबरून जो सरज़मीने किनान में है. और यहीं हज़रत इब्राहीम عليه السلام आराम फरमा थे. **<u>हज़रत इसहाक बिन इब्राहीम</u>** <u>عليه السلام बीमार हुए और **180 साल** की उम्र मुबारक में वफ़ात पा गए</u>. और उनको उनके दो बेटे हज़रत ऐयश और हज़रत याकूब عليه السلام ने अपने दादा नबी **<u>हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह عليه السلام के पास उस जगह दफन किया जो जगह हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने पेहले खरीदी थी</u>.**

फिर जब **<u>हज़रत याक़ूब बिन इसहाक عليه السلام ने वफात फरमाई</u>** और हज़रत युसूफ बिन याक़ूब عليه السلام ने उत्बा को हुक्म दिया तो उन्होंने वालिद माजिद हज़रत याक़ूब عليه السلام के जिस्मे अतहर पर खुसबू वगैरा लगाई. फिर हज़रत युसूफ عليه السلام मिस्र के बादशाह से इजाज़त लेकर अपने वालिद को दफन करने के लिए शाम की तरफ चले ता के वहां अपने बुज़ुर्गों की मुबारक क़बरों के पास दफन करें. और हज़रत युसूफ عليه السلام के साथ मिस्र के शुयूख व अकाबिर भी चले. <u>जब हबरून पोहोंचे तो मगारह मक़ाम पर **हज़रत याक़ूब عليه السلام को दफन कर दिया जिस मगारह मक़ाम को हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने अफ़रदन बिन सहर हय्सी से ख़रीदा था**</u>.

<u>नबी हज़रत इब्राहीम عليه السلام , हज़रत इसहाक عليه السلام , हज़रत याक़ूब عليه السلام , तमाम की मुबारक कबरें उस ईमारत (दरगाह/मज़ार-शरीफ़) में है जिस को नबी हज़रत सुलैमान बिन दावूद عليه السلام ने हबरून इलाके में बनाया था</u>.

और हबरून शहर आज तक "खलील" के नाम से मशहूर है. और ये सारी बात बिलकुल मुस्तनद और तवातुर के साथ जमाअत दर जमाअत बनी-इसराइल के ज़माने से हम तक चली आई है. के **<u>तहक़ीक़ के साथ मालूम हुवा है के हज़रत इब्राहीम عليه السلام की क़ब्र-मुबारक खलील शहर में ही है</u>**.
हाफिज इब्ने कसीर आगे फरमाते है: बाक़ी ईस शहर में कोंसी जगह क़ब्र-मुबारक है ईस के तय करने में कोई महफ़ूज़ सहीह मुस्तनद खबर नहीं है **<u>ईस लिए शहर अल खलील के पुरे इलाक़े का लिहाज़ करना चाहिए. और पूरा पूरा एहतराम करना चाहिए. और ईस इलाक़े को खोदना या खेती वगैरा करना सहीह मालूम नहीं होता क्या पता हज़रत इब्राहीम عليه السلام की क़ब्र-मुबारक या किसी और नबी की क़ब्र-मुबारक ईस ज़मीन के निचे हो</u>**.

<u>[आज 1441 हिजरी में हाफिज इब्ने कसीर का नाम लेकर लोग झूट फैला रहे है, जब की इब्ने कसीर के कोल के मुताबिक जिस जगह मुबारक कबरें हो उस ज़मीन का इतना एहतराम और लिहाज़ करो के अगर क़ब्र मुबारक जहाँ है वो निशान भी मिट जाए फिर भी उस ज़मीन को खोदने या खेती वगैरा करने से परहेज़ करो. ईस रिवायत को अल बिदाया वन निहाया में जमा करने का इब्ने कसीर का मक्सद यही होगा के, मुबारक क़बरों के निशान मिट चुके हो और अगर कोई क़ब्र को खोल दे और एय्से किसी अमल से क़ब्र में आराम फरमा रहे बुज़ुर्ग को तकलीफ़ ना हो. ईस लिए मुबारक क़बरों के निशान बाकि रहे ईस तरह उनको हिफाजत करने के लिए कोई अमल करना भी सहीह है. और याद रहे अगर इल्म हो के किसी जगह पेहले कभी मोमिनीन की कबरें थी और आज निशान भी नहीं तो वैसी जगहों का अदब और एहतराम करना लाजिम है. उन जगहों को मिटा कर उनपर कोई मस्जिद या ईमारत बनाना हरगिज़ जाईज़ नहीं.]</u>

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(32.) सैयदा राहील बिन्ते लाबान عليها السلام नबी याक़ूब की जव्जह عليه السلام

दलील-(42.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 197 अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

फिर सैयदा राहील عليها السلام जो नबी हज़रत युसूफ عليه السلام की वालिदा है, उनको अल्लाह तआला ने दोबारा अवलाद से नवाज़ा और उन्हें एक लड़का यानि हज़रत बिन्यामीन عليه السلام पैदा हुवे. लेकिन उन्हीं अय्याम में ही सैयदा राहील عليها السلام की वफात हो गई. और नबी हज़रत याक़ूब عليه السلام ने उनको अफरास में बैतूलहम के अंदर दफन कर दिया. और **सैयदा राहील عليها السلام की मुबारक क़ब्र पर बतौर निशानी के एक (इतना बड़ा मज़बूत) पत्थर रख दिया जो उस दौर से लेकर आज तक (774 हिजरी तक) सैयदा राहील عليها السلام की क़ब्र-मुबारक पर है**.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(33.) नबी युसूफ बिन याक़ूब عليه السلام

दलील-(43.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब:अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 220 अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

फिर नबी हज़रत युसूफ عليه السلام का वक्ते वफात भी करीब आया तो आप عليه السلام ने भी वसीयत की के, मुझे भी अपने आबा (बुजुर्गों) के साथ दफन किया जाए. तो मिस्र के लोगों ने हजरत युसूफ عليه السلام के जिसमे पाक़ को खुसबू वगैरा लगाई. और बाकि तमाम अमल कर के एक ताबूत में रख कर (किसी वजह से) वहीँ मिस्र में दफन कर दिया.

[नबी हज़रत युसूफ बिन याक़ूब عليه السلام के विसाल के तकरीबन 400 साल बाद नबी हज़रत मूसा बिन इमरान बिन यशर बिन क़ाहिस बिन लावी बिन नबी याक़ूब عليه السلام का ज़माना आया]

हाफिज इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है, **नबी हज़रत मूसा عليه السلام के ज़माने में हज़रत मूसा عليه السلام ने हज़रत युसूफ عليه السلام के जिस्मे पाक़ को [तक़रीबन 400 साल के बाद] मिस्र से निकाल कर बैतूल-मुक़द्दस में ले कर गए और उनके आबा (बुजुर्गों) के साथ दफन फ़रमाया**. और हज़रत युसूफ عليه السلام की उम्र मुबारक 110 साल रही.

[1441 हिजरी में कुछ लोग ये अकीदा रखते हे के अंबिया के जिस्म भी मिट्टी खा जाती या सड-गल जाते है लेकिन यहाँ इब्ने कसीर की जमा की हुई रिवायत के मुताबिक 400 साल के बाद भी नबी का जिस्मे पाक़ सलामत रहा.]

दलील-(44.) इमाम अल-तबरानी رحمه الله (विसाल-360 हिजरी) की किताब: अल-माजूम अल-अवसत, जिल्द-7, सफा- 376, हदीस नं-7767

मुकम्मल **सहीह सनद के साथ** इमाम तबरानी رحمه الله अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली رضي الله عنه से रिवायत बयान फरमाते है, नबी-ऐ-करीम ﷺ से जब भी कोई चीज मांगी गई के [या रसूल-अल्लाह ﷺ (अल-मदद) मदद फरमाइये] तो आप ﷺ ने उस सवाल (मदद मांगने) को पूरा फरमा कर कहा, हाँ ! और जब कभी वह काम करने का इरादा न हुवा तो खामोश रहे. आप ﷺ किसी भी शय के बारे में ना नहीं कहते. एक देहाती शक्श आया. उसने आप ﷺ से सवाल किया [या रसूल-अल्लाह ﷺ मदद फरमाइये]. आप ﷺ खामोश रहे (ना नहीं कहा). उसने दूसरी बार फिर माँगा [या रसूल-अल्लाह ﷺ मदद फरमाइये]

तब भी आप खामोश रहे. उसने तीसरी बार फिर सवाल किया [या रसूल-अल्लाह ﷺ मदद फरमाइये] तब आप ﷺ ने उसे एय्से अंदाज़ में फ़रमाया, **"एय बदद् ! मांग जो चाहता है !"** **हम तमाम सहाबा को उस देहाती पर रश्क आया तो हमने अपने दिल में कहा, अभी जन्नत मांगेगा और अता फरमा दी जाए** लेकिन उस देहाती अरबी ने कहा, "एक सवारी इनायत फरमाइये!" आप ﷺ ने उसे फ़रमाया, "वो तुझे मिल गई. और मांग !" उसने जादेराह माँगा. तो आप ﷺ ने फ़रमाया, "वह भी तेरा हुवा." देहाती वो लेकर वहां से चल दिया. उस देहाती अरबी पर हम सब को बड़ा तआज्जुब हुवा.

फिर नबी-ऐ-करीम ﷺ ने फ़रमाया, ईस बदद् और बनी-इसराइल की बुढ़िया के सवाल (मुराद मांगने) में कितना फर्क है!

फिर फ़रमाया, जब हज़रत मूसा عليه السلام को दरिया ऐ नील पार करने का हुक्म दिया गया. (दरिया के रास्ता देने के बाद जब) आप عليه السلام दरिया के बनाए हुए रास्ते में उतरे और सवारियों को आगे बढ़ने के लिए मारा. लेकिन सवारियां उल्टा वापस लोट पड़ी. हज़रत मूसा عليه السلام ने अर्ज़ की, "एय अल्लाह ! क्या माज़रा है?" हुक्म हुवा, एय मूसा عليه السلام आप हज़रत युसूफ عليه السلام की क़ब्र-मुबारक के पास है. उनके जिस्मे पाक़ को उठा कर अपने साथ ले चलो. जबकी तब हाल ये था के हज़रत युसूफ عليه السلام की क़ब्र मुबारक ज़मीन के बराबर हो चुकी थी. हज़रत मूसा عليه السلام ने फ़रमाया, (जब तक अल्लाह की अता ना हो) वो नहीं जानते के हज़रत युसूफ عليه السلام की क़ब्र मुबारक कहाँ है? लोगों ने आपस में निदा दी, तुम में से कोई है जिसको मालूम हो के हज़रत युसूफ عليه السلام की क़ब्र मुबारक कहाँ है. कहा, बनी-इसराइल की एक बुढ़िया है हो सक्ता है वह जानती हो. हज़रत मूसा عليه السلام ने उस बुढ़िया की तरफ कासिद भेज कर फ़रमाया, क्या आप जानती हो के हज़रत युसूफ عليه السلام की कब्र मुबारक कहाँ है? उसने कहा, हाँ ! हज़रत मूसा عليه السلام ने फ़रमाया, मेरी रहनुमाई करो ! उस बुढ़िया ने अर्ज़ की, नहीं ! **क़सम है मुझे जब तक आप عليه السلام मेरा सवाल (मेरी मुराद को) पूरा न करें.** हजरत मूसा عليه السلام ने फ़रमाया, तेरा सवाल जरूर पूरा करूँगा. **बुढ़िया ने अर्ज़ की, मेरा आप عليه السلام से सवाल (मुराद) यह है के में जन्नत में आप عليه السلام के साथ रहूँ और उसी दर्जे में रहूँ जिस दर्जे में आप عليه السلام हो.** हजरत मूसा عليه السلام ने फ़रमाया, बस जन्नत में रहने का सवाल करो. (बाकि बात यानि मेरे बराबर दर्जे में रहने की बात को छोड दो.) **बुढ़िया ने अर्ज़ की, नहीं ! क़सम बखुदा ! में जन्नत में आप عليه السلام का साथ मांगती हूँ.** हज़रत मूसा عليه السلام मुसलसल उसके सवाल को रद्द करते रहे. तब **अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा عليه السلام की तरफ वही फरमाई, एय मूसा ! उसे दे दो जो वो मांगती है. उसमें आप का कुछ कम नहीं होंगा.** हजरत मूसा عليه السلام ने उस बुढ़िया को जन्नत में अपना साथ दे दिया. फिर उस बुढ़िया ने हज़रत युसूफ عليه السلام की क़ब्र मुबारक की रहनुमाई की. आप عليه السلام ने हज़रत युसूफ عليه السلام के जिस्मे पाक़ को वहां से निकाला. और दरिया ऐ नील को पार कर गए. अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली رضي الله عنه से ईस हदीस को शिर्फ़ इसी सनद से रिवायत किया जाता है.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(34.) नबी दानियाल عليه السلام और नबी युसूफ عليه السلام

दलील-(45.) इमाम अल-क़ुरतुबी رحمه الله (विसाल-671 हिजरी) की किताब: अल-जामी अल एहकाम अल-क़ुरान अलमारूफ़ तफसीर ऐ क़ुरतुबी, जिल्द-23, सफा- 244, सुरह अल-कहफ़, आयत नं-21

हज़रत इमाम अल-क़ुरतुबी رحمه الله रिवायत फरमाते है, **ईस तरह ताबूत में दफन करना जाईज़ है. खास तौर पर जब क़ब्र नर्म ज़मीन में हो. और रिवायत है के, नबी हज़रत दानियाल عليه السلام पत्थर के ताबूत में दफन हुए.**

और नबी हज़रत युसूफ عليه السلام ने वसीयत फरमाई के उनके लिए सीसे का ताबूत बनाया जाए. और उन्हें पानी में डाल दिया जाए. ईस खौफ से के कहीं उनकी इबादत ना की जाए. **और फिर हज़रत युसूफ عليه السلام का जिस्मे पाक़ हज़रत मूसा عليه السلام के ज़माने (तक़रीबन 400 साल) तक उसी हाल में (दरिया ऐ नील में) सलामत रहा.** और फिर एक बुढ़िया के क़ब्र की जगह की रहनुमाई करने के बाद **हज़रत मूसा عليه السلام ने हज़रत युसूफ عليه السلام के जिस्मे पाक़ को मिस्र से उठाया और बैतुल-मुक़द्दस ला कर हज़रत इसहाक عليه السلام के घर में दफन कर दिया.**

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(35.) नबी इस्माइल बिन इब्राहीम खलीलुल्लाह और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा मिसरिया

दलील-(46.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब: अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-1, सफा- 193, अंबिया अलय्हिस-सलाम के वाकियात

हाफिज इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है: और **अल्लाह के नबी हज़रत इस्माइल मकामे हिज्र में अपनी वालिदा सैयदा हाजरा के पास मद्फ़ून हुए.**

[**हज़रत इस्माइल और सैयदा हाजरा उस दौर में काबतुल्लाह के अंदर मद्फ़ून हुए थे** जो हिस्सा आज काबतुल्लाह के बाहर काबा की छत से जुडी पानी की नली के बिलकुल निचे के हिस्से में जिसे आज मकामे अल-हिज्र या हतीम के अंदर का हिस्सा कहते है.]

और वफात के वक्त उनकी उम्र मुबारक 137 साल थी. हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ से मरवी है के, **हज़रत इस्माइल ने बारगाहे खुदावन्दी में मक्का की गर्मी की शिकायत की, तो अल्लाह ने हज़रत इस्माइल को वही फरमाई के जिस जगह आप मद्फ़ून होंगे वहां में आप के लिए जन्नत का दरवाजा खोल दूंगा. जिस से क़यामत तक आप पर हवा आती रहेगी.**

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(36.) नबी इस्माइल की बेटियां और 70 या 90 अंबिया

दलील-(47.) इमाम अब्दुल-रज्ज़ाक सिनानी (विसाल-211 हिजरी) की किताब: अल-मुसन्नफ़ अल अब्दुल-रज्ज़ाक, जिल्द-5, सफा- 119, हदीस नं- 9128 से 9130, बाब: वो जिन्हें हजरे अस्वद और मकामे इब्राहीम के दरमियान दफन किया गया

हज़रत क़ाब से हदीस रिवायत फरमाते है के, हजरत इस्माइल को आबे जम-जम, हजरे अस्वद और मकामे इब्राहीम के दरमियान दफन किया गया था.

हज़रत इब्ने साबित हदीस रिवायत फरमाते है के, में हज़रत अब्दुल्लाह बिन दमरह सलूली के साथ तवाफ़ ऐ काबतुल्लाह में था. जब हम हजरे अस्वद और मकामे इब्राहीम के दरमियान पोहोंचे तो उन्होंने चंद लोगों का ज़िक्र किया. यहाँ तक के हज़रत अब्दुल्लाह ने नबी हजरत इस्माइल की क़ब्र मुबारक का ज़िक्र किया के हजरत इस्माइल यहाँ दफ़न हुए है. और **फिर उन्होंने 70 या 90 अंबिया का ज़िक्र किया के वह यहाँ दफ़न हुए है.**

हज़रत इमाम ज़ुहरी हदीस रिवायत फरमाते है, [काबतुल्लाह की दोबारा तामीर के दौरान खुदाई के वक़्त कुछ पत्थर से बनी हुई कबरें देखी तब] हजरत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया, ये **पत्थर के टीले नबी हज़रत इस्माइल की बेटियों में से चंद की मुबारक कबरें है. ये एक ऊँची जगह है.** जो बनू सहम के दरवाज़े के मद्दे मुक़ाबिल हजरे अस्वद वाली तरफ में थी.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(37.) नबी मूसा कलीमुल्लाह

दलील-(48.) इमाम मुस्लिम (विसाल-261 हिजरी) की किताब: सहीह मुस्लिम अल-मुसनद अल-सहीह, जिल्द-6, सफा- 206, हदीस नं- 2449 से 2452, किताब अल-मनाकिब, बाब: मनाकिबे मूसा

हज़रत अबु-हुरैरा हदीस रिवायत फरमाते है के, मलिकुल-मौत को हज़रत मूसा के पास भेजा गया. जब मलिकुल-मौत उनके पास आए तो हजरत मूसा ने उन्हें मुक्का मार दिया. फ़रिश्ते मलिकुल-मौत की आंख बाहर आ गई.

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'a SHAIKH. MOHAMMED. SHAKIL. WhatsApp: +91-76986.79976 Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE Surat, Gujarat, India.

मलिकुल-मौत वापस अल्लाह की बारगाह में गए और अर्ज़ की. एय अल्लाह, तूने मुझे एय्से शक्श के पास भेजा जो मरना ही नहीं चाहता. हज़रत अबु-हुरैरा رضي الله عنه फरमाते है, अल्लाह ने मलिकुल-मौत की आंख वापस दुरुस्त फरमा दी. और हुक्म फ़रमाया, उनके पास दोबारा जाओ और उनसे कहो के वह अपने हाथ किसी बैल के पुश्त पर रख दे. उनके हाथ के निचे बैल के जितने बाल होंगे उन में से हर एक बाल के एवज़ में एक साल की ज़िंदगी उन्हें अत फरमाई जाएगी. फ़रिश्ते ने ये पैगाम हज़रत मूसा عليه السلام तक पोहोंचाया. तो उन्होंने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ की, एय मेरे परवरदिगार ! इतने सालो की ज़िंदगी के बाद क्या होगा? हुक्म फ़रमाया, फिर मौत होगी. तो हज़रत मूसा عليه السلام ने अर्ज़ की, फिर अभी ही ठीक है. हज़रत मूसा عليه السلام ने अल्लाह से ये दुआ की अल्लाह उन्हें अर्जे मुक़द्दस (बैतुल मुक़द्दस) से इतना करीब कर दे के, वहां से अर्जे-मुक़द्दस तक पत्थर फेंका जा सके. नबी-ऐ-करीम ﷺ फरमाते है, अगर में वहां मौजूद होता तो आम गुज़रगाह (रास्ते) के एक तरफ सुर्ख (लाल) टीले के निचे उनकी क़ब्र मुबारक तुम्हें दिखता.

हज़रत अबु-हुरैरा رضي الله عنه हदीस रिवायत फरमाते है के, नबी-ऐ-करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, मलिकुल-मौत के फ़रिश्ते हज़रत मूसा عليه السلام की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की, अपने परवरदिगार की बारगाह में चलिए. हज़रत मूसा عليه السلام ने उस फ़रिश्ते की आंख पर तमांचा मार के आंख बाहर निकाल दी. वह फ़रिश्ता अल्लाह तआला की बारगाह में वापस गया और अर्ज़ की, एक अल्लाह तूने मुझे एय्से बन्दे के पास भेजा है जो मरना ही नहीं चाहता. उस बन्दे ने मेरी आंख बाहर निकाल दी है. अल्लाह तआला ने उसकी आंख दुरुस्त फरमाई. और फ़रमाया, मेरे बन्दे के पास वापस जाओ और उस सी कहो, तुम जिन्दा रहना कहते हो? अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो अपने हाथ किसी बैल की पुश्त पर रखो! तुमहारे हाथ के निचे जितने बैल के बाल आएँगे तुम उतने साल ज़िन्दा रह सकोगे. हज़रत मूसा عليه السلام को जब ये पैगाम मिला तो उन्होंने अर्ज़ की, उतने साल गुजरने के बाद फिर क्या होगा? फ़रिश्ते में कहा, फिर आप को मौत क़बूल करनी होगी. तो हज़रत मूसा ने अर्ज़ की, फिर अभी ही ठीक है. फिर हज़रत मूसा عليه السلام ने दुआ की, एय मेरे परवरदिगार! मुझे अर्जे मुक़द्दस के इतने करीब मौत अता फरमा के मेरी क़ब्र से अर्जे मुक़द्दस में पत्थर फेंका जा सके.

नबी-ऐ-करीम ﷺ फरमाते है, अल्लाह की क़सम ! अगर में वहां होता तो में तुम्हें हज़रत मूसा عليه السلام की क़ब्र मुबारक दिखता, जो आम रास्ते के एक तरफ सुर्ख टीले के पास है.

ये दोनों अहादीस सहीह मुस्लिम के अलावा: सहीह बुखारी शरीफ़ हदीस-1274 | सुनन अल-नसाई हदीस-2089 | मुसनद अहमद बिन हंबल हदीस-7634 और सहीह इब्ने हिब्बान हदीस-6223 में भी रिवायत की हुई है.

हज़रत अनस बिन मलिक رضي الله عنه हदीस रिवायत फरमाते है के, नबी-ऐ-करीम ﷺ का ये फरमान नक़ल करते है के, **मेराज की रात मेरा गुज़र हज़रत मूसा عليه السلام की क़ब्र मुबारक के पास से हुवा जो सुर्ख टीले के पास है.** **हज़रत मूसा عليه السلام अपनी क़ब्र मुबारक में खड़े हो कर नमाज़ अदा कर रहे थे.**

हज़रत अनस बिन मलिक رضي الله عنه हदीस रिवायत फरमाते है के, नबी-ऐ-करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया है, में **हज़रत मूसा عليه السلام की क़ब्र मुबारक के पास से गुज़रा वह अपनी क़ब्र मुबारक में खड़े हो कर नमाज़ अदा कर रहे थे.** **उस रात मुझे मेराज कराइ गई.**

ऊपर ज़िक्र की हुई दोनों अहादीस सहीह मुस्लिम के अलावा: सुनन अल-नसाई हदीस-1631 | मुसनद अहमद बिन हंबल हदीस-12526 | सहीह इब्ने हिब्बान हदीस-50 | मुसनद अबु-याला हदीस-3325 और मआजूम अल-कबीर अल-तबरानी हदीस-11207 में भी रिवायत की हुई है.

[किसी को शक ना रहे ईस लिए पहले ही हमने तमाम किताबों के हवाले दे दिए है, जिनमे ये मुकम्मल सहीह सनद से सहीह हदीस है. रसूल-अल्लाह ﷺ बुराक़ पर थे, बुराक़ हवा से भी तेज़ रफ़्तार से उड़ रहा था. इतनी तेज़ रफ़्तार से आसमान से उड़ते हुए रसूल-अल्लाह ﷺ ने ज़मीन के अंदर क़ब्र मुबारक में हज़रत मूसा عليه السلام को खड़े हो कर नमाज़ अदा करते हुए देखा. यानि अल्लाह तआला अपने मेहबूब बन्दों को इतनी ताकत देता है के वो आम बन्दों से ज्यादा देख सकते है. और अल्लाह अपने मेहबूब बन्दों को इतना इख्तियार भी देता है के वो दुनयावी ज़िंदगी से मौत आने के बाद भी क़ब्र में दोबारा खड़े होते भी है और अल्लाह की इबादत भी करते है. कोई भी आम बंदा फरिश्तो को देख तक नहीं सक्ता और अल्लाह के मेहबूब बन्दे फरिश्तो को देखते भी है, गुफ्तगू भी करते है और नूर से बने फ़रिश्ते को मारने की कुव्वत भी रखते है. अल्लाह ने अपने मेहबूब बंदो को फरिश्तो के नूर से भी अफज़ल ज़ात से खल्क फ़रमाया है.]

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'at
SHAIKH MOHAMMED SHAKIL
WhatsApp: +91-76986-79976
Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima
MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com
FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE
Surat, Gujarat, India.

फ़स्ल-(4.) रसूल-अल्लाह ﷺ की बसरी विलादत से पेहले के दरगाह/मज़ारात

बाब-(38.) असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को ग़ार में दफन किया गया, सुरह कहफ़ मक्का में हिजरत से पेहले नाज़िल हुई, हिजरत के 32 साल बाद सहाबा رضي الله عنه ने असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की वही सूरते-हाल को देखा जो क़ुरान में नाज़िल हुई

दलील-(49.) इमाम अल-क़ुरतुबी رحمة الله عليه (विसाल-671 हिजरी) की किताब: अल-जामी अल एहकाम अल-क़ुरान अलमारूफ़ तफसीर ऐ क़ुरतुबी, जिल्द-23, सफा- 240 से 242, सुरह अल-कहफ़, आयत नं-21

हज़रत इमाम अल-क़ुरतुबी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है, बादशाह और उसके लोग ये जान ले के क़यामत हक़ है. और **मरने के बाद दोबारह ज़िन्दा किया जाना (यानि बेअसत) भी हक़ है**. [जैसे असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को उन लोगों के सामने अल्लाह तआला ने 309 साल की नींद से बेदार फ़रमाया] बिला शुबा किसी एक बन्दे के खबर देने से फिर बादशाह और लोगों ने **ग़ार में दाखिल होने की कोशिश की तो वो लोग ग़ज़बे इलाही से डर गए. और बाहर आ गए.** फिर बादशाह ने कहा, **तुम लोग उन असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की ग़ार पर बतौरे यादगार एक ईमारत तामीर कर दो. और जो लोग उन असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه के दीन (मज़हब) पर थे उन्होंने कहा, उन पर मस्जिद बना दो.** और एक काफ़िर गिरोह ने कहा, हम इन्की ग़ार पर अपनी इबादतगाह या मेहमानखाना बना लेते है. **तो मुसलमानों ने उन्हें रोक दिया. और कहा, हम उनकी ग़ार पर ज़रूर मस्जिद बनाएगे.**

इमाम अल-क़ुरतुबी رحمة الله عليه फरमाते है, और ये भी रिवायत है के, कुछ लोग तामीर के लिए ग़ार को बंद करने के लिए गए और उन लोगों ने असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه का ये हाल पाया के वो गायब कर दिए गए है.

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से रिवायत है के, **अल्लाह तआला ने उस वक़्त लोगों पर असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه के असर और निशान को औजल कर दिया. और असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को लोगों से छुपा दिया. उसके बाद इसी लिए बादशाह ने ईमारत बनाने के लिए कहा ता के वो ईमारत असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की निशानी हो जाए**.

और ये भी रिवायत है के, उसके बाद बादशाह ने इरादा किया के वह असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को सोने के संदूक में दफन करें. तो बादशाह को ख्वाब की हालत में ये निदा आई, तूने हमें सोने के संदूक में दफन करने का इरादा किया है. लेकिन अब तु ईस तरह ना कर. क्यों की हम मिट्टी से पैदा किए गए है. और उसी तरफ हम लोट रहे है. **अब तु हमें इसी हाल पर छोड़ दे जिस हाल में हम अभी है.**

दलील-(50.) इमाम एहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी رحمة الله عليه (विसाल-671 हिजरी) की किताब: कन्ज़ुल इमान तरजुमा ऐ क़ुरान, जिल्द-2, सफा- 851, सुरह अल-कहफ़, आयत नं- 21

अल्लाह-तआला इरशाद फरमाता है, जब वह (लोग) उनके मुआमले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्होंने कहा **उन पर एक इमारत बना दो** उन (असहाबे-कहफ़) का रब उन्हें खूब जानता है. वह लोग (इमान वाले) जो उनके मुआमले में झित गए कहने लगे, **हम उन पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएँगे.**

[मुफस्सिरीन ने ईस आयत की तफसीर में जो फ़रमाया है उन तमाम का मुख्तसर खुलासा ये है: किस सूरते-हाल में क़बरों पर मस्जिद बनाना नाजाईज़ फ़रमाया है? उसमे दो खुलासे है. पहला खुलासा: मोमिनो की क़बरों पर ईस तरह मस्जिद बनाई जाए के काबतुल्लाह की तरफ सजदा करते वक़्त बिलकुल क़ब्र सामने हो और सजदा क़ब्र को हो रहा हो. लेकिन एय्सी सूरते-हाल में मस्जिद हमें पूरी दुन्या में कहीं नहीं दिखाई देती. बलकी मस्जिदे-नबवी के करीब जैसे मुबारक-क़बरों के होने से मस्जिद की हद को बढ़ाते वक़्त मुबारक-कबरें मस्जिद में आगई तो उन क़बरों को दिवार से इहता किया गया. बिलकुल इसी तरह पूरी दुन्य में जिन मस्जिदों में मोमिनो की कबरें है, उनका हाल किसी दौर में ये था की मस्जिद जिस बुज़ुर्गाने-दीन सहाबी, ताबईने सहाबी या तबा-ताबईने सहाबी या वलीअल्लाह ने तामीर की थी उस बुज़ुर्ग का इंतकाल होने पर उनहोंने तामीर की हुई उसी मस्जिद के करीब उन्हें दफन फ़रमाया जाता और दौरे-ज़माना गुजरने पर मस्जिद को जब बड़ा किया जाता तो बिलकुल मस्जिदे-नबवी की तरह कबरें मस्जिद में आ गई. एय्से हाल में उसी तरह क़बरों को दिवार का इहता किया गया है. या फिर एय्सी सूरते-हाल है के कोई बंदा नमाज़ में काबतुल्लाह की तरफ सजदा करे तो क़ब्र को सजदा नहीं होता. जब क़बरों को सजदा नहीं होता फिर कोई मसला ही नहीं. रही बात क़बरों पर छत तामीर करने की तो ईस मुकम्मल किताब में वो तमाम अहादीस जमा है जिनसे ये साबित होता है के मोमिनो की क़ब्र के निशान बरक़रार रखने के तमाम अमल करना जाईज़ है.

<u>दूसरा खुलासा: मोमिनो की क़बरों या सहाबी, ताबईने सहाबी या तबा-ताबईने सहाबी या वलीअल्लाह की क़बरों को मिटा कर उनके बिलकुल ऊपर मस्जिद तामीर करना, या उन क़बरों के वहां होने के पुख्ता दलाइल है फिर भी उन मुबारक क़बरों की जगह को मिटा कर बिलकुल उन क़बरों के ऊपर मस्जिद बनाई जाए एय्सी मस्जिदें जहाँ जहाँ तामीर की हुई है और वहां जो नमाज़े हो रही हे उनका हाल सहीह बुखारी और तमाम सहीह अहादीस की किताबों में जमा ये तमाम अहादीस हुक्म फरमाती है, मोमिनो की क़बरों पर पैर रखना जाईज़ नहीं. मोमिनो की क़बरों पर बेठना जाईज़ नहीं. मोमिनो के कब्रस्तान में चपलें पेहन कर चलना भी जाईज़ नहीं. यहाँ तक की अगर दफ़ना ने के लिए ज़मीन को खोदा और उसमे से किसी मोमिन की हड्डियाँ ज़ाहिर हो जाए तो उन्हें चोट पोहचना भी जाईज़ नहीं. ईन तमाम अहादीस से ये बात ज़ाहिर होती है के असल में दीने इस्लाम में आम मोमिन बन्दे का मक़ाम भी ये है के उसकी मौत के अरसे बाद भी उसकी क़ब्र का एहतराम किया जाना चाहिए. फिर उनका क्या हाल होगा जिन्होंने किसी सहाबी या ताबईने सहाबी या तबा-ताबईने सहाबी या वलीअल्लाह की मुबारक क़बरों को जिस जिस जगह मिटा कर उन क़बरों पर मस्जिदे बनाई गई है. याद रखें ईस मुकम्मल किताब में वो तमाम अहादीस जमा है जिनसे ये साबित होता है के मोमिनो की क़ब्र के निशान बरक़रार रखने के तमाम अमल करना जाईज़ है.</u>

दलील-(49.) इमाम अल-क़ुरतुबी ﷺ (विसाल-671 हिजरी) की किताब: अल-जामी अल एहकाम अल-क़ुरान अलमारूफ़ तफसीर ऐ क़ुरतुबी, जिल्द-23, सफा- 197, सुरह अल-कहफ़, आयत नं-1

हज़रत इमाम अल-क़ुरतुबी ﷺ रिवायत फरमाते है, तमाम मुफस्सिरे क़ुरान के क़ोल के मुताबिक़ **<u>सुरह कहफ़ मक्की है. (हिजरत से पहले मक्का में नाज़िल हुई है)</u>** और ये क़ोल सहीह है.

दलील-(50.) इमाम एहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी ﷺ (विसाल-671 हिजरी) की किताब: कन्ज़ुल इमान तरजुमा ऐ क़ुरान, जिल्द-2, सफा- 848 से 850, सुरह अल-कहफ़, आयत नं-17, 18

<u>[यानि हिजरत से पेहले मक्का में ये आयतें नाजिल हुई, जिनमें अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है]</u> :

और (एय मुखातिब ! [सुनने वाले, सुनो..]) तुम देखोगे धुप को जब सूरज निकलता है, तो **वो (धुप) झुकी रहती है उनकी ग़ार से दाई तरफ.** और जब वो (सूरज) गुरूब होता है, तो **वो (धुप) फिर जाती है उनकी ग़ार से बाई तरफ. हालांकि वह (ग़ार) मैदान में है. <u>ये अल्लाह की निशानियों में से है</u>.**

जिसे अल्लाह ([यकीन करने] इमान लाने की) हिदायत दे वही हिदायत याफ्ता है, और जिसे गुमराह करे तुम हरगिज़ उसके लिए कोई मुरशिद (हिदायत की तरफ ले जाने वाला मददगार) नहीं पाओगे.

और (एय मुखातिब ! [सुनने वाले, सुनो..]) तु उन्हें देखे तो जगता हुवा समझे हालांकि वह सो रहे है. और हम दाई और बाई उनकी करवटें बदलते रहते है. और उनका कुत्ता ग़ार की चोखट पर अपने बाज़ू फेलाए बेठा है.

(एय मुखातिब ! [सुनने वाले, सुनो..]) **<u>अगर तु उन्हें झांक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे. और तेरे दिल में उनके लिए देहशत (डर) भर जाए</u>.**

दलील-(51.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब: अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-8, सफा- 126, 41 से 73 हिजरी के वाकियात

हाफिज इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है: हज़रत लेय्स बिन साद رضي الله عنه बयान फरमाते है, (बान्ज़न्तिनी रूमियों के खिलाफ) गजवा अल-मदीक यानि मदीक अल-कुस्तुन्तुनिया **हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه के ज़माने में <u>32 हिजरी में</u> फतह हुवा था.** और आप ही उस साल लोगों के अमीर थे और हज़रत उस्मान رضي الله عنه ने सारे शाम को हज़रत मुआविया رضي الله عنه के सुपुर्द किया था. ये क़ोल सहीह है.

दलील-(52.) इमाम इब्ने-हजर अल-अश्क़लानी رحمة الله عليه (विसाल-852 हिजरी) की किताब: फ़तह-उल बारी शरह सहीह अल-बुखारी, जिल्द-6, सफा-394

दलील-(53.) इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: अल-दुर्र अल-मन्सूर फी तफसीर अल-मासूर, जिल्द-5, सफा-366

इमाम इब्ने हजर رحمة الله عليه और इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती رحمة الله عليه हदीस बयान फरमाते है:

सनदे सहीह के साथ इमाम इब्ने अबी-शैबा رحمة الله عليه और इमाम इब्ने अल-मुन्ज़िर رحمة الله عليه और इमाम इब्ने अबी-हातिम رحمة الله عليه हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه से और हज़रत मुआविया رضي الله عنه रिवायत फरमाते है के, उन्होंने रूमियों (बान्ज़न्तिनीयों) के खिलाफ गजवा (जंग) अल-मदीक यानि मदीक अल-कुस्तुन्तुनिया की, तब वह तमाम एक ग़ार के पास से गुज़रे. हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने अपनी बात ज़ाहिर की के वो ग़ार असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की है या नहीं ये जानने के लिए **ग़ार के मुंह (दाखिल की जगह) को खोल कर असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को देखें.** हज़रत अब्दुल्लाह बिन इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने फ़रमाया, **आप के लिए ये जाईज़ नहीं है. अल्लाह तआला ने पेहेले ही (क़ुरान ऐ पाक़ में सुरह कहफ़, आयत-18 में) वही फरमा कर आप से बेहतर शख्श को असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को देखने से मना फ़रमाया था. (फिर आपने वो आयात पढ़ी) अगर आप उन्हें झांक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे. और आप के दिल में उनके लिए देहशत (डर) भर जाए.** हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه की बात नहीं सुनी और कुछ लोगों को ग़ार में भेजा, **जैसे ही वह लोग ग़ार में दाखिल हुए, एक शख्त हवा आई और उसने उन तमाम को जला दिया जो ग़ार में गए थे.**

[ग़ार में आराम फरमा अवलिया-अल्लाह के अदब और ताज़ीम बरक़रार रखने के सराईत अल्लाह तआला ने क़ुरान ऐ पाक़ में हिजरत से भी पेहले हुक्म फरमा दिए थे. हिजरत के 32 साल बाद भी सहाबा ने वही मंज़र पाया जो क़ुरान में फ़रमाया है. और बेशक़ क़ुरान ऐ पाक़ हक़ है उसका हर हुक्म हक़ है इसी लिए आज 1441 हिजरी में भी हम क़ुरान ऐ पाक़ में यही फरमान पढ़ते है और बेशक़ आज भी अल्लाह तआला अपने मेहबूब बन्दों की आराम फरमा जगह यानि असहाबे-कहफ رحمة الله عليه की ग़ार की हिफाज़त फरमा रहा है. अल्लाह खुद अपने मेहबूब बन्दों की आराम फरमा जगह की हिफाज़त फरमाता है तो हम जैसे आम बन्दे अगर अल्लाह के मेहबूब बन्दों की आराम फरमा जगह की हिफाज़त के लिए जाईज़ और जरूरी अमल ही करें तब वह बड़ी सआदत की बात होगी. और आज 1441 हिजरी में कुछ लोग “केव ऑफ़ सेवन स्लीपर” (असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की ग़ार) के नाम सी पहचान दे कर कुछ झूटी ग़ार का ज़िक्र करते और खूब फेलाते है. वो लोग क़ुरान ऐ पाक़ में अल्लाह तआला का जो फरमान है उसके खिलाफ और झूट फेला रहे है. ईस में चंद खुलासे है. पहला खुलासा: क़ुरान में फरमान है, उस ग़ार में कोई दाखिल नहीं हो सकता लेकिन वह लोग उसमे दाखिल हो कर बताते है. दूसरा खुलासा: क़ुरान में फरमान है, ग़ार मेदान में है फिर भी उसमे सूरज की रौशनी नहीं जाती क्यों की वह ग़ार अल्लाह की निशानियों में से है. जबकी वह ग़ार मेदनी इलाके में नहीं पथरीले पहाड़ में बताते है. और उसमे रौशनी जाती है. तीसरा खुलासा क़ुरान व हदीस में देखा के बादशाह के लोगों को भी असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه नज़र नहीं आए वह गायब हो चुके थे और बादशाह को ख्वाब में बसारत मिलने के बाद उन्हें दफन करने का ख्याल छोड़ दिया और उसने असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه को उसी हाल में छोड़ कर ग़ार के मुंह को बंद करवा दिया और सहाबा ने ज़िक्र की हुई ग़ार का मुंह भी बंद था उसे खोल कर उसमे कुछ दाखिल हुए जब की. जब की आज बताई जा रही ग़ार खुली है उसका मुंह बंद नहीं और वो लोग तो बकायदा असहाबे-कहफ़ رحمة الله عليه की खुली कब्रें और उन क़बरों में कुछ खुली हुई कबरें जिनमे नज़र आ रही हड्डियाँ भी बताते है जो बिलकुल झूट है. **हमारा ईमान दुनावी दलाइल पर नहीं अल्लाह की पाक़ किताब क़ुरान पर है. ईसमे जो फरमाने इलाही है वही हक़ है.]**

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'at
SHAIKH MOHAMMED SHAKIL
WhatsApp: +91-76986 79976
Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima
MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com
FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE
Surat, Gujarat, India.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(39.) जिन्हें अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ के घर में दफनाया: **अब्दुल-रहमान** बिन औफ़ؓ| **साद** बिन अबी-वक़ासؓ| **अब्दुल्लाह** बिन मसऊदؓ| **खनीस** बिन खिज़ाफ्हؓ| **असद** बिन ज़रारहؓ| **अबु-सुफ्यान** बिन हारिस बिन अब्दुल-मुत्तलिबؓ| **अब्बास** बिन अब्दुल-मुत्तलिबؓ| **अक़ील** बिन अबु-तालिबؓ| **अब्दुल्लाह** बिन ज़ाफर बिन अबु-तालिबؓ| **उम्महातुल-मोमिनीन**ؓ| **अमीरुल-मोमिनीन अली** इब्ने अबु-तालिबؓ| सैयदा **फ़ातिमा ज़ोहरा**ؓ| इमाम **हसन बिन अली**ؓ| इमाम **हुसैन बिन अली**ؓ का सर-मुबारक| इमाम **ज़ैनुलआबिदीन** बिन हुसैनؒ| इमाम **मुहम्मद बाक़र** बिन ज़ैनुलआबिदीनؒ| इमाम **ज़ाफर सादिक़** बिन मुहम्मद बाक़रؒ

[इससे पहले हम सफा-1 से 5 में जमा कर चुके के इन्हें रसूल-अल्लाहﷺ की हयाती बसरी ज़िंदगी में **अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ के घर** में दफनाया था: **उस्मान** बिन मज़ऊनؓ| अलीؓ की वालिदा सैयदा **फ़ातिमा** बिन्ते असदؓ| **इब्राहीम** बिन **रसूल-अल्लाह**ﷺ और सैयदा **रुकैया**, सैयदा **उम्मे-कुल्सुम** व सैयदा **ज़ैनब** बिन्ते **रसूल-अल्लाह**ﷺ]

[सफा-37 पर] इमाम अल-सम्हूदी ؒ फरमाते है**,** मुनासिब ये है के बक़ी में सैयदना इब्राहीम बिन रसूल-अल्लाह ﷺ के मज़ार शरीफ़ की ज़ियारत के दौरान ईन सब पर सलाम पढ़े.

दलील-(54.) इमाम अल-सम्हूदी ؒ (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 129 से 131, 137 से 140

हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस बिन अब्दुलमुत्तलिब ؓ की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने शब्बाह ؒ रिवायत फरमाते है के, हज़रत अब्दुल-अज़ीज़ ؓ बयान फरमाते है, मुझे पता चला के हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ ने हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस बिन अब्दुल-मुत्तलिब ؓ को क़बरों में फिरते (कुछ तलाश करते) देखा. तो फ़रमाया, एय चचा-ज़ाद (चचेरे-भाई) ! क्या बात है के में आप को एय्से फिरता देख रहा हूँ? उन्होंने कहा के, **में अपनी क़ब्र के लिए जगह तलाश करता फिर रहा हूँ. हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ ने हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस ؓ को अपने घर में दाखिल किया. और घर के सहन में क़ब्र खोदने को कहा.** हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस ؓ कुछ देर के लिए क़ब्र के पास बेठे और फिर वापस चले आए. अभी दो दिन भी ना गुज़रे थे के वह फौत हो गए. और **उसी क़ब्र में दफन कर दिए गए.**

हज़रत मौफ्क़ बिन क़दामह ؒ बयान फरमाते है, हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस ؓ के बारे में कहा गया के **उन्होंने अपनी मौत से तीन दिन पेहले खुद अपने हाथ से अपने लिए क़ब्र खोदी**. हज़रत अबु-सुफ्यान बिन हारिस ؓ 20 हिजरी में हज से वापसी पर फौत हो गए और **हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ के घर में दफन किए गए**. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढाई. इमाम अल-सम्हूदी ؒ फरमाते है, ज़ाहिर ये है के **हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ की क़ब्र मुबारक भी इसी शहादतगाह की जगह पर है** और जो आज तक (911 हिजरी में) मज़ारे अक़ील ؓ के नाम से मशहूर है.

इमाम इब्ने नज्जार ؒ रिवायत फरमाते है, अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली ؓ के भाई हज़रत **अक़ील बिन अबु-तालिब ؓ की क़ब्र बक़ी के सुरु में एक गुंबद के निचे है** और उनके **साथ उनके भतीजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ाफर तईयार बिन अबु-तालिब ؓ की क़ब्र है** जो जव्वाद के नाम से मशहूर है.

हज़रत साद बिन अबी-वक़ास ؓ की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने शब्बाह ؒ रिवायत फरमाते है के, हज़रत इब्ने दहकान ؓ बयान फरमाते है, **मुझे हज़रत साद बिन अबी-वक़ास ؓ ने बुलाया तो में उनके साथ बक़ी की तरफ गया. वह मेय्खें (खिलें) लेकर निकले थे. और जब हज़रत अक़ील ؓ के घर के शुमाली मशरिकी कोने की जगह पोहोंचे उस जगह मुझे क़ब्र खोदने को कहा**. मेने क़ब्र खोदना सुरु कर दी. और ज़मीन की गहराई तक खोदी.

फिर जब में ज़मीन के निचले हिस्से तक पोहोंचा तो उन्होंने वहां मेख्खें गाड़ दी. और फ़रमाया, अगर **मे फौत हो जाऊ तो उन्हें बता देना के मुझे यहाँ दफन करें.** ईस लिए हज़रत साद बिन अबी-वक़ास رضي الله عنه जब फौत हो गए तो मेने ये बात उनके लड़के से कही. ईस लिए जब हम जनाज़े को लेकर निकले तो **मैंने उन्हें उस जगह की निशानदही कर दी उन्होंने वो मेख्खें देखी तो उसी जगह क़ब्र तैयार कर के उन्हें दफन कर दिया.**

हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने जबाला رحمه الله रिवायत फरमाते है, हज़रत हमीद बिन अब्दुल-रहमान رضي الله عنه बयान फरमाता है, जब हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه मौत के करीब हुए तो सैयदा आईसा رضي الله عنها ने उन्हें पैगाम भेजा के उन्हें रसूल-अल्लाह ﷺ और दोनों साथियों رضي الله عنهما के करीब दफन होने के लिए तैयार करो. हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه ने अर्ज़ की, में आप رضي الله عنها का घर तंग नहीं करना चाहता. मैंने हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन से अहद कर रखा था के हम में जो भी पहले फौत हो तो दूसरा अपने साथी के पहलूँ में दफन होगा. सैयदा आईसा رضي الله عنها ने हुक्म फ़रमाया, जब हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه के जनाज़े को सैयदा आईसा رضي الله عنها के पास लाया गया तो सैयदा आईसा رضي الله عنها ने हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه के लिए दुआ फरमाई.

इमाम इब्ने शब्बाह رحمه الله रिवायत फरमाते है, हज़रत अब्दुल-वाहिद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه बयान फरमाते है, हज़रत अब्दुल-रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه ने वसीयत की के अगर वह मदीना में फौत हो जाए तो उन्हें हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه के पहलूँ में दफन किया जाए. और जब वह फौत हो गए तो **हज़रत अक़ील رضي الله عنه के घर के मशरिकी कोने पर उनकी क़ब्र बनाई गई. और वहां दफन कर दिए गए. उनकी क़ब्र मुबारक पर एक चादर डाली गई, मुझे शक रहा के उस चादर में सोने की तार थी या नहीं.**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने साद رحمه الله रिवायत फरमाते है के, **हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه ने फ़रमाया था के मुझे हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه की क़ब्र मुबारक के पास दफन करना.**

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा رضي الله عنه बयान फरमाते है के, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه **मदीना में फौत हुए. और बक़ी में दफन हुए.** उनका साले विसाल 32 हिजरी था.

हज़रत खनीस बिन खिज़ाफ्ह सहमी رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, रसूल-अल्लाह ﷺ से क़ब्ल ये सैयदा हफ्सा رضي الله عنها के शोहर थे. अव्वलीन मुहाजिरीन में से दो हिजरतों में शामिल रह चुके थे. उन्हें गजवा ऐ उहद के दिन ज़ख्म लगा और इसी की वजह से मदीना में फौत हुए.

हज़रत अबु-अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन युसूफ ज़रन्दी मदनी رحمه الله अपनी किताब "सीरत" में लिखते है के, **हज़रत खनीस बिन खिज़ाफ्ह رضي الله عنه हिजरत के तीसरे साल फौत हुए और हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه के करीब दफन हुए.**

हज़रत असद बिन ज़रारह رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, हज़रत असद बिन ज़रारह رضي الله عنه बैतूल-उक़्बा के दोनों मौकों पर मौजूद थे. आप رضي الله عنه की विलादत हिजरत के पेहले साल उस वक़्त हुई जब मस्जिदे नबवी बनाई जा रही थी.

इमाम इब्ने शब्बाह رحمه الله रिवायत फरमाते है, हज़रत अबु-गसान رضي الله عنه बयान फरमाते है के, मुझे हमारे साथियों में से एक ने बताया, में अरसे से सुनता आया हूँ के **हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन رضي الله عنه और हज़रत असद बिन ज़रारह رضي الله عنه की क़ब्र मुबारक बक़ी में रुहा के मक़ाम पर है.** रुहा बक़ी के दरमियान में एक क़ब्र थी. जिसकी हर तरफ से रास्ते थे. **इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, मुनासिब ये है के बक़ी में सैयदना इब्राहीम बिन रसूल-अल्लाह ﷺ के मज़ार शरीफ़ की ज़ियारत के दौरान ईन सब पर सलाम पढ़े.**

Ahlus-Sunnah (Sunni) wal Jama'at SHAIKH. MOHAMMED.SHAKIL. Maktab-at [Library] Zeenat-Fatima MaktabatZeenatFatima.Wordpress.com FREE ISLAMIC LIBRARY WEBSITE Surat, Gujarat, India.

अज़्वाजुन नबी ﷺ यानि उम्महातुल-मोमिनीन رضي الله عنهن की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने जबाला رحمه الله रिवायत फरमाते है, हज़रत मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह बिन अली رحمه الله बयान करते है के, अज्वाजे-मुतहहरात رضي الله عنهن के मज़ारात खोखा ऐ नबया से लेकर उस गली तक है जो सब्जी मंडी की तरफ जाती है. [यानि उम्महातुल-मोमिनीन رضي الله عنهن के मज़ारत एक साथ लाईन में है.]

इमाम इब्ने शब्बाह رحمه الله रिवायत फरमाते है, हज़रत ज़ैद बिन अता बिन साइब رحمه الله बयान फरमाते है के, मुझे मेरे दादा ने मुझे बताया के जब हजरत अक़ील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه ने अपने घर में कुवां खोदा तो एक पत्थर निकला जिस पर लिखा था, "क़ब्रे उम्मे-हबीबा बिन्ते सखर बिन हरब رضي الله عنها " ईस लिए **हज़रत अक़ील رضي الله عنه ने वो कुवां उसी वक़्त बंद कर दिया और अपने घर में सैयदा उम्मे-हबीबा رضي الله عنها की क़ब्र मुबारक पर एक कमरा (मज़ार) बना दिया.**

हज़रत ज़ैद बिन अता बिन साइब رحمه الله बयान फरमाते है के, में हजरत अक़ील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के उस घर में दाखिल हुवा था. और मैंने सैयदा उम्मे-हबीबा رضي الله عنها की क़ब्र मुबारक पर उस मजार को देखा था.

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, ये और इससे पेहले ज़िक्र की हुई रिवायत ईस बात का सुबूत है के उम्महातुल-मोमिनीन رضي الله عنهن के मज़ारत उस मशहद [दरगाह-/-मज़ार शरीफ़] में है जो उम्महातुल-मोमिनीन رضي الله عنهن के मज़ारत के नाम से मशहूर है. और हज़रत अक़ील رضي الله عنه के मज़ार-शरीफ़ के नाम से मशहूर गुंबद वाली इमारत में है.

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने शब्बाह رحمه الله रिवायत फरमाते है के, हज़रत अब्दुल-अज़ीज़ رضي الله عنه बयान फरमाते है के, हजरत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब बिन हाशिम رضي الله عنه को (हजरत अली बिन अबु-तालिब رضي الله عنه की वालिदा) सैयदा फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम رضي الله عنها की क़ब्र मुबारक के पास, **और बनु-हाशिम की उन मुबरक क़बरों से शुरू ही में दफन किया गया, जो तमाम मुबारक कबरें हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के घर में थी.**

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबु-तालिब رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक :

हज़रत जुबैर बिन बकार رضي الله عنه रिवायत फरमाते है के, **हज़रत इमाम हसन बिन अली رضي الله عنه ने हज़रत अली बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के जिस्मे अतहर को शहादत की जगह से उठा कर लाए और बक़ी में दफन कर दिया.**

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, ये इत्तिफाक की बात है 860 से कुछ ऊपर साल हुए थे के, हज़रत इमाम हसन رضي الله عنه और हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه के मज़ारत के किबले वाली जानिब सामने एक क़ब्र तैयार करने के लिए खुदाई की गई तो लोगों ने उस दौरान एक होज़ सा देखा जिसमे लकड़ी का ताबूत था. उस ताबूत को किसी शुर्ख (लाल) परदे में ढांपा गया था. और उसमे खीलें लगें थे जो सफेद और चमकदार थे. उन (लोहे के होने के बावजूद) उन खीलों को ज़न्ख भी नहीं लगा था. लोगों ने ताज्जुब किया के खीलों में ज़न्ख भी नहीं लगा था. और ताबूत के ऊपर का वो (लाल परदा) भी फटा नहीं था. **इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है, मुझे बोहोत से एय्से लोगों ने बाते जिन्होंने उस ताबूत की ज़ियारत की थी. और ये भी देखा था के उस होज़ में दाखिल होने की जगह पर पुराने पत्थर थे. शायद उस ताबूत में मदफ़ून होने वाला वो जिस्म हज़रत अली बिन अबु-तालिब رضي الله عنه का ही हो.**

तैयबा-ताहिरा सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा رضي الله عنها की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने शब्बाह رحمه الله रिवायत फरमाते है के, मुहम्मद बिन अली बिन उमर رضي الله عنه बयान फरमाते है के, **सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा رضي الله عنها बिन्ते रसूल-अल्लाह ﷺ की क़ब्र मुबारक हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब رضي الله عنه के घर के यमनी कोने में बक़ी की तरफ थी.**

सैयदना इमाम हसन बिन अली ﷻ की क़ब्र-मुबारक :

इमाम इब्ने शब्बाह ﷻ रिवायत फरमाते है के, हज़रत अबादिल ﷻ के गुलाम हज़रत फाईद ﷻ बयान फरमाते है के, मुझे हज़रत उबैदुल्लाह बिन अली ﷻ ने अपने बुज़ुर्गों के बयान में ज़िक्र किया के, हज़रत हसन बिन अली ﷻ को पेट में तकलीफ़ हुई. और ज़हर का पूरी तौर पर असर हो गया. और उन्हें मालूम हो गया के वह फौत हो जाएँगे तो उन्होंने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईसा ﷻ को पैगाम भेजा के उन्हें रसूल-अल्लाह ﷺ के पास दफन होने की इजाज़त दें. सैयदा आईसा ﷻ ने फ़रमाया ठीक है. हुजरा-शरीफ़ में शिर्फ़ एक क़ब्र की ही जगह बाकि है. जब बनु-उमय्या के लोगों ने ये बात सुनी तो बनु-उमय्या ने कहा, बखुदा यहाँ वह कभी दफन न हो सकेंगे. हालात ये हो गए के बनु-उमय्या और बनु-हाशिम ज़रहें पेहें कर आपस में जंग के लिए तैयार हो गए.

ये बात की खबर जब हज़रत हसन बिन अली ﷻ तक पोहोंच गई तो आप ﷻ ने अपने एहले खाना से कहलवा भेजा के अगर एय्सी सुरत है तो मुझे हुजरा-शरीफ़ में दफन होने की कोई ज़ुरूरत नहीं. **मुझे मेरी वालिदा (सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा ﷻ) के पास ही कब्रस्तान में दफन कर देना. ईस लिए हज़रत हसन बिन अली ﷻ को उनकी वालिदा के पहलू में ही दफन किया गया.**

सैयदना इमाम हुसैन बिन अली ﷻ के सर मुबारक को दफन करना :

हज़रत मुहम्मद बिन सईद ﷻ बयान फरमाते है के, यज़ीद बिन मुआविया ने हज़रत इमाम हुसैन ﷻ का सरे-अनवर अम्र बिन सईद बिन आस की तरफ भेजा. अम्र बिन सईद बिन आस उस वक्त यज़ीद की तरफ से मदीना का गवर्नर था. ईस लिए **अम्र बिन सईद बिन आस ने सरे-अनवर को कफ़न दिया और बक़ी में हज़रत इमाम हुसैन ﷻ की वालिदा सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा बिन्ते रसूल-अल्लाह ﷺ की क़ब्र-मुबारक के पास दफन कर दिया.**

इमाम अल-सम्हुदी ﷻ फरमाते है, लेकिन इमाम इब्ने-अबी अल-दुन्या ﷻ बयान फरमाते है के, **उन्होंने हज़रत इमाम हुसैन बिन अली ﷻ का सरे-अनवर यज़ीद के खजाने में देखा तो उसे कफ़न दे कर बाब अल-फरादिस के पास दमिश्क़ में दफन कर दिया.**

इमाम अल-सम्हुदी ﷻ फरमाते है, कुछ हज़रात ने और भी रिवायतें फरमाई है. ईस लिए हम उन तमाम रिवायतों की जगह में से जहाँ भी जाए हज़रत इमाम हुसैन ﷻ को सलाम करने में कोई हर्ज़ नहीं.

सैयदना इमाम हसन बिन अली ﷻ के पास दफन होने वालों का ज़िक्र :

इमाम इब्ने-नज्जार ﷻ रिवायत फरमाते है के, **हज़रत इमाम हसन बिन अली ﷻ के साथ उनके मज़ार-शरीफ़ में** उनके भतीजे हज़रत इमाम अली **ज़ैनुलआबिदीन** बिन हुसैन बिन अली ﷻ थे. हज़रत अबु-ज़ाफर इमाम **मुहम्मद बाक़र** बिन ज़ैनुलआबिदीन ﷻ थे. और हज़रत इमाम **ज़ाफर-सादिक** बिन मुहम्मद बाक़र ﷻ थे. और इमाम गज़ाली ﷻ ने भी यही रिवायत फ़रमाया है.

[बक़ी मदीना के बाहर खजूरों का एक बाग था. सब से पहले यहाँ रसूल-अल्लाह ﷺ ने उस्मान बिन मज़ऊन ﷻ को दफन किया. और बक़ी को मोमिनो के दफन के लिए पसंद फ़रमाया. बक़ी में खजूर के दरख्तों के अलावा मुहाजिरीन के कुछ घर बनाए थे. बाद में उन घरों में मुबारक शख्सियात को दफन किया जाने लगा. उन घरों में से एक घर हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब ﷻ का था जिसमे ज्यादा तौर पर बनु-हाशिम दफन किए गए. सुरुआती दौर में मोमिनीन गुरबत की ज़िंदगी बशर करते, खैमो या खजूर के बने झोपड़ो में रहते. मजबूत ईंटो के या शानदार घर नहीं थे, फिर शानदार दरगाह / मज़ारात का सुबूत कैसे मिलेगा? जब मोमिनो के घर ही खैमो और झोपड़ो के थे तब फौत होने पर बक़ी में एय्से ही घर में दफनाया जाता. अगर किसी को खुली ज़मीन में दफनाया होता तो उनकी क़ब्र पर खैमा बनाया जाता. दौरे उस्मानी के फ़ितनो से दौरे उमवी में यज़ीद के फ़ितने 64 हिजरी तक मोमिनीन को कई तकलीफों का सामना करना पड़ा. जब 88 हिजरी में उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ﷻ ने मस्जिद व मज़ारे रसूल-अल्लाह ﷺ का तामीरी काम सुरु किया तब से लेकर दौरे अब्बासी तक गज्वात में फ़तूहात और दौलत हासिल होने के बाद नया तामीरी काम भी सुरु हुवा. ये बोहोत बाद का दौर था. लेकिन हर दौर से ये असल तो मिलती ही है के, मोमिनो और मुबारक शख्सियात की कबरों के निशान बरक़रार रखने के लिए जाईज़ अमल किए जाते रहे हैं. ईस बात को साबित करने के लिए ही ईस किताब में बेशुमार दलाइल जमा किए है.]

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(40.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ ﷻ के दौर में: इमाम **हुसैन बिन अली** ﷻ ने सैयदा **फ़ातिमा-ज़ोहरा** ﷻ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

दलील-(55.) इमाम अल-सम्हुदी ﷻ (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-2, सफा- 131

इमाम अबु-ग़सान ﷻ रिवायत फरमाते है के, मुझे पुख्ता-सच्चे रावी ने बयान किया है के, वो मस्जिद जिस के मशरिक़ की तरफ बच्चों की नमाज़े जनाज़ा अदा करते हैं, वहां पर रुकैया नाम की एक हबसी औरत का खैमा था. **उस खैमे को क़ब्र की निशानी के तौर पर हज़रत इमाम हुसैन बिन अली ﷻ ने बनाया था ता की अपनी वालिदा सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा ﷻ की क़ब्र-मुबारक का पता चल सके.** ईस मस्जिद के पास होने के अलावा ईस खैमे की और कोई नजदीकी पहचान ना थी.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(41.) हज़रत उमर फ़ारूक़ ﷻ के दौर में: अमीरुल मोमिनीन **हज़रत उमर** ﷻ ने सैयदा **जैनब बिन्ते जहश** ﷻ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया और

बाब-(41.) हज़रत उस्मान ग़नी ﷻ के दौर में: **मुहम्मद अल-हनफिया बिन अली बिन अबु-तालिब** ﷻ ने **अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास** ﷻ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

दलील-(56.) इमाम इब्ने अबी-शैबा ﷻ (विसाल-235 हिजरी) की किताब: अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा, जिल्द-3, सफा-24, किताब अल-जनाईज़, हदीस-11750 & 11751.

हज़रत इमरान बिन अबी-अता ﷻ बयान फरमाते है के, में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﷻ की वफात पर हाज़िर हुवा. तो जनाज़ा और क़ब्र का इंतजाम हज़रत मुहम्मद अल-हनफिया बिन अली बिन अबु-तालिब ﷻ ने किया. और **हज़रत मुहम्मद अल-हनफिया ﷻ ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﷻ की क़ब्र मुबारक पर 3 दिन तक खैमा बनाया.**

हज़रत मुहम्मद अल-मुन्कदिर ﷻ बयान फरमाते है के, **हज़रत उमर बिन खत्ताब ﷻ ने सैयदा जैनब बिन्ते जहश ﷻ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया.**

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(42.) हज़रत उस्मान ग़नी ﷻ के दौर में: अमीरुल मोमिनीन **हज़रत उस्मान** ﷻ ने उनके चाचा हकम बिन अबी अल-आस की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

दलील-(57.) इमाम इब्ने-हजर अल-अश्क़लानी ﷻ (विसाल-852 हिजरी) की किताब: अल-ईसाबह फी तमीज़ अल सहाबह, जिल्द-2, हर्फ़ अल हा, सफा-92

इमाम इब्ने साद ﷻ ने इमाम वाक़दी ﷻ से उन्होंने सअला बिन अबी-मालिक ﷻ से अपनी मुकम्मल सनद के साथ बयान फ़रमाया है के, हकम बिन अबी अल-आस का इंतकाल अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी ﷻ की दौरे खिलाफत में हुवा. तो **हज़रत उस्मान ﷻ ने उनकी क़ब्र की जगह गरमी के दिन खैमा बनवाया**, जिस पर लोगों ने सवाल किया तो हज़रत उस्मान ﷻ ने लोगों से फ़रमाया, **अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन खत्ताब ﷻ की दौरे खिलाफत में सैयदा जैनब बिन्ते जहश ﷻ की क़ब्र मुबारक पर भी तो खैमा बना था.** उस वक़्त तुम्हें कोई भी सवाल करने वाला नज़र आया था? रावी फरमाते है, हकम का इंतकाल खिलाफाते उस्मानी में 32 हिजरी में हुवा था.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(43.) अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली ﵁ के दौर में: तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﵁ की अव्लादों ने ने हज़रत तल्हा ﵁ को दफनाने के लिए आल ऐ अबुबक्र ﵁ में से एक घर ख़रीदा और उस घर में दफन किया

दलील-(58.) इमाम इब्ने अबी-शैबा ﵀ (विसाल-235 हिजरी) की किताब: अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा, जिल्द-7, सफा-536, किताब अल-जमल, हदीस-37770.

हज़रत इस्माइल बिन अबी-खालिद ﵀ हज़रत कैस ﵀ से बयान फरमाते है के, जंगे जमल के दिन मरवान बिन हकम ने हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﵁ के घुटने में एक तीर मारा. उसके बाद घुटने से खून बहना शुरू हुवा. जब लोग उस खून को बेहने से रोकते तो वो रुक जाता और जैसे ही उसे छोड़ते तो फिर खून बेहना शुरू हो जाता. हज़रत तल्हा ﵁ ने फ़रमाया, उसे छोड़ दो. जब लोगों ने ज़ख्म के सिरे को रोकना चाहा तो घुटना फूल गया. फिर हज़रत तल्हा ﵁ ने फ़रमाया, उसे छड़ दो, ये तीर अल्लाह अज्वजल की तरफ से था. फिर हज़रत तल्हा ﵁ का इंतकाल हो गया. हमने हज़रत तल्हा ﵁ को कला (बसरा के दरिया किनारे एक बाज़ार) के एक तरफ दफन कर दिया. उनके घरवालों में से किसी ने हजरत तल्हा ﵁ को ख्वाब में देखा के वह फरमा रहे है, क्या तुम मुझे पानी से नजात नहीं दिलाओगें? में पानी में डूब चूका हूँ. ये कलेमात हज़रत तल्हा ﵁ ने तीन बार फरमाए. (फिर उनकी आल ने वहां जाकर) दोबारा हज़रत तल्हा ﵁ की क़ब्र मुबारक को खोदा तो क़ब्र पानी की वजह से सब्ज़ी की तरह सब्ज़ हो चुकी थी. लोगों ने क़ब्र से पानी को दूर किया फिर हजरत तल्हा ﵁ के जिसमे पाक को क़ब्र से निकला तो उनके जिस्म का दाढी और चेहरे का जो हिस्सा जमीन से मिला हुवा था उसे ज़मीन ने खा लिया था. **हज़रत तल्हा ﵁ की अव्लादों ने हज़रत तल्हा ﵁ को दफ़नाने के लिए (खास तौर पर) आल ऐ अबुबक्र ﵁ के घरों में से एक घर को 10,000 (दस हज़ार) दिरहम में ख़रीदा. और उस घर में हज़रत तल्हा को दफ़नाया.**

[याद रहे के दुन्या में जहाँ जहाँ गुमराहों ने सालिहीन की मुबारक क़बरों को खोद कर खुला कर लिया और फिर ये बहाना कर के क़बरों को मिटा दिया के, "देखों ये तो मर कर मिट्टी में मिल गए है. क़बरों में इनका वुजूद भी बाकि नहीं रहा." और फिर उन मुबारक क़बरों पर मस्जिदे तामीर की है. उनके खिलाफ ये सहीह हदीस दलील है के, अगर जिस्म को मिट्टी खा भी जाए फिर भी मोमिन का वुजूद मिटता नहीं है. क्यों की **सहाबी को दफन कर दिया है और क़ब्र में दफन होने के बाद उनके जिस्म का जो भी हिस्सा ज़मीन से मिला हुवा था उसको मिट्टी खा चुकी थी फिर भी सहाबी को मिट्टी के खाने से से तकलीफ नहीं हो रही. बलकी क़ब्र में पानी आने से तकलीफ़ हो रही है.** यानि हर नबी, सहाबी, ताबईन, तबा-ताबईन और अवलिया-अल्लाह की मुबारक क़बरों को ईस हाल में बरक़रार रखना चाहिए और उनकी हिफाजत करनी चाहिए के उन सालिहीन को अपनी क़बरों में कोई तकलीफ़ ना हो. और **सहाबी की अव्लादों ने वही अमल किया के उन्हें दफ़नाने के लिए दस हज़ार दिरहम में घर खरीद कर उस घर में दफना कर उस घर को हमेशा के लिए मज़ार बना दिया.]**

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(44.) हज़रत मुआविया ﵁ के दौर में: उम्मुल मोमिनीन सैयदा आईसा सिद्दीक़ा ﵂ ने अपने भाई अब्दुल-रहमान बिन अबुबक्र सिद्दीक़ ﵁ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

दलील-(59.) इमाम बुखारी ﵀ (विसाल-256 हिजरी) की किताब: सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-280, किताब अल-जनाईज़, बाब-81 क़ब्र पर टहनी गाड़ना

दलील-(60.) मुल्ला अली अल-क़ारी ﵀ (विसाल-1014 हिजरी) की किताब: मिरक़ात अल-महातिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह, जिल्द-4, सफा-156, किताब अल-जनाईज़

दलील-(61.) क़ाज़ी अबु-वलीद अल-बाजी (विसाल-494 हिजरी) की किताब: मुन्तक़ा शरह मुवत्ता अल-इमाम मलिक, जिल्द-2, सफा-494 से 495, किताब अल-जनाईज़

दलील-(62.) क़ाज़ी अबुबक्र अल-अरबी (विसाल-543 हिजरी) की किताब: अल-मसालीक फी शरह मुवत्ता अल-इमाम मलिक, जिल्द-3, सफा-560 से 561, किताब अल-जनाईज़

इमाम बुखारी रिवायत फरमाते है के, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर ने **हज़रत अब्दुल-रहमान बिन अबुबक्र सिद्दीक़ की क़ब्र पर खैमा देखा** तो फ़रमाया, बेटे ! इसे हटा दो. उन पर आमाल ही साया करेंगे.

मुल्ला अली अल-क़ारी रिवायत फरमाते है के, **अब्दुल्लाह इब्ने उमर ने अपने मोमिन भाई अब्दुल-रहमान की क़ब्र पर बांस का खैमा देखा** तो उन्होंने अपने गुलाम से कहा, ईस खैमे को उखाड़ दो. उनका अमल उनपर साया करेगा. हमारे उलेमा में से बाज़ शरह करने वाले कहते है के, **माल के फुज्ल खर्च की वजह से (इमाम बुखारी की) ईस रिवायत में ममानत है.** **और सलफ़ (सहाबा, ताबईन, तबा-ताबईन) ने जाईज़ क़रार दिया है के, मशाईख (बुजुर्गाने-दीन) और मशहूर उलेमा की क़ब्र पर ईमारत (मज़ार) बना दिया जाए, ईस लिए के लोग उन मज़ारत की ज़ियारत करें और उन मज़ारत के निचे बेठ कर आराम हासिल करें.**

क़ाज़ी अबु-वलीद अल-बाजी और क़ाज़ी अबुबक्र अल-अरबी मुवत्ता की शरह में (इमाम बुखारी की) ईस रिवायत की शरह में फरमाते है के, तक़सीस क़ब्र को फलई या सफ़ेद मिट्टी से सफ़ेद करने को कहते है. हज़रत इब्ने हबीब फक्र व तकब्बुर के खौफ से क़ब्र पर सफ़ेद करने और क़ब्र पर नक्श व निगार बनाने से मना फरमाते है. हज़रत इब्ने क़ासिम क़ब्र पर पत्थर बिछा कर उस पर लिखने को फेल ऐ मकरूह समझते है. ईस लिए के इसमें कई जगह कोई अल्फाज सहीह मालूम नहीं होते और हरफ की तौहीन का खौफ हो सक्ता है. फिर हज़रत इब्ने क़ासिम फरमाते है, **अगर लकड़ी या सुतून या बड़ा पत्थर बगैर लिखने के पहचान की गरज से क़ब्र की निशानी के लिए क़ब्र के करीब में नसब कर दिया जाए तो कोई हर्ज़ नहीं.** और ईस तरीके को भी मना करना तभी जाईज है जब ये हालात फक्र तकब्बुर और नुमाइश के हो. **वरना क़ब्र पर खैमा डालने की निस्बत हज़रत इब्ने हबीब फरमाते है के, औरत की क़ब्र पर खैमा डालने मर्द की क़ब्र पर डालने से अफज़ल है.** खास तौर पर दफन से पेहले के इसमें पर्दापोशी है. और **हज़रत उमर बिन खत्ताब ने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा ज़ैनब बिन्ते जहश की क़ब्र पर खैमा बनाया था.** लेकिन हजरत **अब्दुल्लाह इब्ने उमर**, हजरत अबु-हुरैरा, हजरत अबु-सईद खुदरी और हजरत इब्ने मुसैयब मुरदे की क़ब्र पर खैमा डालने को मकरूह जानते थे. **लेकिन मगर [उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईसा सिद्दीक़ा जिनके लिए हुज़ुर सरवरे आलम फ़रमाते है के, मेरा आधा इल्म आईसा के सिने में है.] सैयदा आईसा सिद्दीक़ा ने अपने भाई हजरत अब्दुल-रहमान बिन अबुबक्र की क़ब्र मुबारक पर खैमा क़ायम किया था. और हज़रत अली के साहबज़ादे हज़रत मुहम्मद अल-हनफिया ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास की क़ब्र मुबरक पर खैमा क़ायम किया.**

[अगर कोई शख्श क़बरों की ताज़ीम और पहचान बरक़रार रखने के लिए करने वाले अमल को मकरूह साबित करने के लिए ऊपर ज़िक्र की हुई इमाम बुखारी की रिवायत को दलील बनाए. उसके जवाब में ऊपर मुकम्मल दलाइल और बेहेस के साथ सलफ़ और अईम्मा से मसाइल ज़िक्र है, इससे ये बात वाज़ेह हो जाती है के क़बरों पर हिफाज़त के लिए जाईज़ अमल शिर्फ़ उन शर्तो पर कर सकते है के, वो अमल फक्र, तकब्बुर व शान ज़ाहिर करने के लिए हो तो उसको मकरूह जाना है. या फुज़ूल खर्च यानि के जहाँ ज़ुरूरत नहीं हो फिर भी खर्च किया हो उसको मकरूह जाना है. और सलफ़ और अईम्मा ने मुकम्मल बेहेस के आखिर में ये बात वाजेह कर दी के जो भी सहाबा या अईम्मा मकरूह जानते थे उसके पीछे कुछ न कुछ वजह थी. वरना मुल्ला अली अल-क़ारी ने कोल के मुताबिक अगर ज़ुरूरत लाहक़ हो तो मुबारक क़बरों की हिफाज़त और ताज़ीम के लिए खैमा गुंबद या ईमारत बनाने को सलफ़ यानि के सहाबा, ताबईन व तबा-ताबईन ने जाईज़ करार दिया हैं.]

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(45.) हज़रत मुआविया के दौर में: बनु-उमय्या ने अमीरुल-मोमिनीन उस्मान बिन अफ्फान की क़ब्र मुबारक पर बड़ा गुंबद तामीर किया

दलील-(63.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब: अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-7, सफा- 190, 13 से 40 हिजरी के वाकियात

इमाम इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है के, अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी के मक़ामे दफन में कोई इख्तिलाफ नहीं. **हज़रत उस्मान बक़ी की मशरिकी तरफ "हस-कोकब"** [जो पेहले यहूदियों का कब्रस्तान था जिसे बाद में हज़रत उस्मान ने खरीद लिया उस] **में दफन किए गए.** बनु-उमय्या ने बनु-उमय्या के पेहले जमाने [दौरे हज़रत मुआविया] में हजरत उस्मान की क़ब्र मुबारक पर एक बड़ा गुंबद तामीर कर दिया था. जो आज (774 हिजरी) तक सलामत हैं.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(46.) हज़रत अब्दुल्लाह बिने जुबैर के दौर में: अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर ने काबतुल्लाह में नबी इस्माइल और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा मिशरिया की कबरें बनवाई

दलील-(64.) इमाम इब्ने इसहाक (विसाल-151 हिजरी) की किताब: अल-सीरत अल-नब्वियाह अल इब्ने इसहाक, किताब अज़ी वुजूद फी अल मक़ाम अल-हिज्र, सफा- 153

दलील-(65.) इमाम अल-अज़रकी (विसाल-250 हिजरी) की किताब: अख्बारुल मक्का अल-अज़रकी, बाब-मा जा फी बिना इब्ने जुबैर अल काबा, सफा-311, हदीस नं-234 और बाब- ज़िक्र अल-हिज्र, सफा- 431, हदीस नं-389

दलील-(66.) इमाम इब्ने अल-जव्ज़ी (विसाल-597 हिजरी) की किताब: अल-मुन्तज़िम फी तारिख अल-मुलूक व अल-उमम, जिल्द-1, बाब-ज़िक्र इस्माइल सलवात अल्लाह अलय्ह वस्सलामह, सफा-305

दलील-(67.) इमाम मुहीउद्दीन अल-तिबरी अल-मक्की (विसाल-694 हिजरी) की किताब: अल-क़ीरा ली क़ासिदी उम्मल क़ुरा, सफा-510

हज़रत हारिस बिन अबुबक्र, हज़रत सफवान बिन अब्दुल्लाह बिन सफवान अल-जम्ही, अल्लामा यज़ीद और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रिवायत फरमाते है के, जब काबतुल्लाह को दोबारा हज़रत इब्राहीम खालिलुल्लाह की तामीर पर बनाने के लिए हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने काबा शरीफ़ से (तक़रीबन 6 हाथ या उससे कुछ कम) खुदाई करवाई, तो **अल-हिज्र (हतीम) के हिस्से की असल तामीर की बुन्याद गहराई में सब्ज़ (ग्रीन) पत्थरों वाली कुछ कबरें नमूदार हुई.** उनकी ज़ियारत के लिए कुरेश के लोग ईखट्टा हो गए. लोगों ने इब्ने ज़ुबैर से पूछा, आप ने ईन सब्ज़ पत्थरों में क्या पाया? हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने फ़रमाया, अब इसके आगे खुदाई ना करों. और आगे फ़रमाया, एय अब्दुल्लाह बिन सफवान और एय एहले कुरेश देखो, **ईस तरफ नमूदार हुई ये कबरें हज़रत इस्माइल ज़बीहुल्लाह की है. और ये उनकी बेटियों की. और एय एहले क़ुरेश गवाह हो जाओ, में इन्हें (काबतुल्लाह में) बनाऊंगा.** [आज 1441 हिजरी में काबा-शरीफ़ के बाहर दिखाई देने वाला अल-हिज्र (हतीम) का हिस्सा नबी इब्राहीम और इब्ने ज़ुबैर दोनों की ही तामीर में काबा-शरीफ़ के अंदर था. सफा-31 में है के इसी अल-हिज्र में नबी इस्माइल, सैयदा हाजरा और आले इस्माइल काबा-शरीफ़ में ही दफन किए गए. क़ुरेश ने तामीर के वक़्त अल-हिज्र को काबा-शरीफ़ से बाहर कर काबतुल्लाह को चोकोर कर दिया था. इब्ने ज़ुबैर ने काबतुल्लाह की तामीर की तब अल-हिज्र को दोबारा काबा में शामिल कर लिया और जो कबरें नमूदार हुई उन्हें काबा में रहने दिया. लेकिन हज्जाज़ ने अब्दुल-मलिक के हुक्म से काबतुल्लाह को क़ुरेश की तामीर की तरह ही चोकोर कर दिया और अल-हिज्र को बाहर कर दिया. फिर भी उन क़बरों के निशान अल-हिज्र में 1000 हिजरी तक बरक़रार रहे. जिसका ज़िक्र हर दौर में अईम्मा ने अपनी किताब में किया है जो सफा-44 में है.]

नज़रे शानीः सैयद मुहीउद्दीन साहब (जामा मस्जिद ख्वाजा दाना सूरत), मुआविनः अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी(रतलाम), मुरत्तिबः शेख मुहम्मद शकील
+91-76986-79976

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(47.) क़ाज़ी अयाज़-(544 हिजरी), अल्लामा तिबी-(743 हिजरी), क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता-(770 हिजरी), अल्लामा इब्ने हजर हैतमी-(973 हिजरी) और मुल्ला अली क़ारी-(1014 हिजरी) ने काबतुल्लाह के हतीम में नबी इस्माइल और उनकी वालिदा सैयदा हाजरा की क़बरों का ज़िक्र किया

दलील-(68.) अल्लामा अल-तिबी (विसाल-743 हिजरी) की किताब: शरह अल-तिबी अल मिस्कात अल-मसाबिह, जिल्द-1, सफा- 937

दलील-(69.) मुल्ला अली अल-क़ारी (विसाल-1014 हिजरी) की किताब: मिरक़ात अल-महातिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह, जिल्द-2, सफा-389, किताब अल-सलात

अल्लामा अल-तिबी और मुल्ला अली अल-क़ारी अपनी किताब में रिवायत फरमाते है, क़ाज़ी अयाज़ (विसाल-544 हिजरी) ने बयान फ़रमाया है के, यहूद व नसारा अपने अंबिया की क़बरों को सजदा करते थे. और उसको किबला बनाते थे. और नमाज़ में उन क़बरों की तरफ मुतवज्जो होते थे. ईस तरह उन्होंने उन क़बरों को बुत (मूर्ति) बना रखा था. बस इसी वजह से हुज़ुर ने उन पर लानत की और मुसलमानों को एय्सा करने से रोक दिया. और बाक़ी वह शख्श जिसने किसी नेक आदमी (वली-अल्लाह) की क़ब्र के करीब मस्जिद बनाई. या उसके मकबरे (मज़ार) में ईस तरह नमाज़ पढ़ी के दौराने नमाज़ ना उसकी ताज़ीम की और ना उसकी तरफ तवज्जो की निय्यत की. तो ईस में कोई हर्ज़ नहीं. और उस नेक शख्श वली-अल्लाह के वसीले से अल्लाह से मदद तलब की. या उस नेक शख्श वली-अल्लाह की रूह को अपनी इबादत का सवाब पोहोंचाने का इरादा किया. तो ईस में कोई हर्ज़ नहीं. क्या तु नहीं देखता के, नबी हज़रत इस्माइल की क़ब्र मुबारक मक्का में मस्जिदे हराम में हतीम के पास है. और ये जगह जहाँ हज़रत इस्माइल की क़ब्र मुबारक है ये अफ़ज़ल जगहों में से है. हतीम में जहाँ नमाज़ी नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते है. और क़बरों में नमाज़ पढ़ने को मना किया है वो खास ईस लिए है के, उन क़बरों के साथ के जिनमें मुरदे दफन होते है और उनको बार बार खोदा जाता है. ईस लिए के उस ज़मीन में मुर्दों की नजासत (नापाकी) होती है. और बाज़ अईम्मा ने ज़िक्र किया है के, नबी इस्माइल की क़ब्र मुबारक की सुरत बैतुल्लाह काबा-शरीफ़ के शुमाली गोशे में मिज़बे-रेहमत (काबतुल्लाह की छत से पानी के गिरने की सोने की नली) के निचे है. और ये के हतीम (अल-हिज्र) के हिस्से में हजरे-अस्वद और जम-जम के दरमियान 70 अंबिया की कबरें है.

मुल्ला अली अल-क़ारी आगे फरमाते है, अगर ये ऐतराज़ हो के हज़रत इस्माइल की क़ब्र की सुरते-हाल और उनके अलावा दुसरे 70 अंबिया की कबरें अब मिट चुकी है. उन अंबिया की क़बरों का वहां निशान तक भी नहीं, ईस लिए मुबारक क़बरों के पास नमाज़ अदा करने की दलील में नबी इस्माइल और 70 अंबिया की क़बरों का इस्तदलाल ठीक नहीं (अगर एय्सा एतराज़ हो) तो ईस एतराज़ के जवाब में, अल्लामा इब्ने हजर हैतमी फरमाते है,

शरह करने वालों ने हतीम में हज़रत इस्माइल की क़ब्र मुबारक के करीब लोगों का नमाज़ पढ़ने की सूरते-हाल की तरफ जो इशारा किया है, और जो ये बात कही है के, क़बरों में नमाज़ पढ़ना मकरूह ईस लिए है के वो एय्सी कबरें है जिसकी क़ब्र खोदी जाती हो तो उनसे दूरी नजासत (नापाकी) की वजह से है. ये सारी के सारी बात (एतराज़ करने वाले) मशाईख के ईस क़ोल से गफलत की वजह से है की अंबिया की क़बरों में नमाज़ मकरूह है. अंबिया की कबरें ईस हुक्म से खारिज़ है, हतीम में अंबिया की क़बरों में नमाज़ अदा करना हरगिज़ मकरूह नहीं. क्यों की "अंबिया आ-हया-आ फी कुबुरिहीम" अंबिया अपनी क़बरों में ज़िन्दा है.

[ऊपर ज़िक्र की हुई रिवायत में और सफा-48 है के अंबिया अपनी क़बरों में ज़िन्दा है और सफा-32 में सहीह मुस्लिम से ज़िक्र है, अंबिया अपनी क़बरों खड़े हो कर नमाज़ अदा करते है. ईस बात को यूँ समझें के जैसे आज 1441 हिजरी में निचली मंजिल पर इमाम नमाज़ पढ़ रहा हो और ऊपर की मजिल पर दुसरे बन्दे नमाज़ पढ़ रहे है. आज इसी तरह काबतुल्लाह के करीब में जो मुबारक क़बरों की सुरते-हाल है वो यही है के वो अपनी क़बरों में ज़िन्दा है और इबादत में है और बिलकुल उनके ऊपर लोग नमाज़ और तवाफ़ में है.]

मुल्ला अली अल-क़ारी ﷺ आगे रिवायत फरमाते है, अल्लामा इब्ने हजर हैतमी ﷺ फरमाते है, और मशाईख ने गैर-अंबिया (जो नबी नहीं है उन) की क़बरों के बिच नमाज़ पढ़ने के मकरूह होने के लिए ये सफाई दी है के, अगर उन क़बरों को खोदा ना गया हो क्यों की अगर उन क़बरों को दुसरो को दफन करने के लिए खोदा गया हो तो, नमाज़ पढ़ने वाला आदमी उस सूरते-हाल में नजासत (नापाकी) के रूबरू नमाज़ पढ़ने खड़ा होगा. और नजासत के रूबरू नमाज़ मकरूह है. और ये बराबर बात है के नजासत उसके ऊपर हो या पीछे हो या निचे हो जिस पर वो नमाज़ के लिए खड़ा है.

मुल्ला अली अल-क़ारी ﷺ आगे रिवायत फरमाते है, और बाज़ मशाईख ने कहा है के, क़बरों में नमाज़ पढ़ना ईस हाल में जाईज़ है और फिर हदीस की तवील एय्से की है के, अक्सर कब्रस्तान में मिट्टी मुर्दों के पिप और गोस्त वगैरा से मिली होती है. और **मना वह जगह के नजासत की वजह से है. बस अगर जगह पाक़ है तो उस जगह में नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं.** और इसी तरह का हुक्म कूड़ा-खाना, ज़बह करने की जगह और रास्ते के लिए भी है के जगह पाक़ हो तो कोई हर्ज़ नहीं. और रास्ते में नमाज़ पढ़ने से मना करने की वजह ये है के नमाज़ी को उसके आस पास से हर गुजरने वाला अपनी तरफ मशगुल कर देगा.

दलील-(70.) मुअर्रिख क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता ﷺ (विसाल-770 हिजरी) की किताब: रिहाला इब्ने बतूता, जिल्द-1, किताब-ज़िक्र मिज़ाब मुबारक, बाब- हज़रत इस्माइल عليه السلام और सैयदा हाजरा عليها السلام के मज़ारात, सफा-148 से 149

मुअर्रिख क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता ﷺ बयान फरमाते है, **हज़रत इस्माइल عليه السلام की क़ब्र-मुबारक मिज़ाबे-रेहमत के निचे पत्थर के निचे है. क़ब्र-मुबारक के ऊपर सब्ज़ (ग्रीन) रंग का लम-चोकोर मर-मर का पत्थर मेहराब की शक्ल का है.** और दुसरे एक सब्ज़ रंग के मर-मर पत्थर से मिला हुवा है जो लम-गोल है. उन दोनों पत्थरों की चौड़ाई तक़रीबन 1.5 बालिश्त है. ये दोनों पत्थर मिल कर एक चोकोर खुश्मंज़र शक्ल बन जाती है.

हज़रत इस्माइल عليه السلام की क़ब्र-मुबारक के एक जानिब रुकने इराक़ी के करीब आप عليه السلام की वालिदा **सैयदा हाजरा عليها السلام की क़ब्र-मुबारक है. उनकी क़ब्र मुबारक की पहचान एक लम-चोकोर सब्ज़ रंग का मर-मर पत्थर है.** ईस पत्थर की भी 1.5 बालिश्त की चौड़ाई है. दोनों मुबारक क़बरों के बिच में 7 बालिश्त का फासला है.

[ये मंज़र 725 हिजरी का है. मुअर्रिख क़ाज़ी मुहम्मद इब्ने बतूता ﷺ मालिकी फ़िक्ह से थे और मुल्के मराकिस (मोरोक्को) के शुयूख अईम्मा के खानदान से थे. और उनके इस्लामी मुल्को में सफ़र के दौरान 725 हिजरी में जब आप हरमैन-शरिफैन पोहोंचे तब आप ने वहां का मंज़र अपनी तारीखी सफरनामे की किताब में ज़िक्र किया. काबतुल्लाह के हतीम की कुछ क़बरों पर निशानी के तौर पर रखे हुए वह पत्थर आज मौजूद नहीं है. नई हुकूमत ने जहा दुसरे मुबारक मकामात के निशान मिटाए वही साथ में ईन दो क़बरों के निशान भी मिटा दिए लेकिन ये याद रहे के शिर्फ़ ऊपर पत्थर से किए निशान मिटाए है हतीम में ये मुबारक कबरें आज भी वहीं है.]

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(48.) अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: अब्दुल्लाह बिन असद رضي الله عنه ने अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضي الله عنه को अबु-दब के घर में दफन किया. और उनकी क़ब्र को कोहान नुमा बनाया और उस क़बरों वाले घर सहाबी अबु-मूसा अल-अशअरी رضي الله عنه ने तामिरात की थी.

दलील-(71.) इमाम अल-अज़रकी ﷺ (विसाल-250 हिजरी) की किताब: अख्बारुल मक्का अल-अज़रकी, बाब-मा जा फी मकबत मक्का व फ़ज़ाईलाहा, सफा-828 से 830, हदीस नं-1042

हज़रत अबु-वलीद ﷺ ने अपने दादा से रिवायत की है के, दौरे जहालत में और इस्लाम के इब्तिदा के दौर में एहले मक्का मुर्दों को "शिअबे अबी-दब" में दफन करते थे. दौरे क़दीम से आज तक मक्का के शेहेरियों और हाजियों को यहीं दफनाया जाता है.

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर बिन ख़त्ताब ﷻ का इंतकाल 74 हिजरी में हुवा. जब वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन असद बिन अबी-एय्श बिन उमय्या ﷻ के घर तशरीफ़ ले गए थे. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷻ को इब्ने असद बिन अबी-एय्श बिन उमय्या ﷻ ने पहाड़ के आखिर में दिवार के निचे क़बरों के बिच दफनाया. वह हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर ﷻ की शहादत का वक़्त था. उस वक़्त (ज़ालिम हज्जाज़ बिन युसूफ और यज़ीदियों के ज़ुल्म की वजह से) नमाज़े जनाज़ा अदा करने की मुश्किल थी. तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन असद ﷻ ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷻ की नमाज़े जनाज़ा घर ही में अदा की. और **हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷻ को इब्ने असद बिन अबी-एय्श बिन उमय्या ﷻ और इब्ने सुफ़यान बिन अब्दुल-असद बिन हलाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन मख्ज़ूम ﷻ के साथ "शिअबे अबी-दब" में उस जगह दफन किया** जिसके करीब मक्का का कसाई-खाना था.

और **अबु-दब बनु-सवात बिन आमीर क़बीले का एक शख्श था. उस अबु-दब का घर उसके नाम (शिअबे अबी-दब) से पहचाना जाता था.**

और **सहाबी अबु-मूसा अल-अशअरी ﷻ ने अपने दौर में उस (घर शिअबे अबी-दब) पर उम्दा पत्थरों से तामिरात करवाई थी.**

उस जगह के कुछ मुकीम का कहना है के, सैयदा आमिना बिन्ते वहब ﷻ जो रसूल-अल्लाह ﷺ की वालिदा है, उनको भी वहीँ (शिअबे अबी-दब) में दफनाया गया था. और कुछ लोगों का कहना है **के उनकी क़ब्र-मुबारक (शिअबे अबी-दब के करीब) उस शानदार घर में है.** [सफा-7 में इससे मुख्तलिफ मकाम के बारे में रिवायत है.]

दलील-(72.) इमाम इब्ने अबी-शैबा ﷻ (विसाल-235 हिजरी) की किताब: अल-मुसन्नफ़ इब्ने अबी-शैबा, जिल्द-3, किताब-अल जनाईज़, सफा-22, हदीस-11737.

हज़रत खालिद बिन उस्मान ﷻ एक रावी से रिवायत करते है के, **मेंने अब्दुल्लाह बिन उमर ﷻ को दफन करने के कुछ दिनों बाद उनकी क़ब्र मुबारक की ज़ियारत की तो वह (ज़मीन से) उठी हुई (ऊंट के) कोहन नुमा थी.**

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(49.) अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन बिन अली ﷻ ने उनके शोहर हसन मुसन्ना बिन हसन बिन अली ﷻ की क़ब्र मुबारक पर खैमा बनाया

दलील-(73.) इमाम बुखारी ﷻ (विसाल-256 हिजरी) की किताब: सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, किताब- अल-जनाईज़, सफा-262

दलील-(74.) मुल्ला अली अल-क़ारी ﷻ (विसाल-1014 हिजरी) की किताब: मिरक़ात अल-महातिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह, जिल्द-4, सफा-205, किताब अल-जनाईज़, बाब- अल-बका अलल मय्यत

इमाम बुखारी ﷻ रिवायत फरमाते है के, जब **हज़रत हसन मुसन्ना बिन हसन बिन अली ﷻ की वफात हुई तो उनकी बीवी (सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन ﷻ) ने उनकी क़ब्र मुबारक पर एक साल तक खैमा लगाए रखा**. जब खैमे से उठी तो बुलंद आवाज़ सुनी जो कह रहा था, क्या जो चीज़ गम हुई थी वो तुम्हें मिल गई? दुसरे ने जवाब दिया, बलकी मायुश हो कर लोट गए.

मुल्ला अली अल-क़ारी ﷻ रिवायत फरमाते है, हज़रत हसन मुसन्ना ﷻ की क़ब्र पर खैमा लगाने का ज़ाहिर ये था के दोस्त व रिश्तेदार वहां इखट्टे हो सके और क़ब्र के करीब ज़िक्र हो सके और दुआ-ऐ-मगफिरत और दुआ-ऐ-रेहमत हो सके. ना के उस लगाए हुए खैमे को बेहूदा और मकरूह पर बनाया हुवा साबित किया जाए जैसा के इब्ने हज़र ﷻ ने अपनी शरह में कहा है. **क्यों की बेहूदा और मकरूह की निय्यत से किए हुए अमल से एहले-बैत दूर है.**

[यानि सैयद-सादात मकरूह की निय्यत से सरे-आम खैमा लगाने जैसा आमाल करने से दूर रेहते है.]

दलील-(75.) मुफ़्ती एहमद यारखान नईमी (विसाल-1391 हिजरी) की किताब: मिरातुल-मनाजिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह, जिल्द-2, सफा-539, हदीस नं-1749

मिरक़ात अल-महातिह शरह मिस्कात अल-मसाबिह में मुल्ला अली अल-क़ारी फरमाते है, **हज़रत हसन मुसन्ना बिन हसन बिन अली की क़ब्र मुबारक पर उनकी बीवी सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन बिन अली ने बनाया हुवा कुब्बा (गोल खैमा) अहबाब के जमा होने और उनकी क़ब्र पर तिलावते कुरान व फातिहा पढ़ने के लिए था.** मकरूह या नाजाईज़ न था. क्यों की एहले-बैत अतहर एय्सा काम कभी नहीं करते खास सहाबा की मौजूदगी में.

अशअतुल लुमात फी शरह मिस्कात अल-मसाबिह में शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी फरमाते है, **खुद हज़रत हसन मुसन्ना की बीवी सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन एक साल तक ईस कुब्बे में हज़रत हसन की क़ब्र मुबारक के पास रही.** हो सक्ता है के उस कुब्बे के दो हिस्से हो एक में आप रहती हो और दुसरे में अहबाब जमा हो कर फातिहा पढ़ते हो.

मुफ़्ती एहमद यारखान नईमी बयान फरमाते है के, गैब से आवाज़ आई के, “क्या उन्होंने गुमशुदा चीज़ को पा लिया है? दुसरे ने जवाब दिया, नहीं, बलकी वह मायुश हो कर वापिस लौट गए.” ये आवाज़ हातिफ़ ग़ैबी की थी. जिसमे बताया गया के किसी की मौत पर बोहोत गम करना, घर छोड़ कर जंगल में बेठ जाना मुरदे को वापस नहीं ले आता. **खयाल रहे के ये निदा हम लोगों को सुनाने के लिए है. ना के एहले-बैत पर अताब के लिए. उन्होंने कोई नाजाईज़ काम नहीं किया था. इसी लिए ईस निदा में डाट-धपट या उनके ईस फेल पर हराम होने का कोई फतवा नहीं.**

दलील-(76.) मुफ़्ती मुहम्मद शरीफुल-हक़ अमजदी (विसाल-1421 हिजरी) की किताब: नुज़हत अल-क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी, जिल्द-2, सफा-835 से 836, तशरीहात नं-251

मुफ़्ती मुहम्मद शरीफुल-हक़ अमजदी बयान फरमाते है के, इमाम हसन मुसन्ना इमाम हसन मुज्तबा बिन अली के साहबज़ादे है. करबला में अपने चचा (इमाम हुसैन) के साथ थे. औरतों और बच्चो के साथ गिरफ्तार हुए. अईम्मा ऐ एहले-बैत में से मुमताज़ फर्द है. (बनु-उमय्या ने हिजाज़ के अमीर बनाए हुए) हज्जाज़ बिन युसूफ सकफी के ज़ुल्म से तंग आकर इमाम हसन मुसन्ना अब्दुल-मलिक बिन मरवान के पास तशरीफ़ ले गए. अब्दुल-मलिक बिन मरवान ने इमाम हसन मुसन्ना की बोहोत ताजीम और तकरीम की. और हिज्जाज की सख्ती से बचाया. एक दफा एक राफज़ी ने इमाम हसन मुसन्ना से कहा, क्या रसूल-अल्लाह ﷺ ने ये नहीं फ़रमाया है, मन कुन्तु मौला फ़-अली-य्युन मौला. इमाम हसन मुसन्ना ने फ़रमाया, जरूर फ़रमाया है. “अगर ईस फ़रमान से खिलाफत मुराद होती हुज़ूरे-अक़दस ﷺ लोगों को खुतबा देते और फरमाते , एय लोगों मेरे बाद ये अली तुमहारे कामो का वली और तुम पर क़ायम होगा. इसकी बात सुनो और उन बातो की अताअत करो. बखुदा अगर अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने अली को खिलाफत के लिए मुन्तखिब किया था और अली ने खिलाफत को छोड दिया तो अली पेहले वह शक्श होंगे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के हुक्म को छोडा.”

इमाम हसन मुसन्ना की वालिदा का नाम सैयदा ख्वाला बिन्ते मंज़ूर फज़ारी है. इमाम हसन मुसन्ना ने 99 हिजरी में विसाल फ़रमाया. उनकी अहल्या सैयदा फ़ातिमा हजरत इमाम हुसैन शहीदे करबला की साहबजादी है. ये भी करबला में मौजूद थी. इमाम हसन मुसन्ना के विसाल के बाद उनका निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन उस्मान बिन अफ्फान से हुवा. जिनसे मुहम्मद अल-दिबाज पैदा हुए. सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन फ़ातिमा सुगरा नाम से मशहूर है. सहीह ये है सैयदा फ़ातिमा बिन्ते हुसैन की मुलाक़ात उनकी दादी सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा से नहीं हुई. **कुब्बा गोल खैमा को कहते है. यहाँ खास बात ये है के ये 99 हिजरी का वाकिया है. ये सहाबा ऐ किराम का आखिर ज़माना था. साल भर तक इमाम हसन मुसन्ना की क़ब्र-मुबारक पर कुब्बा रहा मगर किसी ने मना नहीं किया. और ना कोई एय्सी रिवायत मिलती है के किसी सहाबी या ताबईन ने ईस खैमे पर एतराज़ किया हो.** ईस से साबित होता है के सहीह गरज़ के लिए मुबारक-क़बरों पर कुब्बे बनाना जाईज़ है.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(50.) वलीद बिन अब्दुल-मलिक बिन मरवान के दौर में: वलीद ने दमिश्क़ की जामा-मस्जिद अल-उमवी में **नबी याहया बिन ज़करया** عليه السلام का मज़ार तामीर किया, जो आज भी उसी सूरते-हाल में है.

दलील-(77.) हाफिज इब्ने कसीर (विसाल-774 हिजरी) की किताब: अल-बिदाया वन-नहाया अलमारूफ़ तारीखे इब्ने कसीर, जिल्द-2, सफा- 55, अंबिया عليه السلام **के वाकियात**

हाफिज इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है के, हाफिज इब्ने असाकीर رحمه الله ने वलीद बिन मुस्लिम رحمه الله के तरीक़ से उन्होंने ज़ैद इब्ने वाकिद رحمه الله से रिवायत फ़रमाया है के, **(वलीद बिन अब्दुल-मलिक बिन मरवान के हुक्म से) जब लोगों ने दमिश्क़ की जामा-मस्जिद अल-उमवी बनाने का इरादा किया खुदाई करते वक्त मशरिक़ की जानिब जो किबले का** सुतून है उसके निचे से हज़रत याहया عليه السلام का सर मुबारक निकल गया. और मेंने अपनी आँखों से देखा के खाल और बाल वगैरा अपनी हालत पर बिलकुल सहीह सलामत है. **[32 इसवी में आप शहीद किए गए थे 673 साल के बाद यानि 705 इसवी में भी अल्लाह के नबी के जिस्म में]** कुछ भी तबदीली नहीं हुई. हाफिज इब्ने कसीर रिवायत फरमाते है के, एक और रिवायत में ये अल्फाज़ है, **गोया के अभी क़त्ल किए है.** और **मस्जिदे उमवी बनाने के ज़िक्र में है के, हज़रत याहया** عليه السلام **का सर मुबारक एक सुतून के निचे दफन है जिसका नाम अमूद अल-सका सक्कह है.**

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(51.) अब्बासी खिलाफत के दौर 172 हिजरी में: ज़ुबैदा-खातून *(बिन्ते जाफर बिन अल-मनसुर बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास* رضي الله عنه*)* ने **अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास** رضي الله عنه की क़ब्र मुबारक पर एक बड़ी मस्जिद और गुंबद तामीर करवाया

दलील-(78.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله **(विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा** ﷺ**, जिल्द-3, सफा- 242, बाब- मस्जिदे ताईफ़ का ज़िक्र**

अल्लामा मितरी رحمه الله फरमाते है के, ताईफ़ में मौजूद ये एक बड़ी जामा मस्जिद है. ईस में एक बुलंद व बाला मिम्बर है. ये मिम्बर अब्बासी खलीफा अल-नासिर अहमद बिन अल-मुस्तदी के दौर में बनाया गया. **ईस मस्जिद के एक कोने में बुलंद व बाला गुंबद के निचे हज़रत अदबुल्लाह बिन अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब** رضي الله عنه **की क़ब्र-मुबारक है. जब की इसी मस्जिद के सहेन में दो छोटे गुंबद के दरमियान हुज़ुर** ﷺ **की सजदागाह है.**

इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله फरमाते है के, हज़रत तक़ी फ़ासी رحمه الله बयान फरमाते है, वो मस्जिद जो नबी ऐ करीम ﷺ के नाम से वहां मौजूद है उस **मस्जिद के आखिर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास** رضي الله عنه **की क़ब्र-मुबारक है,** इसके किबले वाली दिवार में बाहर की तरफ पत्थर लगा है जिस में लिखा है के, **उम्मे-जाफर ज़ुबैदा-खातून बिन्ते अबुल-फ़ज़ल जाफर ने ताईफ़ में मस्जिदे रसूल** ﷺ **बनाने का हुक्म दिया था. ज़ुबैदा-खातून मुसलमानों के एहदे हुकूमत वालों की माँ थी. फिर उस पत्थर में ये भी लिखा है के ये मस्जिद 172 हिजरी में बनी थी.**

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(52.) अब्बासी खलीफा अल-मन्सूर *(बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास* رضي الله عنه*)* ने **अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब** رضي الله عنه की क़ब्र-मुबारक पर और हज़रत अब्बास رضي الله عنه के **साथ दफन तमाम मुबारक क़बरों** पर एक बड़ा गुंबद तामीर किया

दलील-(79.) इमाम अल-सम्हुदी رحمه الله **(विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अख्बारी दारिल मुस्तफ़ा** ﷺ**, जिल्द-3, सफा- 144, बाब- बक़ी के मज़ारत का ज़िक्र**

इमाम अल-सम्हूदी रिवायत फरमाते है के, **बक़ी में कुछ (मुबारक क़बरों पर) मज़ारत बनाए गए** जिन में से **एक मज़ार** तो वहां मौजूद है जहाँ आप बक़ी के दरवाज़े से निकले तो **हज़रत अक़ील बिन अबु-तालिब के नाम से मनसूब मज़ार से पेहले आता है. उम्महातुल-मोमिनीन के मज़ार भी वहीं है.** वहीं **हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब और हज़रत हसन बिन अली के मज़ार है.** और उसी मज़ार में वह मुबारक कबरें भी है जिनका ज़िक्र पहले **[सफा-36 से 39 में]** गुज़र चूका है **[के अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब के मज़ार शरीफ़ में अली इब्ने अबु-तालिब, सैयदा फ़ातिमा ज़ोहरा, इमाम हसन बिन अली, इमाम हुसैन बिन अली का सर-मुबारक, इमाम ज़ैनुलआबिदीन बिन हुसैन, इमाम मुहम्मद बाक़र बिन ज़ैनुलआबिदीन और इमाम ज़ाफर सादिक़ बिन मुहम्मद बाक़र की मुबारक कबरें भी थी.]** **ईन तमाम मुबारक कबरों पर बुलंद और अज़ीम गुंबद बना हुवा है.**

इमाम इब्ने नज्जार बयान फरमाते है, **ये गुंबद बोहोत बड़ा है. ये एक बोहोत ज्यादा पुरानी ईमारत है.** ईस मज़ार शरीफ़ के दो दरवाजे है. जिन में से रोजाना एक दरवाजा खोला जाता है.

इमाम अल-सम्हूदी बयान फरमाते है, इमाम इब्ने नज्जार कहते है के, **ईस गुंबद की ईमारत बोहोत ज्यादा पुरानी है** और फिर उन्होंने मौजूदा हालात का ज़िक्र किया. फिर मेंने **उस मज़ार शरीफ़ के मेहराब पर ऊंचाई में लिखा देखा है, "अमर बअमलही अल-मन्सूर अल-मसतनसर बिल्लाह" (ये उस खलीफा का लकब था) लेकिन उसका नाम नहीं लिखा और नहीं तामीर की तारिख लिखी है. तो शायद ये खलीफा अल-मन्सूर वह था जो खलीफा ऐ बनु-अब्बास में से दूसरा था.**

इमाम अल-सम्हूदी आगे बयान फरमाते है, **यहाँ हज़रत अब्बास और हज़रत हसन की मुबारक-कबरें ज़मीन से थोड़ी ऊँची है. छोड़ी है. उन क़बरों पर तख्तियां खूब मिला कर जोड़ी गई है. चौड़े ज़र्द पत्थर कीलों और मेखों से निहायत ही खूबसूरत तरीके पर लगाए गए है. जो देखने वालों को बोहोत अच्छे मालूम होते है.** ईन **दोनों मुबारक-क़बरों की ज़ियारत करने वालों को चाहिए के हज़रत अब्बास के और सैयदा फ़ातिमा-ज़ोहरा और हज़रत हसन के करीब उन मुबारक-क़बरों पर भी सलाम कहें जिनका हम पेहले (ऊपर) ज़िक्र कर चुके है.**

[900 हिजरी में शैखुल मदीना व शैखुल इस्लाम अल्लामा अल-सम्हूदी अगर मुबारक शख्सियात की मुबारक-क़बरों को ऊँचा करना और पत्थर किलों मेखों और तख्तियों से कवर करना चोखंडी बनाना नाजाईज़ व हराम जानते होते तो अपनी किताब में ऊपर ज़िक्र की हुई रिवायत में और सफा-50,51 पर जैसा ज़िक्र किया है न करते. लेकिन आप ने तो क़बरों का तफ्सीली हाल ज़िक्र करने के बाद ये भी लिख दिया है के उन मुबारक-क़बरों का मंज़र निहायत खूबसूरत और अच्छा है. इससे ये बात तो ज़ाहिर है के आज 1441 हिजरी में अक्सर दरगाह / मज़ारात में मुबारक-क़बरों को ऊपर मर-मर या लकड़ी से कवर किया हुवा है ये शैखुल मदीना व शैखुल इस्लाम अल्लामा अल-सम्हूदी के नजदीक जाईज़ है.]

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(53.) **अब्बासी खलीफा मेहदी** *(बिन अल-मनसुर बिन मुहम्मद बिन अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास)* **की ज़व्जाह** *(हारुन-रशीद की वालिदा)* **खैज़रान-खातून बिन्ते अता ने नबी-ऐ-करीम के मौलीद** (विलादत-पैदाईश के घर) **पर मस्जिद बनाई**

दलील-(80.) इमाम इब्ने ज़रीर अल-तिबरी (विसाल-310 हिजरी) की किताब: तारीख अल-तिबरी, जिल्द-2, सफा- 156

दलील-(81.) अल्लामा इब्ने अल-जव्ज़ी (विसाल-597 हिजरी) की किताब: अल-मुन्तज़िम फी तारिख अल-मुलूक व अल-उमम, जिल्द-2, सफा- 247

हज़रत मुहम्मद बिन इसहाक फरमाते है, **रसूल-अल्लाह की पैदाईश पीर के दिन, 12 रबीउल-अव्वल को** आम अल-फील में हुई

रसूल-अल्लाह ﷺ की पैदाईश उस घर में हुई जो घर "दारे-इब्ने-युसूफ" के नाम से मारूफ़ है. ये घर आप ﷺ ने हज़रत अक़ील इब्ने अबु-तालिब رضي الله عنه को हब्बा कर दिया था. हज़रत अक़ील رضي الله عنه के पास उनकी मौत तक रहा. फिर उनके विसाल के बाद उनके बेटे ने (बनु-उमय्या के दौर में) हज्जाज़ बिन युसूफ सक़फ़ी के भाई मुहम्मद बिन युसूफ सक़फ़ी को बेच दिया था. बाद में मुहम्मद बिन युसूफ ने रसूल-अल्लाह ﷺ की विलादत के उस घर को अपने घर के साथ शामिल कर कर एक बड़ी हवेली बना ली थी.

फिर **(अब्बासी खलीफा मेहदी बिन मनसुर की ज़व्जाह) खैज़रान-खातून बिन्ते अता ने [दौराने हज वहा की ज़ियारत की और] उस मुबारक घर से निकल कर उस घर की जगह पर एक मस्जिद बनवा दी**.

फ़स्ल-(5.) दौर ऐ सहाबा व ताबई में दरगाह/मज़ारात

बाब-(54.) अब्बासी खिलाफत के दौर से 564 हिजरी तक: खुलफ़ा ने मदीना के बक़ी में मुबारक-क़बरों पर अज़ीम गुंबद तामीर किए

दलील-(82.) इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه (विसाल-911 हिजरी) की किताब: वफ़ा उल वफ़ा बा अखबारी दारिल मुस्तफ़ा ﷺ, जिल्द-3, सफा- 145 से 147, बाब- बक़ी के मज़ारत का ज़िक्र

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه रिवायत फरमाते है के, बक़ी के उन्हीं मजारों में से **एक मशहद (मज़ार) और है जो हज़रत अक़ील رضي الله عنه से मनसूब मशहद (मज़ार) से बिलकुल जुडा हुवा है**. ईस लिए,

इमाम अल-तिबरी رحمة الله عليه फरमाते है के, **ईस मज़ार शरीफ़ में अज़वाजे-मुतहरात (उम्महातुल-मोमिनीन) رضي الله عنهن की मुबारक-कबरें है.**

इमाम इब्ने नज्जार رحمة الله عليه अपने दौर के मशहूर मज़ारत के बारे में लिखते है के, यहाँ चार अज़वाजे-मुतहरात رضي الله عنهن की कबरें है, जो बिलकुल साफ़ दिखाई देती है. लेकिन इनमे ये मालूम नहीं के कौन-कौन से **अज़वाजे-मुतहरात رضي الله عنهن यहाँ आराम-फरमा रही है**.

इमाम अल-सम्हुदी رحمة الله عليه बयान फरमाते है के, **मज़ारात की ईस चोखंडी में ज़मीन बिलकुल बराबर है. कोई कबरें दिखाई नहीं देती. क़बरों पर बनी ये चोखंडी पत्थर की बनाई गई थी**. यही इमाम मितरी رحمة الله عليه ने भी लिखा है.

ईन मज़ारात में से मशहदे हज़रत अक़ील رضي الله عنه के पास एक मज़ार बना हुवा है. कहा ये जाता है के, ईस **मजार में रसूल-अल्लाह ﷺ की तीन अव्लादें (सैयदा जैनब, रुकय्या और उम्मे-कुल्सुम رضي الله عنهن) है.**

अल्लामा इब्ने ज़रीर अल-तिबरी (310 हिजरी) رحمة الله عليه ने अपने सफ़र नामे में **हज़रत अक़ील رضي الله عنه के मज़ार का ज़िक्र किया है.** फिर **उम्महातुल-मोमिनीन رضي الله عنهن के मज़ार** का ज़िक्र किया है. और फिर कहा है के उसके सामने एक छोटा सा **मज़ार है जिस में हुज़ूर ﷺ की तीन अव्लादें सैयदा जैनब, रुकय्या और उम्मे-कुल्सुम رضي الله عنهن**) दफन है. और उन्हीं के साथ **हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنه का मज़ार** है. उन्हीं में से एक हज़रत **सैयदना इब्राहीम رضي الله عنه बिन रसूल-अल्लाह ﷺ का मज़ार है.** उनकी क़ब्र-मुबारक हज़रत हसन رضي الله عنه और हज़रत अब्बास رضي الله عنه जैसी ही है. और वो किबले वाली चोखंडी की दीवार से जुडी हुई है.

फिर उन्हीं में से **सैयदा हफ्सा बिन्ते अब्दुल-मुत्तलिब رضي الله عنها का मज़ार** भी है. जो हुज़ूर ﷺ की फूफी थे. ये उस मक़ाम पर है के आप बक़ी के दरवाज़े से निकले तो आप की दाई तरफ है. **ये मज़ार पत्थर से बनी एक ईमारत है जिस पर गुंबद नहीं है.**

उन्हीं मज़ारात में अमीरुल-मोमिनीन हज़रत **उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه का मज़ारे-अनवर भी है.** जिस पर **अज़ीम गुंबद बना हुवा है.**

फिर उन्हीं में से एक **सैयदा फ़ातिमा बिन्ते असद رضي الله عنها का मज़ार भी है.** जो बक़ी में दूर दिखाई देता है. मुनासिब ये है के सलाम पेश करते वक़्त हज़रत साद बिन मआज़ رضي الله عنه पर भी सलाम पेश करें.

ईन में से हज़रत दारुल-हजरत अबु-अब्दुल्लाह **इमाम मालिक बिन अनस अल-अस्बही رحمة الله عليه का एक मज़ार है.** जब आप बक़ी के दरवाजे से निकालते है तो ये आप के सामने आता है. **ईस ईमारत पर छोटा सा गुंबद है.** ईसके पहलूँ में शुमाली-मशरिकी जानिब भी एक छोटा सा गुंबद है. **ईस गुंबद में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضي الله عنه के गुलाम हज़रत नाफ़ी** رحمة الله عليه दफन है.

उन्हीं में से **एक मशहद (मज़ार) हज़रत इस्माइल बिन जाफर-सादिक ﷺ का है. ये काफी बड़ा है.** और मशहदे अब्बास ﷺ के सामने मग़रिबी तरफ है. ईस में एक पत्थर रखा है ईस में है के इसे हुसैन बिन अबु-अल हैजा ने 546 हिजरी में बनाया था. और **अल्लामा मितरी ﷺ ने ईस मज़ार को उबैदी बादशाह ने तामीर किया हुवा बयान किया है** क्यों की हुसैन बिन अबु-अल हैजा इमाम मितरी ﷺ के विसाल के बाद हुए थे. ईस लिए इमाम मितरी ﷺ बयान फरमाते है,

कहा जाता है के, ईस मशहद का खुला हिस्सा और शुमाल से दरवाजे तक का हिस्सा **इमाम ज़ैनुल-आबिदीन बिन हुसैन ﷺ का घर था.**

==

- हर्फे आखिर -

अल्हम्दुलिल्लाह, आज 3 रजब 1441 हिजरी (28 फ़रवरी 2020 इसवी) को ईस किताबों के मजमुए "अल-जामी अल-मज़ारातुल हिजाज़" का हिन्दी में तरजुमा मुकम्मल हो गया है.

बेशक़, इन्सान ग़लती से आज़ाद नहीं हो सकता. अगर आप को इस किताब में कहीं कोई ग़लती दिखाई दे, तो सीधे तौर पर हम से राबता करें. इंशाअल्लाह उस बात की इस्लाह की जाएगी.

और अगर, इस किताब से अवाम में बेदारी आए और कुछ फ़ायदा पहुंचे तो, शेख मुहम्मद शकील, अबु-नजीब सैयद मुहीउद्दीन साहब और अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी साहब के हक़ में दुआ करें के अल्लाह सुबहाना व तआला ईस खिदमात को क़बूल फरमाए और हमारे लिए नजात का ज़रिया बने, आमीन.

- (मुरत्तिब) शेख मुहम्मद शकील बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह.
सुरत शहर, गुजरात, भारत.
ब-तारीख, 28 फ़रवरी 2020, जुमा, 3 रजब 1441.
☎: +91-76986-79976 💻 **https://maktabatzeenatfatima.wordpress.com/**